।। श्रीसुरभ्यै नमः ।।

कामधेनु कृपा प्रसाद

भाग 1

स्वामी दत्तशरणानन्द

।। श्री सुरभ्यै नमः।।

कामधेनु कृपा प्रसाद

भाग 1

स्वामी दत्तशरणानन्द

यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजंगमम्।
तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्।।

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा

।। श्री सुरभ्यै नमः।।

प्रकाशक

श्री कामधेनु प्रकाशन समिति

श्री गोधाम महातीर्थ आनन्दवन पथमेड़ा

तहसील साँचोर, जिला जालोर (राज.) 343041

संवत् 2073 प्रथम संस्करण 5000 प्रतियें

सहयोग राशि – दस रुपये

सम्पादक

एक गोसेवक

।। श्री सुरभ्यै नमः।।

प्रार्थना

(प्रार्थना आस्तिक प्राणी का जीवन है)

मेरे नाथ।
आप अपनी
सुधामयी,
सर्व-समर्थ,
पतित पावनी,
अहैतुकी कृपा से,
दुःखी प्राणियों के हृदय में,
त्याग का बल,
एवम्
सुखी प्राणियों के हृदय में,
गोसेवा का बल,
प्रदान करें,
जिससे वे,
सुख-दुःख के,
बन्धन से,
मुक्त हो,
आपके पवित्र प्रेम का,
आस्वादन कर,
कृतकृत्य हो जायें।
ॐ आनन्द! ॐ आनन्द!! ॐ आनन्द!!!

।। श्री सुरभ्यै नमः।।

संघ के ग्यारह नियम

'मानव' किसी आकृति-विशेष का नाम नहीं है। जो प्राणी अपनी निर्बलता एवं दोषों को देखने और उन्हें निवृत्त करने में तत्पर है, वही वास्तव में 'मानव' कहा जा सकता है।

1. आत्म-निरीक्षण अर्थात् प्राप्त - विवेक के प्रकाश में, अपने दोषों को देखना।

2. की हुई भूल को, पुनः न दोहराने का व्रत लेकर, सरल विश्वासपूर्वक, प्रार्थना करना।

3. विचार का प्रयोग अपने पर, और विश्वास का दूसरों पर अर्थात् न्याय अपने पर और प्रेम तथा क्षमा अन्य पर।

4. जितेन्द्रियता, सेवा, भगवत् चिन्तन, और सत्य की खोज द्वारा अपना निर्माण।

5. दूसरों के कर्त्तव्य को अपना अधिकार, दूसरों की उदारता को अपना गुण और दूसरों की निर्बलता को अपना बल, न मानना।

6. पारिवारिक तथा जातीय सम्बन्ध न होते हुए भी, पारिवारिक भावना के अनुरूप ही, पारस्परिक सम्बोधन तथा सद्भाव अर्थात् कर्म की भिन्नता होने पर भी, स्नेह की एकता।

7. निकटवर्ती जन-समाज की, यथाशक्ति, क्रियात्मक रूप से, सेवा करना।

8. शारीरिक हित की दृष्टि से, आहार-विहार में संयम तथा दैनिक कार्यों में स्वावलम्बन।

9. शरीर श्रमी, मन संयमी, बुद्धि विवेकवती, हृदय अनुरागी तथा अहं को अभिभान-शून्य करके, अपने को सुन्दर बनाना।

10. सिक्के से वस्तु, वस्तु से व्यक्ति, व्यक्ति से विवेक तथा विवेक से सत्य को, अधिक महत्व देना।

11. व्यर्थ-चिन्तन- त्याग तथा वर्तमान के सदुपयोग द्वारा भविष्य को उज्जवल बनाना।

॥ श्रीसुरभ्यै नमः ॥

शुभ संदेश

(परम पूज्य मलूकपीठाधीश्वर श्रीराजेन्द्रदास देवाचार्यजी महाराज)

श्रीगोविन्द प्रभु के सत्संकल्प से गोवंश संरक्षण संवर्धनार्थ संप्रेषित परम भागवत गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्दजी महाराज की वाणी विश्वकल्याणकारिणी गोभक्ति प्रदायिनी है।

इस गोभक्ति से ओतप्रोत वाणी का संग्रहकर पुस्तकाकार रूप में प्रकाशन हो रहा है, यह अत्यन्त हर्ष का विषय है।

निरन्तर गोमाता विषयक चिन्तन करते-करते जो भावनात्मक रूप से तत्- स्वरूप हो चुके हैं ऐसे पूज्य महाराजजी की दिव्य वाणी का प्रसाद ''कामधेनु कृपा प्रसाद'' निश्चित ही श्रीमहाराजजी की वाणी से निःसृत श्री कामधेनु गोमाता का ही प्रसाद है।

यह - गोवंश संरक्षण-संवर्धनपूर्वक सबका विषाद हरै ऐसी प्रार्थना के साथ -

भवदीयानुचरः

दासानुदास

राजेन्द्र दास देवाचार्यः

(राजेन्द्रदास देवाचार्य)

।। श्री सुरभ्यै नमः।।

सम्पादकीय

श्री पथमेड़ा राष्ट्रीय रचनात्मक गोसेवा महाअभियान को विशुद्धरूप से गोमाता स्वयं संचालित कर रही है। इसके पीछे गोमाता का मूल उद्देश्य हमें गोहत्या जैसे जघन्य अपराध से बचाकर अपनी महिमा, महत्ता, उपादेयता व आवश्यकता को पुनर्स्थापित करवाना ताकि हम भारतवासी पुनः गाय को अपने हृदय में बसायें व गोसेवा से कल्याण को प्राप्त हों। इसके लिये गोमाता हमें हमारे भावों के अनुसार कृपापूर्वक अपनी सेवामें रख रही है। माँ कामधेनु ने ही अपनी इच्छा से परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज को अन्य सन्तों के साथ इस महाअभियान में प्रेरित किया है। गोमाता जब-जब जैसा चाहती हैं, वैसी-वैसी लीलाऐं करवाती हैं।

भारतवासियोंने गाय और गव्यों को अपने हृदय से निकाल दिया, यह उनसे एक बहुत बड़ी भूल हुई है। गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज देशभर में अलग-अलग वर्गों के बीच जाकर उनको गाय तथा गव्यों की महिमा, महत्ता, उपादेयता व आवश्यकता बता रहे हैं ताकि इस देश के राजा और प्रजा वेदवाणी, संतवाणी और गुरुवाणी के अनुसार निज विवेक के प्रकाश में अपनी भूल को मिटाकर पुनः गो की शरण ग्रहण करें और कल्याण को प्राप्त हों। गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज का ऐसा मानना है कि गोहित में ही सच्चा राष्ट्रहित और जनहित निहित है। गोहित को एक तरफ रखकर मानवहित व राष्ट्रहितकी बात सोचना व्यर्थ के प्रयास हैं।

गोऋषि श्री स्वामीजी महाराज अपने इन गोसेवा के भावों को और इस पवित्र वाणी को माँ कामधेनु द्वारा कृपापूर्वक दिया गया प्रसाद मानते हैं। इसलिये इसे 'श्री कामधेनु कल्याण' मासिक पत्रिका में 'कामधेनु कृपा प्रसाद' के नाम से आपको प्रतिमाह प्रस्तुत किया जाता रहा है। कामधेनु कल्याण पत्रिका के माध्यम से एक सीमा तक ही इन भावों को आमजन तक पहुँचाया जा पा रहा है। अतः यह विचार आया कि माँ कामधेनु के इस कृपा प्रसाद को पुस्तकाकार में प्रकाशित किया जावे ताकि इसका लाभ अधिकाधिक लोगों को मिल सके। इसी क्रम में इसका भाग-1 आपकी सेवा में प्रस्तुत किया जा रहा है।

इस पुस्तक में प्रकाशित प्रवचन अलग-अलग अवसरों पर अलग-अलग लोगों के बीच में कहे गये हैं। गोऋषि श्री स्वामीजी महाराज का हरदम यही भाव रहता है कि सभी लोग गाय और गोसेवा से कैसे जुड़ें? इसलिये सभी लोगों को वे यही बात कहना चाहते हैं। इस कारण पुस्तक में कई बातों की पुनरावृति हुई है, पर ये बातें अलग-अलग लोगों को अलग -अलग अवसरों पर कही गई हैं, इसलिये विद्वत्जनों को इसे पुनरावृति का दोष नहीं मानना चाहिये।

आप सभी गोभक्तों से विनम्र निवेदन है कि इस पुस्तक को मनोयोग से और भावपूर्वक पढ़कर वर्तमान की आवश्यकता को देखते हुए अपना यह जीवन गोमाता की सेवा में समर्पित कर कृतकृत्य हो जायें। गोमाता कृपापूर्वक आप सभी को अपना प्रेम प्रदान करे। इन्हीं भावों के साथ आप सभी को आदर सहित जय गोमाता, जय गोपाल !

निवेदक

वि.सं. 2073 एक गोसेवक

।। श्री सुरभ्यै नमः।।

विषय सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
1. गाय किसे कहते हैं	1
2. गाय और समष्टि	13
3. सुन्दर समाज का निर्माण	23
4. गुरु तत्व	33
5. राष्ट्रव्यापी रचनात्मक गोसेवा महाअभियान	70
6. पथमेड़ा एक गो आन्दोलन	87
7. गाय की महत्ता एवं उपादेयता	93
8. गावो विश्वस्य मातरः	119
9. मानव किसे कहते हैं	134
10. गोवर्धन पूजा	153
11. गोअधिकारोंकी रक्षाके लिये संघर्ष क्यों	164
12. समाज के पंचामृत	179

।। श्री सुरभ्यै नमः।।

1

गाय किसे कहते हैं ?

सज्जनों! हमें गो के संरक्षण, संवर्धन और गोउत्पादों के विनियोग से पहले यह समझना होगा कि गाय क्या है? आज तो भाई पता नहीं कैसे-कैसे पशुओं का नाम गाय रख दिया है। समझ से बाहर की बात है। गाय शब्द जो है, वेद से और स्मृति से मिला है। हमारे वेदों ने, स्मृतियों ने, हमारे पूर्वजों ने, जिसको गाय कहा है, उस गाय का स्वरूप हम लोगों को समझना बहुत जरूरी है। गाय के रीढ़ की हड्डी में एक नाड़ी होती है, जिसका नाम है सूर्यकेतु नाड़ी। यह सूर्यकेतु नाड़ी सूर्य से सम्बन्ध रखती है। गाय की थुई (कुकुद) जो होती है, ठीक उसके और रीढ़ की हड्डी के संधि में ही यह नाड़ी रहती है। इस नाड़ी का सम्बन्ध सूर्य से होता है। सूर्य की तीन प्रधान किरणें हैं। एक किरण तो समुद्र के खारे जल का शोषण करके

ऊपर क्षोभमण्डल में ले जाती है और उसको मीठा बनाकर पुनः पृथ्वी पर बरसाती है। दूसरी किरण सम्पूर्ण प्राणियों को ओज प्रदान करती है व तीसरी किरण है गो किरण। उसका नाम ही गो है और वह गो किरण सीधी सूर्यकेतु नाड़ी के माध्यम से गाय में उतरती है। यह सूर्यकेतु नाड़ी एक तरह से उस गो किरण को पकड़ने, आकर्षित करने तथा ग्रहण करने का एक यंत्र है। उस किरण के द्वारा गाय के शरीर में स्वर्णयुक्त क्षार का निर्माण होता है जिसे स्वर्णपित्त क्षार कहते हैं। यह स्वर्णपित्त क्षार ही वह तत्त्व है जिसके कारण गाय को परम पवित्र, सत्व की सृजक, मांगलिक और कल्याणकारी माना गया है। यह केवल थुई वाली गाय के शरीर में ही होता है और गाय वही है, गाय उसी का नाम है और किसी का नाम गाय नहीं है। एक विशेषता और जो गाय के बाहरी लक्षणों में दिखती है वो यह कि गाय के गले के नीचे एक बड़ी गल कम्बल लटकती है। यों तो आदमी को कोई मारता-पीटता है तो घबराया हुआ वह भी छूटने के लिये कह देता है कि मैं तुम्हारी गाय हूँ। पर गाय तो केवल वही है जिसके पीठ पर बड़ी थुई हो, गले के नीचे गल कम्बल हो तथा शरीर में स्वर्णपित्त क्षार बने। वह स्वर्णपित्त क्षार गोबर, गोमूत्र, दूध, दही, घी आदि के माध्यम से आप हम सब लोगों को प्राप्त होता है।

हॉलिस्टीन व जर्सी जिनको हम तो गाय नहीं कह सकते पर उनका अंग्रेजी में काउ-काउ जैसा कुछ नाम है।

हमारे यहाँ राजस्थान में काउ कुत्ते को कहते हैं। छोटा बच्चा जब चलता है और इधर-उधर जाने की कोशिश करता है तो उसको थोड़ा भय दिखाते हैं कि देखो काउ आयेगा, काट लेगा तुमको, बाहर मत जाना। तो हमें लगता है कि कुत्ते जैसे किसी प्राणी के सम्पर्क से इस पशु की उत्पत्ति हुई है। यह जब नाराज होता है तब मुख से काटता है। ऐसे काटता है जिस तरह कुत्ता काटता है। यह गाय नहीं है। आप इसका दूध गाय के दूध के नाम से पीते हो। देशी गाय के घी के नाम से इसके घी का उपयोग करते हो तो यह आपकी मरजी है, पर यह गाय का दूध, गाय का घी नहीं है। घी उसी का नाम है जिससे जीवनी शक्ति का निर्माण हो, सात्विक शक्ति का सृजन हो। दूध उसी का नाम है जो हमारे तन, मन और मस्तिष्क में सत्व को विकसित करे, गोबर उसी का नाम है जो विषाणुओं और कीटाणुओं को नष्ट करे।

सज्जनों! गाय के दूध, दही, घी, गोमूत्र और गोबर में वह सत्व शक्ति है जिससे मानव का बाह्य, जिसे हम अर्थ, धर्म और काम कहते हैं वे तीनों तो मिलते ही हैं, पर जो चौथा मोक्ष है, वह भी गो के माध्यम से सहजता से मिलता है। बहुत ही सरलता से मिल सकता है। जितना उपकार गाय का इस लोक में है, उससे कई गुणा अधिक उपकार गाय का परलोक में है। आस्तिक लोग जो भगवद् प्राप्ति व मुक्ति चाहते हैं, ऐसे लोग अपने जीवन में सतोगुण का विकास करना चाहे तो वे गोमाता के सम्मुख जाकर

कर सकते हैं। गाय के गव्यों में वो शक्ति है कि वे सत्वको सृजित और नये रूप से निर्मित करते हैं, पर गाय केवल भारतीय हो। वैसे अगर हम थोड़ा गहराई से देखें तो गाय का सम्बन्ध समष्टि प्रकृति और पृथ्वी से अविभाजित है।

पृथ्वी, गाय और समष्टि प्रकृति ये तीनों अलग नहीं हैं। गाय का जो वैभव, जो व्यापक स्वरूप है, वह तो है ही, समष्टि प्रकृति जिसमें पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा, ग्रह, नक्षत्र ये सभी आते हैं और उसका जो स्थूल विराट रूप है वह यह सप्तद्वीपा वसुंधरा पृथ्वी है। उसका तीसरा और मूल स्वरूप जो है चिन्मय स्वरूप वो यह चार पाँवोंसे चलने वाला, थुई के पास में सूर्यकेतु नाम की नाड़ीवाला यह दिव्य प्राणी जो हमें प्रत्यक्ष सान्निध्य प्रदान करता है, यह है गाय।

ये गाय के तीन स्वरूप हैं और तीनों एक हैं। अगर तीनों में से एक को भी क्षति पहुँची तो तीनों ही कमजोर हो जायेंगे। यह जो समष्टि प्रकृति है तथा विराट पृथ्वी है इस पृथ्वी को और समष्टि प्रकृति दोनों को चिन्मय स्वरूपा जो गाय है यह पोषण देती है। इन दोनों के विष का शमन करती है। इन दोनों को जीवनी शक्ति का दान करती है। इस गाय को मातरः सर्व भूतानाम् कहा है। समस्त भूतों की माँ– पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश इन पंचमहाभूतों की यह माँ है। इन पाँचों भूतों को पोषण देती है। मानव के स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर– इन तीनों शरीरों को शुद्ध करती है। गाय अपने गव्यों के द्वारा

प्रकृति में व्याप्त विष को अमृत में बदलती है। गाय के गव्यों में विष को अमृत के रूप में बदलने की अद्‌भुत शक्ति है।

हमारी परम्परा में गाय के घी का दीपक, गाय के घी का धूप, गाय के घी से हवन किया जाता था। ऐसा क्यों होता था? हमने पहले कभी शंका उत्पन्न नहीं की, पर इस युग में शंका उत्पन्न हुई कि घी अग्नि में क्यों डाला जा रहा है? क्यों न हम सीधा खा लें। अग्नि में डालने से क्या लाभ होगा? इस शंका के समाधन के लिए रूस के वैज्ञानिकों ने गाय के घृत व अग्नि के संयोग से होने वाली इस क्रिया पर अनुसंधान किया और उन्होंने पाया कि गाय का एक तोला घी (11.8 ग्राम) अगर आप अग्नि पर बूँद-बूँद कर डालते हैं, तो उससे एक हजार किलोग्राम आक्सीजन का निर्माण होता है। केवल एक तोला घी से एक हजार किलोग्राम आक्सीजन! और इतनी मात्रा में यह आक्सीजन हजारों प्राणियों की जीवनी शक्ति है व सैकड़ों लोगों का 24 घण्टे का श्वॉस है।

हम लोगों के पास यह विधि थी, यह विज्ञान था कि थोड़ी सी चीज, अधिक लोगों के लिए उपयोगी कैसे सिद्ध हो? ऐसी-ऐसी कलाएँ हमारे पूर्वजों के पास थी। हम गोघृत के यज्ञ, धूप और दीप के द्वारा मानव सहित सम्पूर्ण प्राणियों को तो जीवनी शक्ति देते ही थे, साथ ही-साथ में ऋषिप्राण और देवप्राणों को भी गोघृत के द्वारा पुष्ट किया करते थे। देवप्राण और ऋषिप्राण दोनों पुष्ट रहेंगे तो

प्राकृतिक संतुलन, बाह्य समष्टि प्रकृति का संतुलन तथा मानवीय मस्तिष्क और हृदय शुद्ध एवं परिष्कृत ये दोनों बने रहेंगे। बाह्य प्रकृति संतुलित रही तो जो हम देखते हैं अनावृष्टि, अतिवृष्टि, भूकम्प आदि अन्यान्य जो प्राकृतिक प्रकोप हैं ये नहीं होंगे।

ऐसा यह सब प्राकृतिक संतुलन बिगड़ने से होता है और प्राकृतिक संतुलन बिगड़ता है, प्रकृति के अलग-अलग इन केन्द्रों के जो अधिष्ठाता देव हैं उनकी शक्ति कमजोर होने पर। यह जो समष्टि प्रकृति चल रही है इसके सभी अलग-अलग कोनों पर ईश्वर के द्वारा नियुक्त की हुई देवी शक्तियाँ हैं और देवी शक्तियों के अणुओं का पोषण केवल गाय के गव्यों के द्वारा ही होता है। क्योंकि देवताओं का, सात्विक लोगों का, सात्विक प्राणियों का केवल सात्विक आहार ही होता है। सात्विक आहार भूमण्डल पर और तीनों लोकों में केवल गाय के द्वारा ही प्राप्त हो सकता है। राक्षसी और तामसी आहार तो हमें सब जगह और अन्य प्राणियों से भी मिल जायेगा, पर सात्विक आहार केवल गाय ही दे सकती है।

स्वस्थ शरीर, दीर्घ आयु, पवित्र हृदय और प्रज्ञावान मस्तिष्क ये केवल पूज्या गोमाता के माध्यम से ही मानव जाति को मिल सकते हैं। करूणा, वात्सल्य, दया, परोपकार, अहिंसा आदि ये जो मानवता के मूल गुण हैं, ये गो के माध्यम से ही मानव में उतरते हैं। अगर मानव सात्विक आहार नहीं लेगा तो उसका शरीर स्वस्थ नहीं रहेगा। यदि

अन्य उपायों से शरीर स्वस्थ रख भी लेगा तो हृदय पवित्र नहीं होगा, हृदय जब पवित्र नहीं होगा, दूषित हृदय वाला मनुष्य तो भाई दानवों से भी भयंकर नुकसान करने वाला है। जिसका हृदय दूषित है, जिसके हृदय में दया नहीं है, करुणा नहीं है, परोपकार नहीं है, कृतज्ञता नहीं है, ऐसा मानव इस पृथ्वी का अभिशाप है। ऐसे मनुष्यों को जिनके हृदय में दया, करुणा, अहिंसा, प्रेम, परोपकार आदि मानवीय गुण नहीं है और दुर्भाग्य से यदि उन्हें सामर्थ्य मिल जाये, तो ऐसे व्यक्ति समाज अथवा राष्ट्र में भारी हानि कर सकते हैं। अगर ऐसे मनुष्यों को प्रभुता मिल जाये, सामर्थ्य मिल जाये तो उनके द्वारा वो सारे संसार में त्राहि-त्राहि मचा देते हैं।

आज कालकर्म से भारतीयों के तप के, पुण्य के क्षीण होने के कारण ही ऐसी दुष्ट शक्तियों का संसार में प्रभुत्व है। इस संसार के जितने मुख्य संचालन के आधार हैं उन सभी स्थानों पर वे दुष्ट दानवी शक्तियों बैठी हुई हैं। उनके द्वारा विश्व में शांति, समृद्धि और मानवीय सुविधाओं का आविष्कार होना बताया जाता है। दानव लोग कहीं शांति लायेंगे? कैसी समृद्धि लायेंगे और वे मनुष्यों के लिए ऐसी आवश्यक सामग्री कहाँ से लायेंगे जिससे मानव का हित हो? ऐसी सामग्री उनके द्वारा आ ही नहीं सकती। आज हम देखते हैं संसार में पिछले 500 वर्षों से बहुत बड़े-बड़े आविष्कार हुए, बड़े-बड़े अनुसंधान हुए और बहुत ऐसे सूक्ष्म चमत्कारी और आश्चर्यजनक उपकरणों

का, यंत्रों का निर्माण हुआ। यह सारा आविष्कार, यह सारी शोध किसके लिए? केवल मनुष्यों के लिए, केवल मनुष्यों के लिए और मनुष्यों में भी जो समृद्ध व्यक्ति हैं, समाज हैं, राष्ट्र है उनके लिये। यानि कि समृद्धता जिनके पास है, धन जिनके पास है, बड़े-बड़े अस्त्र जिनके पास हैं, उन व्यक्तियोंके लिए। प्रकृतिके अन्दर से खिंची हुई सार जो ऊर्जा है उन उपकरणों का उपयोग केवल उन लोगों के लिए है जो इस समय शक्तिशाली हैं- धनसे, अस्त्रसे।

थोड़ा विचार करें कि इस पृथ्वी पर 84 लाख योनियाँ हैं। 84 लाख योनियोंमें जन्म लेने वाले सभी प्राणियों के निर्वाह की सामग्री सृष्टि के रचियता ने सृष्टि रचना के साथ-साथ भेज दी है और इन 84 लाख योनियों में जन्म लेने वाले सभी जीवों को इस पृथ्वी पर जीने का अधिकार है। क्योंकि उनके निर्वाह की सामग्री रचियता ने पहले ही भेज दी है।

अब हम देखें कि यह 84 लाख योनियों में से केवल एक ही योनि है- मनुष्य योनि, जो प्रकृति के सभी व्यष्टि और समष्टि संसाधन चाहे वो भूमि में हो, जल में हो, वायु में हो, उन संसाधनों का जो सारतत्व जीवन है उस जीवन को हमारी बुद्धि की शक्ति से खींचकर हम अपने पास में संग्रहित कर दें और उसका उपयोग केवल अपने लिये करें, मनुष्यों के लिए। मनुष्यों में भी जो समृद्ध और सक्षम हैं उनके लिए, तो यह कितना बड़ा अन्याय होगा इस पृथ्वी पर। फिर अन्य जीवों का क्या होगा?

भाई समष्टि भूतों से सभी प्राणियों को जीवन मिलता है। जीवन प्राणियों को मिलता है उससे पहले ही आप समष्टि भूतों में से जीवनी शक्ति को खींचकर केवल मनुष्यों के लिये संग्रहित कर लेते हैं तो फिर बोलो, उनके द्वारा अन्य प्राणियों के जीवन का निर्वाह कैसे होगा? जीवन निर्वाह का तो सबको अधिकार है, रचियता ने मानव को 83 लाख 99 हजार 9 सौ 99 प्राणियों के रक्षण के लिए रखा था, अपने प्रतिनिधि के रूप में भेजा था कि भाई मेरी जो विशाल सृष्टि है इस सृष्टि में जितने प्राणी हैं, उन प्राणियों की आवश्यक वस्तुओं का उपार्जन और उनको यथास्थान पर पहुँचाने का प्रबन्धन यह तेरे जिम्मे है और तूँ मेरा प्रतिनिधि है।

परमात्मा ने मानव को अपना प्रतिनिधि बनाकर पृथ्वी पर भेजा। मानव सभी प्राणियों के अधिकारों की रक्षा के लिये है और उसको दो बड़े शक्तिशाली अस्त्र दिये– एक तो विवेक और दूसरी स्वतन्त्रता। स्वाधीनता और समझ के अस्त्रों से युक्त करके मानव को पृथ्वी पर भेजा और उसे यह कहा कि अन्य समस्त प्राणियों– ब्रह्मा से लेकर चींटी तक के अधिकारों की रक्षा करना तुम्हारा कर्त्तव्य है, तुम्हार धर्म है। उनके अधिकार रक्षा से तुमको क्या मिलेगा ? बोले तुम्हें वो ही मिलेगा जो तुम चाहते हो, तुम सदा रहना चाहते हो, तुम ज्ञान चाहते हो, तुम आनन्द चाहते हो, यानि कि तुम सत् चित् आनन्द से अभिन्न होना चाहते हो तो वह इससे हो जायेगा।

हाँ अधिकार लोलुप मत बनना केवल कर्तव्य पर ध्यान रखना। कर्त्तव्य वो है जो हम कर सकते हैं, हमारे में करने का सामर्थ्य हो और उस तरह करने से किसी का अहित नहीं होता हो। उसी का नाम कर्त्तव्य है। अब वह माँ, बाप, भाई, समाज, राष्ट्र, मानव तथा सम्पूर्ण जगत् के साथ में जहाँ-जहाँ जैसा संयोग है वहाँ पर वो जो-जो हमसे चाहते हैं और हमारे पास हैं वो उनको दे देना यह कर्त्तव्य पालन है। अब सबसे बड़ा कर्त्तव्य पालन यह है कि हम अपने अधिकारों का त्याग कर दें। अपने अधिकारों का त्याग करने से सब प्रकार के कर्त्तव्यों का पालन हो जाता है।

अपने अधिकारों का त्याग क्या है? यह जो सामग्री है इस पृथ्वी पर, जिस पर आज हमने अपना अधिकार जमा रखा है कि यह भूमि मेरी है, यह वस्तु मेरी है, यह घर मेरा है, यह मकान मेरा है, यह फैक्ट्री मेरी है, यह आश्रम मेरा है, यह प्रान्त मेरा है, यह समाज मेरा है आदि-आदि में जो मेरा-मेरा है इसका त्याग और इनसे कुछ भी लेने की इच्छा का त्याग करना उन पर से अपने अधिकारों का त्याग करना है।

इस तरह हम ईश्वर रचित वस्तुओं पर अपना व्यक्तिगत अधिकार जमाते हैं, इन्हें जो मेरा मानते हैं यह सेवा के लिए तो ठीक है, कर्त्तव्यपालन की दृष्टि से तो ठीक है, पर इससे सुख लेने की दृष्टि से यह भयंकर पतनकारी है। वस्तुओं से हम सुख लेना चाहते हैं, व्यक्तियों से सम्मान

लेना चाहते हैं तो यह बहुत बड़ी हानि है। वस्तुओं से सुख और व्यक्तियों से सम्मान लेने की जो हमारे अन्दर लोलुपता है इसको कहते हैं अधिकार लोलुपता। इस अधिकार लोलुपता का हम त्याग कर दें। वस्तुओं के द्वारा सेवा करें और व्यक्तियों का हम आदर करें तो हमारा जीवन कृतकृत्य हो सकता है। पर वस्तुओं का सदुपयोग और व्यक्तियों के साथ व्यवहार करने के लिए हमें सात्विक बुद्धि की आवश्यकता है। सात्विक बुद्धि सात्विक आहार से प्राप्त होती है।

सनातन धर्म में करोड़ों वर्ष पहले इन बातों पर गहन शोध और अनुसंधान हुए उसी के आधार पर हमारे पूर्वजों ने, हमारे ऋषियों ने, हमें यह बताया कि मानव को अगर अपने लक्ष्य की पूर्ति करनी है, अपने अन्दर जो मांग है उसको पूरी करनी है तो हमको गोमाता की शरण में जाना पड़ेगा। शरण लेने योग्य जितने स्थान हैं तीनों लोकों में उनमें सर्वोत्तम शरणदाता पूज्या गोमाता है। क्योंकि गाय मानव को वह सब कुछ देती है जो तीनों लोकों में और कोई नहीं दे सकता। परमात्माको छोड़कर गाय के समान, गाय को उपमा देने के लिए तीनों लोकों में कोई है ही नहीं। जिस गाय की हम चर्चा कर रहे हैं वह गाय अपने श्वास-प्रश्वास से, अपने पाँवों के स्पर्श और अपने गव्यों से इस पृथ्वी को सात्विक जीवनी शक्ति प्रदान करती है।

इन्हीं गायों की सेवा के लिए, उनका सान्निध्य प्राप्त करने के लिए और गव्यों का भारतवासी अपने जीवन में

विनियोग करे, उपयोग करे, इसके लिए पिछले दस वर्षों से सम्पूर्ण भारत में अघोषित रूपसे एक रचनात्मक गोसेवा महाअभियान चल रहा है। उसी के अन्तर्गत हमारे संत और अन्य गोभक्त बड़ी श्रद्धा से लगे हुए हैं। सभी प्रांतों में यथाशक्ति इस समय संत और आस्तिक लोग गोसेवा की ओर, गाय किसे कहते हैं, गो की महत्ता की ओर, गो की उपादेयताकी ओर बढ़ रहे हैं।

हम परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि प्रभु हमें गाय की महत्ता, गाय की उपादेयता, गाय की आवश्यकता और गाय की उपयोगिता समझने, जीवन में धारण करने का सामर्थ्य प्रदान करे और इस देश की धरती पर पुनः गोमाता का और उसके वंश का संवर्धन हो। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी वाणी को परमात्मा के श्रीचरणों में अर्पित करते हुए विराम देता हूँ। एक बार पुनः आप सभी का सादर अभिनन्दन!

जय गोमाता, जय गोपाल!

❁❁❁❁❁

।। श्री सुरभ्यै नमः।।

2

गाय और समष्टि

१. **गोमाता समष्टि प्रकृति की पोषक है** – गोमाता समष्टि प्रकृति की पोषक है अर्थात् प्रकृति के आठों अंगों को पोषण प्रदान करती है। ये आठ अंग हैं– पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि तथा अहंकार। इन आठों अंगों की पोषक होने के कारण गाय समष्टि प्रकृति की माता मानी जाती है। जो पोषण प्रदान करे वह माँ है। इस दृष्टि से 'गो' प्रकृति की माता सिद्ध होती है। प्रकृति के प्रकाशक, सर्जक तथा नियामक की सृष्टि रचना में गो एक दिव्य एवं महत्वपूर्ण प्राणी है। जिसकी तुलना और किसी से नहीं हो सकती। क्योंकि मूल प्रकृति में भी समय–समय पर आने वाली विकृतियों का शमन गोमाता के द्वारा होता है। प्रकृति के सम्पूर्ण अंगों का संरक्षण– संवर्धन एवं पोषण गो ही कर सकती है। कामधेनु रूपा गो में जीवनी

शक्ति-सृजन की अथाह क्षमता है। गाय गोबर से पृथ्वी को, गोमूत्र से जल को, श्वास से अग्नि को, प्राण शक्ति स्पन्दन से पवन को, हुंकार से आकाश को, दूध- दही एवं घृत से मन-बुद्धि एवं चित्त को शुद्ध-बुद्ध एवं सशक्त पोषण प्रदान करती है। गोमाता के प्रत्येक अन्तस्थ दिव्य यन्त्रों का सम्बन्ध समष्टि प्रकृति से निरन्तर सजगता पूर्वक बना रहता है। जिससे प्रकृति को सत्वमय जीवनी ऊर्जा मिलती रहती है। अतः गाय कई अर्थो में समष्टि प्रकृति से भी बढ़कर है। जैसे ऊपर वर्णन हुआ है कि गाय प्रकृति के आठों अंगों का पोषण करती है। इस अष्टांग प्रकृति से सम्पूर्ण चर-अचर प्राणियों का निर्माण होता है। सूर्य से लेकर चींटी पर्यन्त सभी स्थूल, सूक्ष्म शरीरों का अधिष्ठान ये आठ अंग ही है। अगर प्रकृति के इन आठ अंगो में कोई विकृति आती है तो इसका प्रभाव समस्त शरीरधारी प्राणियों पर पड़ता है। आठ तो क्या एक-एक भी समष्टि अंग की विकृति का परिणाम समस्त देहधारी प्राणियों को भोगना ही पड़ता है। प्रकृति के इन आठों अंगों की विकृतियों को मिटाने का उपाय गाय को छोड़कर दूसरा कोई भी नहीं दिखता है।

२.अष्टांग प्रकृति की विकृतियाँ को शमन करने में केवल गोमाता ही सक्षम है- प्रकृति की विकृति से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की हानि तथा विकृति के शमन से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को लाभ होता है। बिना किसी भेदभाव चराचर प्राणियों का हित साधने वाली गाय सर्वभूत प्राणियों की माँ हैं।

"मातर:सर्वभूतानाम्" स्वभाव से ही समष्टि प्रकृति शुद्ध बुद्ध एवं सशक्त है। परन्तु मानवीय प्रमाद से समष्टि प्रकृति में नाना प्रकार की विकृतियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। इन विकृतियों के परिणाम स्वरूप सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में विष निर्मित हो जाता है। यह विष प्राकृतिक आपदाओं के रूप में, मृत्यु के रूप में, रोगों के रूप में, विनाशकारी अस्त्र-शस्त्रों के रूप में, दुर्भावनाओं, दुर्विचारों, दुर्मान्यताओं आदि के रूप में प्रकट होकर परस्पर संघर्ष, कलह एवं सर्व-विनाश का कारण बनता है। यह विष दुर्दमनीय महाशक्ति है और ये शक्ति सामूहिक सर्वविनाश का रूप कभी-कभी ले लेती है। ऐसे अमोघ महाविनाशकारी विषका भी गव्य शमन करनेमें सक्षम हैं। पंचगव्यमें विषको अमृतके रूपमें परिवर्तित करने की अथाह शक्ति है। गोमाता से प्राप्त पंचगव्य का प्राकृत विज्ञानानुसार विनियोग करने से पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि एवं व्यक्तित्व में मिश्रित विनाशकारी विष का सर्वशमन होकर वह अमृतके रूपमें हो जाता है परिणाम स्वरूप समष्टि प्रकृति संतुलित एवं सुव्यवस्थित रहती है।

३.गोमाता समष्टि प्रकृति की पोषक, वर्धक एवं उसके सत्व की संरक्षक हैं- गोमाता समष्टि प्रकृति की पोषक, वर्धक एवं उसके सत्व की संरक्षक है। गोमाता द्वारा निष्पादित गोबर पृथ्वी को पोषण तो देता ही है, साथ ही मानवीय भूल से पृथ्वी में जो विष निर्मित होता है, उसका शमन करके दुग्ध, अन्न, औषध, फल आदि को अमृतमय बना

देता है। जिसके आहार से मानव के तन-मन-मस्तिष्क और प्राण सतोमय हो जाते हैं। क्योंकि मानव के गर्भ से लेकर सम्पूर्ण व्यक्तितत्व के निर्माण का मुख्य आधार पंचतत्व मिश्रित पृथ्वी है। सर्वप्रथम रज और वीर्य पृथ्वी तत्व का परिष्कृत रसायन है अथवा पृथ्वी का रुपान्तरण है। जब पृथ्वी सात्विक जीवनी शक्तियुक्त होगी तो उसका सार रज-वीर्य भी सत्वमय रहेगा और इससे निर्मित मानव पिण्ड विकृतियाँ एवं विष से रहित सात्विक प्राणों वाला होगा। जब गर्भ ही सात्विक होगा तो निश्चित रूप से मानव निरोग, पवित्र एवं सुदृढ़ हो ही जाएगा। इसलिए पृथ्वीमाता के आहार हेतु अधिकाधिक गोबर मिले तो उससे उत्पादित हव्य-कव्य तो सात्विक जीवनी शक्ति युक्त होगा ही साथ ही पृथ्वी की उर्वरा शक्ति भी अक्षुण्ण बनी रहेगी।

वर्तमान समय में अधिक उत्पादन के लोभ में बहकर मानव जाति ने नाना प्रकार के जहर पृथ्वी में डाल दिए हैं। परिणामस्वरूप भूमि विषैली हो गई है। उससे उत्पादित अन्न, फल, औषधी, सब्जी, दालें आदि स्वाभाविक विषयुक्त हो गए हैं। इस कारण मानव का शरीर गर्भ से ही विकृत हो जाता है। माँ के गर्भ में ही रोगोत्पत्ति हो जाती है। जन्म लेने के बाद भी माँ के दूध से तथा अन्य आहार से उसे जहर ही मिलता है। गर्भ में पड़े विष के बीज पोषण पाकर भयंकररूप से तन-मन-मस्तिष्क और प्राणों को विकृत कर डालते हैं।

४. गोमाता द्वारा प्रदत्त गोमय धरती का दिव्य रसायन है- आज के मृत्युदायी रोगों, दुःखदायी दुर्भावनाओं एवं विनाशकारी विचारों का कारण एकमात्र इस समय उत्पादित अपवित्र एवं विषैला आहार है। जितना जल्दी मानव जाति इस भूलको मिटा देगी उतना शीघ्र ही मानव जाति का भाग्योदय होगा। अन्यथा ब्रह्माण्ड में महान् विनाशकारी विष विश्व के समस्त देहधारी प्राणियों के लिए अत्यंत दुःखदायी नरक बनता जा रहा है। अतः आहार की गुणवत्ता के लिए इस समय मानव जाति को गोमाता की शरण में जाना चाहिए। धरती माता को जैसा आहार मिलेगा वैसा ही वह अन्न हमें देगी। गोमाता द्वारा प्रदत्त गोमय धरती का सबसे पवित्र और सात्विक आहार है। गोमय का प्रसाद ही भूमि को सात्विक उर्वरायुक्त बनाने का एकमात्र उपाय है।

5. **गोमूत्र के मिश्रण से अन्तरिक्ष, पृथ्वी तथा पाताल का जल रोगाणु रहित, स्वास्थ्य वर्धक एवं वाणी शोधक हो जाता है-** विश्व वंदनीय कामधेनु से प्राप्त गोमूत्र से तीनों प्रकार के जल का शुद्धिकरण होता है अर्थात् अन्तरिक्ष, पृथ्वी तथा पाताल का जल गोमूत्र के मिश्रण से रोगाणु रहित, स्वास्थ्य वर्धक एवं वाणी शोधक हो जाता है। एक प्रसिद्ध लोकोक्ति के अनुसार "पाणी जैसी वाणी" अक्षरशः सत्य है। वाक् का जल के साथ ऐक्य है। केवल वाक् ही नहीं जागतिक प्राणियों का सम्पूर्ण जीवन ही जलाधीन है। जल के बिना पृथ्वी विधवा एवं बाँझ हो जाती है। जल ही

जीवन है। अतः जल की गुणवत्ता अनिवार्य है। जबकि वर्तमान में जलाभाव को मिटाने का प्रयास एवं चिन्तन तो विश्वमानव कर रहा है परन्तु इसकी गुणवत्ता की ओर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। उल्टा उसको दिन-प्रतिदिन दूषित किया जा रहा है। नाना प्रकार के विषैले रसायन, कीटनाशक तथा फर्टीलाईजर रूपी जहर तीनों प्रकार के जल में घुल गये हैं। भूगर्भ के जल में जहर तथा अन्तरिक्ष के जल में भी इस समय मानव जाति अपने हाथों से ही विष मिलाकर अपने ही सर्वनाश को आमन्त्रित कर रही है। यह विषैला जल, चर-अचर प्राणियों के शरीर में असाध्य रोगों को उत्पन्न कर रहा है। मानव जाति अगर इसी तरह रासायनिक कीटनाशक एवं अन्य फर्टीलाईजरों आदि के जहर को पानी में, भूमि पर एवं अन्तरिक्ष में घोलती रही तो समझो सर्वविनाश होना ही है।

अतः आज विश्व मानव को प्रथम आवश्यकता है जल शोधक की। जल को गुणवत्ता एवं सात्विक जीवनी शक्ति से युक्त बनाने के लिए सर्व प्रथम विषैले रसायनों कीटनाशकों, तथा फर्टीलाईजरों के उपयोग को बन्द किया जाए। पहले से मिश्रित विष को गोमूत्र के द्वारा शमन किया जाए। गोमूत्र के माध्यम से ही रसायनों, कीटनाशकों, फर्टीलाईजरों आदि का विकल्प तैयार करके राष्ट्र को दिशा प्रदान की जा सकती है। जिससे समस्त सृष्टि का उद्धार होगा। इसलिए विश्व के कर्णधारों को गोमाता की शरण जाना चाहिए। वह समष्टि जल को स्वास्थ्यवर्धक

व गुणवत्तायुक्त बनाने में पूर्ण सक्षम है। संसार के वैज्ञानिकों, राष्ट्राध्यक्षों व समाज के प्रमुखों को मिलकर विश्व जीवन की रक्षा के लिए इन परंपरागत उपायों का सहारा तत्काल लेना चाहिए।

६.गाय द्वारा छोड़ी गई श्वाँस से समुद्र की वड़वानल अग्नि, अंतरिक्ष की सूर्यस्वरूपा अग्नि तथा पृथ्वी में मिश्रित ऊर्जा अग्नि की विकृतियाँ समाप्त हो जाती हैं- कल्याणकारी कपिला के प्रसाद से समष्टि अग्निमय विकारों का शमन सहज में हो जाता है। वर्तमान में मानवीय मूर्खताओं ने इन्द्रिय आराम हेतु बेसमझ उपायों का सहारा लेकर अग्नि को भी विकृत कर दिया है। पाताल समुद्र की वड़वानल अग्नि, अन्तरिक्ष की सूर्यस्वरूपा अग्नि तथा पृथ्वी में मिश्रित ऊर्जा अग्नि में इस समय नाना प्रकार की विकृतियाँ व्याप्त हो चुकी हैं। परिणाम स्वरूप जल, थल, वायु ओज विहीन होते जा रहे हैं। इसका प्रभाव प्राणी जगत में प्रत्यक्ष दिखता है। प्रकृति निर्मित चर-अचर प्राणियों के शरीरों में प्राकृतिक नियमानुसार निर्धारित शक्तियाँ विकृत होकर नष्टप्रायः होती जा रही हैं।

उक्त नारकीय स्थिति से बचने के लिए एकमात्र उपाय है -गोमाता द्वारा छोड़ा गया श्वास और गोमाता से प्राप्त प्रसाद गोघृत। अग्नि के सात्विक जीवन पोषक-तत्व गोमाता की श्वास में अथाह मात्रा में हैं। गाय की अन्तरिक्ष में छोड़ी गई श्वास से त्रिस्वरूप अग्नि को पोषण मिलता है। इसलिए अधिकाधिक गोसंवर्धन कर पृथ्वी पर गो की

संख्या बढ़ाकर उसकी सेवा-पूजा की जाए। जिससे वह प्रसन्न हो। जब प्रसन्नचित गोवंश दिव्य जीवन युक्त श्वास को अन्तरिक्ष में प्रसाद रूप में छोड़ेगा तो उससे त्रिलोकी का कल्याण सम्पादित होगा।

वर्तमान में बेसमझी के कारण मानव द्वारा भयंकर विषों का ईंधन बनाकर अग्नि को आहार में दिया जाता है। ऐसी विकृत अग्नि से अनेक स्थानों पर प्रकोप हो जाते हैं। जिसका परिणाम असंख्य जन-धन की हानि के रूप में हमारे सामने उपस्थित है। समष्टि अग्नि देवता को वैज्ञानिक पद्धति से गोमाता की सेवा पूजा से प्राप्त गोघृत को ईंधन के रूप में आहार में दिया जाए। वर्तमान विश्व की अग्नि आवश्यकता को देखते हुए उसके सदुपयोग हेतु उसको गोघृत का आहार प्रदान किया जावे। इसके लिए भारी मात्रा में गोघृत की आवश्यकता पड़ेगी। इतना गोघृत प्राप्त करने के लिए विश्व मानव के सामने एक ही रास्ता है कि पृथ्वी पर मानवों की संख्या के बराबर गोवंश की संख्या अनिवार्य रूप से हो। ऐसे सद्-उपायों के द्वारा तात्कालिक प्रयासों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। संसार के लोग समझकर वैज्ञानिक मार्ग से गोसेवा, गोपूजा कर विश्व का कल्याण साध सकते हैं।

७. समस्त जागतिक प्राणियों की वायु विकृति का गोमाता के प्राण स्पन्दन तथा रोमकूपों से निसृत जीवनी ऊर्जा से शमन हो जाता है- इन्द्रियारामी मानवके अपराधोंसे समस्त वायुतत्व की प्राकृतिक गति बाधित हो जाती है।

ब्रह्माण्डके सातों प्रकार के वायु अपने-अपने प्राकृतिक नियमानुसार स्पन्दित होते हैं परन्तु विश्व मानवके अविवेकपूर्वक तेजगतिसे विपरीत दिशामें भागनेके असफल प्रयाससे सप्तवायुके स्पन्दनमें अवरोध तथा विकृति पैदा हो जाती है। जिससे प्राकृतिक नियमानुसार वायुके सृष्टि कार्यमें बाधा उत्पन्न हो जाती है। जिसका परिणाम अनिष्टकारी चक्रवात तथा असाध्य वातजनक रोगोंके रूपमें है। मानवजाति सहित समस्त जागतिक प्राणियोंकी ऐसी वायु विकृतिका गोमाताके प्राण स्पन्दन तथा रोमकूपोंसे निसृत जीवनी ऊर्जासे शमन हो जाता है। वर्तमान विश्वमानवको यह लाभ गोवंशकी अधिकाधिक संख्यामें पृथ्वीपर उपस्थिति बढ़ाकर उनकी सेवा, पूजा व आराधनाके माध्यमसे अवश्य प्राप्त करना चाहिए।

८. गोमाता अपनी हुँकार ध्वनि से प्राकृतिक नाद की विकृति तथा क्षोभ को मिटाने में पूर्ण सक्षम है- इस पृथ्वी पर तथा अन्तरिक्ष में प्राकृतिक नाद ध्वनि से विपरीत कोलाहल होने के कारण आकाश में भयंकर विष इससे उत्पन्न हो गया है। इस कारण आकाशीय मर्यादा में बाधा पैदा हो गई है। इसका परिणाम यह हुआ कि प्राकृत नाद क्षोभित हो गया और समष्टि वाक् विकृत हो गई। इससे नाना प्रकार के उपद्रव इस जगत में होने लग गए। उक्त समस्या का निदान गोमाता के पास है। गोमाता अपनी हुँकार ध्वनि से प्राकृतिक नाद की विकृति तथा क्षोभ को मिटाने में पूर्ण सक्षम है। पृथ्वी के सिरमौर मानव जाति को

यह लाभ गोमाता की सेवा, पूजा, आराधना कर तत्काल प्राप्त करना चाहिए।

९. गोमाता से प्रसाद रूप में प्राप्त दूध, दही, घी क्रमशः मन, बुद्धि, अहंकार में व्याप्त असाध्य रोगों को मिटाने में पूर्ण सक्षम है- इस तरह समष्टि मन, बुद्धि, व अहंकार की भयंकर विकृतियाँ तो आज स्वयं मानव जाति के लिए विनाश का विकराल रूप धारण कर चुकी हैं। जिन्होंने मानवीय भावनाओं, विचारों एवं मान्यताओं में विघटनकारी विष घोल दिया है। जो मानवीय जगत के लिए असाध्य महारोग के रूप में प्रत्यक्ष हो चुका है। इसका उपचार कर्म, धर्म, अध्यात्म आदि औषध से दुष्कर हो गया है। ऐसे में शेष केवल एक उपाय रहा है, वह है केवल गोमाता के प्रसाद रूप में प्राप्त दूध, दही व घी। ये तीनों क्रमशः मन, बुद्धि व अहंकार में व्याप्त असाध्य रोगों को मिटाने में पूर्ण सक्षम हैं। अतः विश्व मानव को इस अमोघ साधन का सहारा अवश्य लेना चाहिए। पाठक महानुभाव अच्छी तरह समझ गए होंगे कि गाय और समष्टि प्रकृति-पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि तथा अहंकार के परस्पर अन्योन्याश्रित सम्बन्ध होते हुए भी गाय प्रकृति की पोषक एवं रक्षक है। ऐसी सर्वकल्याणकारी गोमाता तथा उनकी संतान का कोटिशः वन्दन।

जय गोमाता ! जय गोपाल !

❁❁❁❁❁

।। श्री सुरभ्यै नमः।।

3

सुन्दर समाज का निर्माण

आप सभी का बहुत-बहुत अभिनन्दन!

जय गोमाता! जय गोपाल!

अब क्या बोलें बताओ? पता नहीं क्या कहना है और क्यों कहना है? किसको कहना है? किसलिये कहना है? कौन सुनता है? कौन सुनाता है? क्या सुनाता है? क्यों सुनाता है?

तुम सोचोगे, बड़ी विचित्र बातें कर रहा है। समझ में नहीं आ रहा है क्या-क्या कह रहा है? जगे हुए को कोई जगा नहीं सकता। सोया हुआ ही जागता है। हम लोग शाम-सुबह भगवान के नाम स्मरण के निमित एकत्रित होते हैं तो परस्पर अपने कल्याण के बारे में विचार विनिमय करने का ही हमारा उद्देश्य रहता है। जब हम अपनी समझ के अनुसार जीवन नहीं बना सकते हैं,

अपनी दृष्टि से हम अच्छे नहीं बन सकते हैं, जबकि अच्छे बनने की शक्ति हमारे में है पर नहीं बन सकते हैं तो इस प्रकार विचार विमर्श से शक्ति प्राप्त होती है दोष रहित होने की। सतसंग में विचार विनिमय तो करते हैं लेकिन उद्देश्य जब दोष रहित होने का हो तो ही प्राप्त होती है। उसी लक्ष्य से चर्चा की जाये तो ही शक्ति प्राप्त होती है। केवल बातें सीखने, सब जाते हैं इसलिये जाना है, इससे कुछ नहीं होता है। उससे इतना लाभ नहीं होता है, बातें तो सीख जाते हैं लोग। एक उद्देश्य पक्का हो कि यह मुझे इसलिये चाहिये। मुझे इस बात की जरुरत है। जैसे प्यास लगती है तो उसका हमें पता होता है कि वह प्यास पानी से ही मिटेगी, तो पानी प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। इस तरह हमको, हमारी क्या आवश्यकता है इसका पता होना चाहिये।

हमको क्या चाहिये? भय, जड़ता, दुखः और रोग चाहिये या सुख, शांति, अमरता और आनन्द चाहिये? चुनाव हमको खुद करना पड़ेगा। खुद को करना पड़ेगा, दूसरा कोई चुनाव करके आपको दे नहीं सकता कि आप ऐसा करो और ऐसा करने से आप कर भी नहीं सकते। तो भाई चुनाव होने के बाद, तय होने के बाद कि मुझे इसी रास्ते से चलना है। मुझे सुख चाहिये, शांति चाहिये, अमरता चाहिये, आनन्द चाहिये, पवित्रता चाहिये अथवा मुझे रोग, शोक, भय, मृत्यु या पराधीनता चाहिये। अब दोनों में से यह कोई नहीं चाहेगा कि हमें रोग चाहिये,

पराधीनता चाहिये। रोग हो, शोक हो, अभाव हो ऐसा कोई नहीं चाहेगा। तो जो ऐसा नहीं चाहेगा उसका यह कर्तव्य है कि भाई जिस-जिस सम्बन्ध से समझ से, युक्ति से तेरा उद्देश्य पूरा हो, उन-उन युक्तियों को स्वीकार करो, उन-उन बातों को समझो, उनको जीवन में उतारो, वैसा जीवन बनाओ। पहले तय हो जायेगा तो सब साधन मिल जायेंगे।

क्या चाहते हो? विचार करलो अच्छी तरह से खूब सोच लो। आगे का, पीछे का, ऊपर का, नीचे का अच्छी तरह से सोचकर अपनी आवश्यकता तय करो और फिर उस आवश्यकता के प्रति समर्पित हो जाओ तो आपको सफलता मिलेगी। चाहे कोई साधन हो, कोई कार्य हो। स्थूल कर्म भी आवश्यकता से प्रेरित होकर किया जाता है और उसमें पूर्ण समपर्ण हो, तभी उसमें पूरी की पूरी सफलता मिलती है। नहीं तो, जो पूरी शक्ति, समझ लगाकर नहीं करते हैं, उनके काम अधूरे होते हैं, उल्टे-सीधे होते हैं, अव्यवस्थित होते हैं।

तो भाई आवश्यकता को समझ कर उसकी पूर्ति के लिये ईमानदारीपूर्वक सारी शक्ति लगाना, यह बहुत जरूरी है। आपको रुपये चाहिये तो रुपयों के लिये, पढ़ाई चाहिये तो पढ़ाई के लिये, भगवान चाहिये तो भगवान के लिये। वो आपकी मर्जी है क्या चाहिये आपको। आप ऐसी आपकी वास्तविक आवश्यकता क्या है, उसको समझें। आप सदा रहने वाले हो, यह बात

आपको अच्छी तरह से मान लेनी होगी कि आपकी आवश्यकता वही हो सकती है जो सदा आपके साथ रह सके। आपकी आवश्यकता पूर्ति का साधन वो ही हो सकता है जो सदा आपके साथ रह सके।

वस्तुएँ आदि शरीर की आवश्यकताएँ हैं और व्यक्ति आदि व्यक्तितत्व की पूर्ति करते हैं पर आपका साथ नहीं निभा पायेंगे। जब आपका साथ आपका शरीर भी नहीं निभा पायेगा तो जो दूसरी वस्तुओं का सहारा लिया हुआ है, दूसरे व्यक्तियों का सहारा लिया है वो आपका साथ कैसे निभायेंगे? और जब वो आपका साथ नहीं निभा पायेंगे तो फिर किसी पद से, किसी वस्तु से, किसी व्यक्ति से, धन से कैसे हमारी आवश्यकता पूरी होगी? ये तो नष्ट हो जायेंगे फिर आवश्यकता तो यूँ कि यूँ बनी रहेगी।

आपकी आवश्यकता अविनाशी की है। अविनाशी हो तुम और तुम्हारी आवश्यकता अविनाशी। इस गोधाम परिसर में अथवा राम चौकी पर बैठकर इतना ही नहीं समझ सके कि हमारा सम्बन्ध भगवान से है और जिसका कभी नाश नहीं होता उसका नाम भगवान है, अविनाशी है और अविनाशी का अंश अविनाशी होता है अथवा इस शरीर का सम्बन्ध संसार से है हमसे नहीं, तो हमने यहाँ रहकर क्या पाया? भैया इन दोनों में से एक बात तो माननी होगी ठोसता के साथ तभी तो काम होगा और सुन्दरता आयेगी।

आज संध्या की बात चल रही थी, शुद्धि की बात चल रही थी। तो जिस तरह भगवत्स्मरण, नाम जप, मंत्र तथा अनुष्ठान आदि के द्वारा ईश्वर प्रार्थना, उपासना के माध्यम से या तो अपने आपको ईश्वर के समर्पण किया जाता है या फिर इस सारे प्राप्त सामर्थ्य, शक्ति, शरीर आदि मन, बुद्धि इन सबको समष्टि को सुपुर्द कर दिया जाता है। उसको सुपुर्द करने से पहले उसे परिमार्जित तथा विकसित करते हैं।

हमारी जो परम्पराएँ हैं मानव जाति की, सनातन धर्म की उसमें जीवन को दो भागों में बांटते हैं- कर्तव्य विज्ञान और अध्यात्म विज्ञान। कर्तव्य विज्ञान की दो भूमिकाएँ हैं- एक तो अपने को सुन्दर बनाओ, दोष रहित बनाओ और दूसरे ज्ञान-विज्ञान, कला आदि से अपने को सुन्दर शक्तिशाली बनाओ। इतने सुन्दर बनालो कि आपको समाज की जरूरत नहीं रहे, समाज को आपकी जरूरत रहे। आपकी आवश्यकता समाज देखे। अब उस सुन्दरता के द्वारा सुन्दर समाज का निर्माण करो और फिर यह जो कर्तव्य पालन है इसमें बंधो मत। इससे अतीत हो जाओ।

यह जो शुद्ध साधन है अपने को सुन्दर बनाना और सुन्दर व्यक्तित्व के द्वारा दूसरों का हित करना, सुन्दर समाज का निर्माण करना, यह शुद्ध संकल्पों का परिणाम है। पर इन शुद्ध संकल्पों की भी पूर्ति है, उस पूर्ति का भी सुख न भोगें। देखिये थोड़ी गहरी बात है, ध्यान

देना। उसका भी सुख न भोगें और आगे बढ़ें। क्या हुआ कि सारा ही जगत, सभी हमारे तो सेवा के लिये हैं मतलब कि हमें तो सभी की सेवा करनी है। लेकिन हमको तो कुछ नहीं मिलना है और न ही कुछ लेना है तो सेवा के अंत में अपनी समस्त वृत्तियों को चारों ओर से समेटकर अपने में ही समाहित करेगा। होगी और जायेगी कहाँ। यह अध्यात्म विज्ञान है। अपने में ही जब समाहित हो जायेगी तो अपने अन्दर ही जो छिपे हुए हैं अपने प्यारे सच्चिदानन्द वो दिखने लगेंगे।

अगर उसका कर्तव्य पालन का अथवा शुद्ध संकल्पों की पूर्तिका सुख भोगने लग गये तो आगे नहीं बढ़ पायेंगे। तो फिर पराधीन हो जायेंगे। क्योंकि सुखभोग मात्र पराधीन करता है, जड़तामें बांधता है, जड़ बनाता है मनुष्य को। मानवीय चेतना को जड़ बनाता है। इसलिये यह तो भैया हमको समझना पड़ेगा कि हम इस प्रकारके सुखों से कैसे बचें? उसकी लोलुपता से कैसे बचें? क्योंकि वह लोलुपता ही हमें नीचे की ओर ले जाती है, जड़ता की ओर ले जाती है, अधोगति की ओर ले जाती है।

वास्तव में सुख या दुःख दोनों साधन हैं। पर उनमें भय और आसक्ति है वही बन्धन है। इसलिये आसक्ति का त्याग बहुत जरूरी है और वह बिना समझे होगा नहीं और बस समझ इतनी ही है कि कर्तव्य पालन का जो विभाग है उसके लिये ही शरीर, मन, बुद्धि, इन्द्रियों मिली हैं। उनको विकसित करके बाल्यावस्था में अच्छी

तरह से ज्ञान-विज्ञान, कला-कौशल से सम्पन्न होकर और उस शरीर द्वारा जगत की सेवा कर दो। बदले में कुछ न चाहो और यह निश्चित कर लो कि दूसरों की सेवा करने के लिये हमारे पास शरीर, मन, बुद्धि आदि हैं। सब सेवा के पात्र हैं। पर इनसे हमें कुछ मिलना नहीं है और इनसे हमें कुछ लेना भी नहीं है। सेवा सबकी करो और किसी से कुछ चाहो नहीं तो अद्‌भुत कार्य हो सकता है। अद्‌भुत काम हो सकता है।

आप सोचेंगे कि क्या रोटी भी नहीं चाहें, कपड़े भी नहीं चाहें। अरे भाई, वास्तव में तो रोटी, कपड़ा जो यह शरीर की जरूरत है, इस चाह की बात नहीं है। अपने अंहकार की पुष्टि "हूँ" सब मेरे को अच्छा कह रहे हैं, वाह-वाह मिल रही है, मेरा नाम हो रहा है। यह जो है अहंकार और स्वार्थ कि इकट्ठा करो, इकट्ठा करो, इकट्ठा करो, यह दुःखदायी है। रोटी कपड़ा शरीर की जरूरत है, तुम्हारी जरूरत नहीं है। वो तुम्हारे तक पहुँचता ही नहीं। वह तुम्हें कोई बाँधता नहीं। बेचारे कपड़े और रोटी थोड़े ही बाँधते हैं, वे तो सहयोगी हैं। सारे के सारे हमारे साधन में सहयोगी हैं।

हमारी जो वासनाएँ हैं, हमारी जो कामनाएँ हैं, हमारी जो इच्छाएँ हैं, चाह कि हम ऐसे हो जायें, हम ये हो जायें, हमारा वैसा हो जाये, यह चाह ही हमें बांधती है। यही हमें फंसाती है और यही उस पिशाचीनी की तरह हमारे गले में फांस डालकर पाँच विषयों का फांस

डालकर लटकाये हुए घूमती है। यह चाह कोई ऊपर से गिरी नहीं। हमने भूल से अथवा शरीर को ही अपना रूप मानकर पैदा की है। शरीर संसार का अंग है। संसार की सेवा के लिये मिला है वह हमारा रूप नहीं है। साधन है, साधन सामग्री है। तो भाई शरीर को साधन सामग्री समझकर मन को, बुद्धि को और उस तथा उससे सम्बन्धित वस्तु, व्यक्ति, सबका सदुपयोग करते हैं वे अवश्य दुःख से, भय से, रोग से, अभाव से, मुक्त हो जाते हैं।

अभी यह सेवा जो हो, समर्पण भाव से हो। हमको जो यह शरीर मिला है, भगवान ने दिया है। यह सारी सृष्टि भगवान की है। यह सारा, इतना सारा दिख रहा है आपको, सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, वनस्पति, तारे ये, सुबह सूर्य उदय होते हैं, शाम को अस्त होते हैं, रात्री को तारे आदि आते हैं इनको चलाने वाला कोई-न-कोई है।

इनको जो चलाता है, वह ईश्वर है। हमारे अन्दर जो प्राण आ रहे हैं, जा रहे हैं उसको बाहर जाकर फिर अन्दर खींचता है, हमारे अन्दर वाणी जो पैदा होती है, ये शब्द जो बोलने के इनके मूल में भी वो है।तो इन सबको चलाने वाला, इनका संचालन करने वाला जो है उसी का नाम ईश्वर है। उस ईश्वर को स्वीकार करना ही स्वीकृति कहलाती है और जब स्वीकृति हो जाये कि ईश्वर है तो भैया उसमें विश्वास हो जाता है और जिनमें विश्वास हो जाता है, उसमें फिर आत्मीयता हो जाती है। जिनमें

आत्मीयता होती है उनमें प्रेम का प्रादुर्भाव होता है और प्रेम के प्रादुर्भाव से प्रेमी और प्रेम करने वाला प्रेमास्पद दोनों एक हो जाते हैं। तो ईश्वर को स्वीकार करने से यह सारी की सारी सृष्टि ईश्वर की है, ईश्वर के नाते ईश्वर की बनायी हुई सृष्टि के हित में यह शरीर उसका कोई छोटा-बड़ा साधन बन जाये ऐसी आकांक्षा के साथ अपने शरीर, समझ, मन और वाणी को भगवान की बनायी हुई सृष्टि की सेवा में लगा दे।

गोस्वामी तुलसीदासजी महाराज कहते हैं कि- "मैं सेवक सचराचर रूप स्वामी भगवंत।" न चलने वाले अचल वृक्ष, पहाड़ आदि तथा चलने वाले पशु, पक्षी, जानवर, मनुष्य देवता, यक्ष, कीन्नर ये सभी मिलाकर चराचर, सारा विराट स्वरूप जो है यह मेरा स्वामी है और मैं इसका सेवक हूँ, ऐसी दृढ़मति हो जाये मेरी। इस तरह दृढ़ता के साथ सेवा करने से भाई आनन्द की, अमृत की, प्रकाश की और सुख की प्राप्ति होती है। सब में वह है और उसी के नाते सबकी सेवा करनी है। विराट रूप है उनका।

उनके जो-जो प्रियजन हैं, हम लोग प्रारम्भ करते हैं गोमाता से, तुलसी से, पीपल से, साधु से और ब्राह्मण से। इस तरह पाँच प्रत्यक्ष देवता हैं और फिर सूर्य आदि विराट देवता। इस तरह पासना का क्रम चलाते-चलाते हमारी उपासना पद्धति इतनी विराट हो जाती है कि "वासुदेवः सर्वम्।" सब जगह मेरे प्रभु हैं, वासुदेव हैं

उस अवस्था तक जाते हैं और यह बहुत उच्च कोटि की स्थिति है। ऐसी स्थिति प्राप्त पुरुषों के द्वारा सारे संसार को, कहीं शान्ति सुख जो दिख रहा है न, ऐसे महान् पुरुषों की कृपा का प्रसाद है। बाकी यहाँ कहीं कुछ नहीं है। यहाँ जो सुन्दरता दिख रही है, शान्ति दिख रही है, वो ऐसे महान जागृत आत्माओं की कृपा का प्रसाद है।

हम लोग सब मनुष्य हैं, महान् आत्मा बन सकते हैं। इसलिये भाई तय करो कि हमें क्या करना है और फिर क्या चाहिये? हमें क्या पाना है? जो पाना है, जो करना है, जो चाहिये उसी के अनुसार सुनो, समझो और करो पूरी शक्ति लगाकर, तो सफलता अवश्य मिलेगी।

जय गोमाता ! जय गोपाल !

❁❁❁❁❁

।। श्री सुरभ्यै नमः।।

4

गुरु तत्व

आप सभी दूर-दूर से और निकट से सत्संग के निमित्त इस पुण्य पर्व पर पधारे हैं। आप सभी धर्मनिष्ठ साधन परायण बन्धुओं, सज्जनों, बुजुर्गों, माताओं, बहनों, बालकों, आदरणीय पूज्य संतों और ब्राह्मणों का सादर अभिनन्दन! जय गोमाता! जय गोपाल !

आज गुरु पूर्णमासी है। हमारी सनातन संस्कृति में जीवन के सभी जो महत्वपूर्ण पहलू हैं, उनके लिये समय भी निर्धारित किया हुआ है। दिन में हम सन्ध्या करते हैं। 24 घंटे में सन्ध्याकाल में सन्ध्या करने से संध्या का वास्तविक फल मिलता है। ऐसा हमारे इस पृथ्वी पर हमसे पूर्व होने वाले महामनिषियों ने साक्षात्कार किया और फिर वे समय निर्धारित किये। तो सज्जनों इसी

प्रकार नवरात्रि है। नवरात्रि का जो समय है वह ऐसा समय है कि उस समय यदि साधक अपने सत्वगुण को बढ़ाना चाहे तो प्रकृति उसके अनुकूल होती है। जिस समय प्रकृति अनुकूल होती है, अपने को जिस रास्ते की और जाना हो उस रास्ते के अनुकूल हो, तो उस ओर जाना आसान होता हैं। जैसे किसी को धान साफ करना हो, हवा का रुख इस तरफ का होगा तो इस तरफ जायेगा, उस तरफ का होगा तो उस तरफ जायेगा। धान का जो हल्का भाग है वह हवा के रुख के साथ में बह जाता है, ऐसे ही जो इस पदार्थ और क्रिया से हल्का भाग है सत्वगुण का, वह प्रकृति के उस सौम्य अवस्था का जो रुख है उसकी ओर जाता है। अमुक-अमुक समय पर यह सत्व, रजो, तमोगुण वाली प्रकृति सम होती है, वह शरीर में भी होती है और संसार में भी होती है, दोनों जगह होती है। शरीर में जब वह प्रकृति सम अवस्था में होती है तब हम उसे संध्याकाल कहते हैं या योगीलोग उसे सुषुम्णा चल रही है ऐसा कहते हैं।

यह समय प्रकृति की साम्य अवस्था का समय है। इसमें रजो नहीं है और तामस जड़ता भी नहीं है। सतो का जो अंश है वह अवश्य है क्योंकि सतो रहित होने पर तो तीनों गुणों से रहित हो जाना है और ऐसा तो महाप्रलय में होता है। सतो का कुछ अंश रहता है और सतो के अंश के सहारे ही साधक अपने सतोगुण को बढ़ाता है या जो सत्य का केन्द्र है, उस ईश्वर की ओर

बढ़ता है। इसी तरह उपासना का समय और जो दिन निर्धारित किये हैं, उन सबमें अपनी-अपनी महत्ता है। नवरात्रि में शक्ति को बढ़ाओ, शक्ति उपासना है। उन दिनों उपवास करना है। पांच-छः महीना भोजन किया, कच्चा अनाज जो अन्दर रह गया, कच्चे रस से शरीर में अनेक प्रकार की बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं, तो उन नौ दिनों के उपवास से सारा रस सूख जायेगा। जो यह कच्चा रस और उससे होने वाली बीमारियाँ हैं उनका प्रभाव, उनकी वायु का प्रभाव शरीर पर नहीं पड़ेगा।

जिस तरह स्थूल शरीर में कचरा रुकता है, ऐसे सूक्ष्म शरीर में भी कचरा रुकता है। जिस शरीर के द्वारा हम लोग स्वप्न देखते हैं न वह सूक्ष्म शरीर है। स्वप्न से हम सारा सुनते हैं, देखते हैं, आते-जाते हैं, खाते-पीते हैं, हंसते-रोते हैं वह सूक्ष्म शरीर 17 तत्वों का है। उसमें मन, बुद्धि आदि हैं ही हैं, ज्ञानेन्द्रियाँ भी हैं तथा कर्मेन्द्रियाँ भी हैं। क्योंकि आदमी चलता-फिरता है, देखता सुनता है स्वप्न में और उनके विषय भी हैं शब्द, रूप, रस, स्पर्श, गंध आदि ये सब मिलकर मन, बुद्धि के साथ चित्त और अहंकार को सम्मिलित करके कुल ये 17 तत्व होते हैं। 5 ज्ञानेन्द्रियाँ, 5 कर्मेन्द्रियँ, 5 विषय तथा मन, व बुद्धि। मन व बुद्धि के साथ चित्त व अहंकार को मान लिया है। अगर इनको चार गिनते हैं तो ये उन्नीस होते हैं। यहाँ हमने इनको दो ही गिना है। इस प्रकार यह 17 तत्वों का सूक्ष्म शरीर है। इसके अन्दर वाणी भी है।

प्राण भी है।

स्थूल शरीर का तो इस तरह हम उपवास करके शोधन करते हैं पर सूक्ष्म शरीर का शोधन इससे नहीं होता है। इसके शोधन के लिये नाम, जप, ध्यान, पाठ और संकीर्तन आदि साधन हैं, उसमें प्राणायाम भी सम्मिलित है। प्राणायाम से प्राण की शुद्धि होगी, मनन से मन की शुद्धि होगी और शुद्ध जप से वाणी की शुद्धि होगी। वाणी चार प्रकार की होती है- परा, पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी । अब जप की स्थिति- जप करने वाले की अवस्था कैसी है, कौनसी स्थिति में, कौनसी अवस्था में रहकर जप करता है तो यह उत्तरोतर एक से बढ़कर एक उच्चकोटि का जप होता है। हम जो बोलते हैं इसी का नाम वैखरी है और जो कण्ठ तक आ चुकी है पर बोल नहीं रहे हैं उसका नाम है मध्यमा तथा पश्यन्ती हृदय में जो शब्द का आकार बनता है, शब्द के आकार बनने की पहली भूमि है। बोलने की कुछ इच्छा होना उसे पश्यन्ती कहते हैं और उससे नीचे मूलाधार में ये परा, वहाँ कोई शब्द नहीं है। वह इन तीनों वाणियों का आधार है।

आज हम इतनी गहन चर्चा इसलिये कर रहे हैं कि आज यह पर्व ही ऐसी चर्चा का है। हम लोग सभी इन बातों को गहराई से लें। हम लोग केवल औपचारिकताएँ कर लेते हैं। नवरात्रि आती है तो नवरात्रि में कूद लेते हैं, नाच लेते हैं, दीपक कर लेते हैं या कोई लोग आगे बढ़कर उपवास भी कर लेते हैं, हवन भी करा लेते हैं।

वास्तव में नवरात्रि से हमें क्या लाभ लेना है, वो नहीं लेते हैं। गुरुपूर्णिमा आयी तो दौड़-दौड़कर इधर-उधर चले गये। जहाँ आश्रम थे वहाँ जाकर कुछ भेंट चढ़ा आये, हार पहना आये, कीर्तन कर आये, जीम आये और घर पहुँच गये। गोपाष्टमी आयी, जन्माष्टमी आयी तो खेल-कूद कर लिये, उपवास रख लिया, खा-पी लिये।

अरे भाई मेरे ! आप जब तक इन घटनाओं का, इन समयों का पूरा का पूरा वैज्ञानिक रीति से सदुपयोग नहीं करेंगे तब तक आपकी संस्कृति कमजोर रहेगी। आपकी संस्कृति का जो सार है वो तो यही है कि आपके पूर्वजों ने आपकी व्यवस्था को ऐसे बनाया है, ऐसी उच्चकोटि की तथा सहज बनायी है कि आप उस अवस्था के अनुसार चलो तो सहज ही में, स्वाभाविक रुप में आपका पूर्ण विकास हो जाये। आपको अलग से साधन करने की कोई जरुरत न पड़े। ऐसी वह व्यवस्था निर्धारित की हुई है। हमारे पूर्वजों ने मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक ऐसा सुन्दर प्रबन्ध किया है कि किस तरह से वह अपनी चेतना को विकसित करते-करते जड़ता से चिन्मयता की ओर ले जाये। स्वयं अंधेरे से प्रकाश की ओर जाये, मृत्यु से अमरता की ओर जाये और दुःख से सुख की ओर ले जाये। ऐसा जाने का पक्का मार्ग बनाया हुआ है, पर हम उस मार्ग को केवल देखकर दूर से नमस्कार कर लेते हैं। उस पर चलते नहीं है इसलिये पहुँचना मुश्किल है।

तो भाई मेरे ! आज यह गुरु पूर्णमासी है, अब हमें यह देखना है कि गुरु क्या है और गुरु से हमें क्या मिलता है? गुरु की जीवन में क्या आवश्यकता है? इन बातों पर हमें विचार करना चाहिये। विचार करके जो बातें हमें सार लगे उन्हें जीवन में उतारनी चाहिये।

हम विचार कर रहे थे कि हमारे इन-इन पर्वों पर, उससे सम्बन्धित प्रयास किये जावे तो सफलता जल्दी मिलती है। आज जैसे यह गुरु पर्व है तो आज हम गुरु तत्व की चर्चा करेंगे। गुरु तत्व का ध्यान करेंगे। उसकी प्राप्ति की चर्चा करेंगे। तो उसमें हमें सुलभता होगी, सिद्धि होगी। क्योंकि आज प्रकृति हमारे अनुकूल है उस तत्व के लिये। जैसे भगवान् से प्रीति बढ़ाने के लिये गोपाष्टमी आदि अनुकूल होते हैं, ऐसे ही गुरुतत्व से साक्षात्कार करने के लिये, प्रकाश पाने के लिये आज का दिन अनुकूल है।

अब सबसे पहले हम इस बिन्दु पर विचार करेंगे कि जीवन में गुरु की क्या आवश्यकता है? जीवन में गुरु की क्या जरूरत है?- सज्जनों ! इस बिन्दु पर विचार करने से पहले हमें 'गुरु' शब्द की व्यापकता को समझना होगा। गुरु का स्वरूप क्या है? उसकी चर्चा होगी। पर संक्षिप्त में उसकी व्यापकता को समझना होगा।

जिस तरह ईश्वर तत्व है, परमात्म तत्व है, उसी तरह से गुरु तत्व भी है। ईश्वर तत्व उसे कहते हैं जो

सृष्टि का सृजन करता है। उस ईश्वर तत्व का एक बिन्दु केन्द्र पर होते हुए भी वह सर्वव्यापक है। जिस तरह यह सूर्य हैं, तो सूर्य हैं एक गोले के समान, पर उनका प्रकाश विशाल ब्रह्माण्ड में फैला हुआ है। ऐसे ही ईश्वर हैं एक, इसमें कोई संदेह नहीं, पर उनका जो ईश्वरीय प्रकाश है या यूँ कहें कि उनका जो ऐश्वर्य है वह सभी लोकों के रज-रज में व्याप्त है।

इसी तरह गुरु तत्व भी सर्वव्यापक तत्व है। वह किसी सीमा में बांधा नहीं जा सकता। हाँ उसका बिन्दु होता है। हर कल्प में अलग-अलग बिन्दु होता है, सद्गुरु का। बिन्दु तो होता ही है कोई न कोई। इस कल्प में भी सद्गुरु का एक बिन्दु है। जिस तरह सृष्टि का एक केन्द्र बिन्दु है ईश्वर, ऐसे ही सृष्टि को अपनी ओर ले जाने का भी एक केन्द्र बिन्दु है वह गुरु है। सृष्टि के सृजन और सृष्टि के आकर्षण का बिन्दु। गुरु तत्व आकर्षित करता है और ईश्वर तत्व उसको विकर्षित करता है, फेंकता है। बस अंतर एक ही है, इतना ही है। अब वो फेंकी हुई वस्तु वापस वहीं आयेगी, पर लेते समय वही गुरु है और छोड़ते समय वही ईश्वर है।

सज्जनों! यह सर्व उपयोगी बात है। वास्तविक बात है। इसको हमें वास्तविकता से समझना है। पुस्तकों में ढूढ़ने पर, और सम्प्रदायवादियों के पीछे घूमने पर वास्तविक बातें नहीं मिलती है। वास्तविक बातें भगवत् कृपा से, सत्संग से और सद्गुरु के प्रसाद से प्राप्त होती है।

आज हम जिन बातों पर विचार कर रहे हैं, वो बातें हमारे प्रत्येक के काम की हैं। जितनी मेरे काम की हैं, उतनी ही आप सबके काम की हैं। आप सभी इस विश्वास पर मेरे साथ बैठने को तैयार हुए कि ये जो बात करेगा वो अच्छी करेगा। जिस विषय की बात करेगा वो ठीक करेगा और हम भी आपके साथ इसलिये चर्चा कर रहे हैं कि हम और आप सब मिलकर जो सत्य है, उसे स्वीकार करें। उसको जीवन में स्थान दें। इसलिये हम आपके साथ चर्चा में सम्मिलित हुए।

तो भाई ऐसा जो गुरु तत्व है वह किसी नाम रूप में बांधा नहीं जा सकता। जिस तरह ईश्वर तत्व किसी नाम रूप में बांधा नहीं जा सकता, ऐसे ही गुरु तत्व को भी किसी नाम रूप में नहीं बांधा जा सकता। पर हाँ जिस प्रकार उस ईश्वर के अवतार होते हैं, उनकी विभूतियाँ होती हैं, उनकी उपासना के प्रतीक होते हैं ऐसे ही गुरु तत्व का भी अवतरण होता है और उनको भी नाम रूप की भावना के आधार पर स्थापित किया जाता है।

यह गुरु तत्व बीज रूप से तो मनुष्य मात्र में विद्यमान है। गुरु तत्व जो बीज रूपसे हम सबमें उपस्थित है, बुद्धिरूपी गुफा में, उसका नाम है- विवेक। अब आप ध्यान देना हम उन मूल बिन्दुओं पर आते हैं, क्योंकि किसी चर्चा को विस्तार देने से उसमें दूसरा भी काफी कुछ आ जाता है। तो यहाँ हम दूसरी चर्चा करने नहीं बैठे हैं, एक ही चर्चा करने बैठे हैं। अगर इस गुरु तत्व पर या

गुरु पर लम्बी चौड़ी व्याख्या करते गये तो काफी लोगों के अहंकार को ठेस पहुँचेगी। इसलिये इसे हम यही कहेंगे कि गुरु की जीवन में क्या आवश्यकता है?

तो विवेक की क्या आवश्यकता है जीवन में? विवेक के बिना मानव, मानव हो ही नहीं सकता। वह पशु ही होगा। भले ही शरीर मानव का हो पर जब तक उसमें विवेक न हो, विवेक का आदर न हो तो वह मानव, मानव नहीं हो सकता। अगर विवेक के अनुसार जीवन न बनाये तो वह पशु ही है। पशुता में क्या लक्षण होते हैं, पशुता में ये ही हैं लक्षण कि बस उसमें विवेक नहीं होता है, बाकी सब होता है।

यह विवेक एक अलौकिक वस्तु है। यह किसी कर्म का फल नहीं है। जिस तरह मनुष्य जन्म किसी कर्म का फल नहीं हो सकता है, उसी तरह यह विवेक भी कोई कर्म का फल नहीं है। जिस तरह यह मानव शरीर ईश्वर ने हमें कृपा करके दिया है– **कबहुक करि करुणा नर देही। देत ईस बिनुं हेतु सनेही।।** बिना ही हेतु हमसे स्नेह करने वाले ईश्वर ने हमें जिस तरह यह मानव शरीर दिया है, उसी तरह, उसी शक्ति ने हमें अलौकिक विवेक भी दिया है।

मानव शरीर का अर्थ ही एक तरह से सामर्थ्य है, समझ है, बुद्धि है, बल है। तो यह सामर्थ्य और विवेक दोनों ही अलौकिक वस्तुएँ हैं और हमें प्राप्त हुई हैं। विवेक का आदर और सामर्थ्य का सदुपयोग ये ही मानव

के कल्याण के दो सुन्दर साधन हैं। उसके उन्नति के, उसके विकास के, उसके दुःखों का अन्त करने का जो मुख्य मार्ग है, मुख्य साधन के जो भाव हैं वो ये ही हैं कि विवेक का आदर हो, अपने विवेक के अनुसार जीवन बनाया जाये और सामर्थ्य का सदुपयोग हो। तो जहाँ विवेक का आदर होगा वहाँ प्राप्त सामर्थ्य का सदुपयोग होगा ही और जहाँ विवेक का आदर नहीं होगा वहाँ सामर्थ्य का सदुपयोग हो ही नहीं सकता है।

अब सामर्थ्य में सब कुछ आ गया। हमें प्राप्त वस्तु भी, हमारे साथी भी, हमारा संगठन भी और हमारे पास धन, मकान, गाड़ी, दल, सम्प्रदाय और फिर शरीर, मन, बुद्धि, बल, विवेक, सिद्धियाँ यह सबका-सब सामर्थ्य में आ गया।

विवेक एक प्रकाश देता है। यह विवेक ही सद्गुरु का अंश है और सबके अंदर विद्यमान है। इस विवेक का जो जितना अधिक आदर करता है, उसके अंदर उतने ही अधिक गुरु तत्व का विकास होता है। जो अपने पूरे के पूरे विवेक का जीवन में आदर कर देते हैं वे वास्तव में गुरुपद अथवा उस अवस्था तक पहुँच जाते हैं और ऐसे व्यक्ति गुरुपद वाच्य होते हैं।

तो वह वास्तव में उनका व्यक्तित्व उस गुरु तत्व के साथ मिलने के कारण गुरुपद वाच्य हुए। किसी शरीर के, किसी पद के, किसी सिद्धि के या किसी विद्वता के कारण नहीं। उनका जो व्यक्तित्व, उनका जो अहम था

वह नाम रूप के साथ लगा हुआ था, तो वह वास्तव में उनका व्यक्तितत्व उस गुरुतत्व के साथ मिलने के कारण गुरुपद वाच्य हुए। किसी शरीर के, किसी पद के सिद्धि के या विद्वता के कारण नहीं। उनका जो व्यक्तितत्व उनका जो अहम था वह नाम रूप के साथ लगा हुआ था, वहाँ से हटकर अनन्त सत्य चेतना के साथ एक हुआ तब वे गुरुपद वाच्य हुए।

कई वर्षों पहले की बात है। एक गाँव में गये हम। उस गाँव के लोग यहाँ बैठे होंगें पता नहीं। तो वहाँ गाँव के सारे के सारे बन्धु आये। उस गाँव के लोगों में आपस में विवाद चल रहा है। दोनों पक्षों की धर्मशालाएँ अलग हैं, मंदिर अलग हैं, बैठना अलग है। ये सब कुछ अलग हैं परन्तु एक मंदिर ऐसा है, जहाँ गाँव के दोनों पक्ष आते हैं। तो हमको उस स्थान पर बैठाया जहाँ दोनों पक्ष आते थे। हम बैठे इतने में तो वे दोनों पक्ष आये और फटाफट पैसे रखना और नमस्कार करना शुरु कर दिया। हमने कहा कि भाई आप लोग ऐसा क्यों कर रहे हो? तो बोले कि सत्कार कर रहे हैं।

अरे भाई ! कौनसा सत्कार? तुम्हारा यह जो प्रणाम है यह तो समझ में आया। पर पैसे काहे के लिये चढ़ाते हो, यह समझ में नहीं आया। तो उन्होंने कहा कि हमको तो यही शिक्षा मिली है। अमुक-अमुक सन्त से, अमुक महात्मा ने यह कहा था। हमने कहा भाई हम किसी महात्मा को बुरा नहीं कहते और न किसी महात्मा का

ठेका है कि कौन क्या कहता है? पर यह बताओ कि यह प्रणाम वाली तो समझ में आयी कि प्रणाम करने से सन्त प्रसन्न होगें। आप प्रसन्नता के लिये कर रहे हैं यह बात हमारे समझ में आ गयी। तो प्रणाम से प्रसन्नता होगी। भगवान भी प्रसन्न होंगें, सन्त भी प्रसन्न होंगें, अपने बुजुर्ग भी प्रसन्न होंगे। क्यों? क्योंकि उस नमन से हमारा दुष्ट शत्रु है अहंकार वो कम होता है। आपका अहंकार कम होता है, इसलिये आप शुद्ध बनोगे, सफल बनोगे। इस कारण आपकी सफलता को, शुद्धता को देखकर तो सभी प्रसन्न होते हैं पर रुपया आप कौनसी प्रसन्नता के लिये चढ़ाते हो?

आप कहो कि जिस तरह हम नमस्कार करते हैं प्रसन्नता के लिये, कृपा प्राप्त करने के लिये, आशीर्वाद प्राप्त करने के लिये, उसी तरह रुपया भी कृपा आशीर्वाद प्राप्त करने के लिये चढ़ाते हैं। तो भाई रुपयों से कैसा आशीर्वाद मिलेगा, बताओ। आप ही बताओ रुपयों से आशीर्वाद मिलेगा या सामान मिलेगा? जो रुपयों से प्रसन्न होगा वह व्यापारी हो सकता है, साधु नहीं हो सकता। क्योंकि व्यापारी का काम व्यापार करना है वहाँ आप रुपयों की गड्डी रखोगे तो सामान देगा और खुश होगा, पर साधु रुपयों से कभी खुश नहीं हो सकता। यह बहुत बड़ा धोखा है आपके साथ।

उस समय यह गोशाला शुरु हो चुकी थी। एक वकील था वो खड़ा होकर बोला- कि महाराज आप

कहते हो कि साधु को पैसों की क्या जरूरत है, पर आपने जो गोशाला शुरु करवाई है वहाँ बिना पैसों के चारा कहाँ से लाओगे? तो हमने कहा कि तुम वकील हो ना, इसलिये हमको तुमने मुजरिम बना दिया। कोई बात नहीं। हम तुम्हारे इस प्रश्न का भी उत्तर देंगे। यह चारा बीच में कहाँ से आ गया? मैंने कहा कि मैं कोई चारा की बात नहीं कर रहा हूँ आपको। बात तो यह हो रही थी कि आप संतों से आशीर्वाद लेने आते हो तब रुपयों की क्या जरूरत है?

तो बात जब त्याग की चल रही हो कि आप वस्तुओं की ममता का त्याग करो, धन की ममता का त्याग करो, शरीर की ममता का त्याग करो और उनके सामने ही तुम ले जाकर रुपये रखते हो फिर उनको बेचारों को रुपये उठाकर सम्भाल कर रखने पड़ते हैं। एक तरफ तो ऐसा उपदेश दे रहे हैं, ऐसे तो शब्द निकल रहे हैं कि –रुपये त्यागो, रुपये त्यागो और दूसरी तरफ रुपये लेकर जेब भरते हैं तो यह वे केवल अपने विवेक का ही नहीं, प्रत्यक्ष में अपनी बातों का, खुद का निरादर कर रहे हैं, अपमान कर रहे हैं।

वास्तव में महात्मा या संत किसे कहते हैं? जो सत्य से अभिन्न हो गया, परमात्मा से एक हो गया उसे हम महात्मा कहेंगे। जब तक शरीर के साथ जुड़ा हुआ है, वह महात्मा कैसे हो सकता है? अब कई लोग जिस तरह रुपये रखते हैं, इसी तरह फोटू लगाकर पूजा करते हैं

महात्माओं की, साधुओं की और कोई प्रसन्न भी होता होगा उसमें। तो ये जो दोनों बातें हैं ये वास्तव में साधुता का घोर अपमान है। त्याग का अपमान है, संत का अपमान है, महात्मा का अपमान है। पर कइयों को यह बात समझ में ही नहीं आवे तो क्या करें। कई लोग तो अपमान को ही सम्मान समझते हैं कि हमारी ठीक पूजा हो रही है। पूजा नहीं हो रही है तुम्हें तो जूते पड़ रहे हैं भयंकर, मारे जाओगे। वास्तव में संत वो है जो असत से अलग होकर सत के साथ एक हो गया। असत् उसका नाम है जो बदलता हो, उत्पन्न होता हो फिर नष्ट होता हो। इस दृष्टि से यह शरीर ही उत्पन्न होता है और अन्त में नष्ट हो जाता है। शरीर के नाम और रूप दोनों ही उत्पन्न होकर नष्ट होने वाले हैं।

अब आप देखो, अगर आप शरीर की पूजा करते हैं तो संत की पूजा करते हैं या संत के जो विरोधी हैं उसकी पूजा करते हैं? संत तो सत्य के साथ अपने शरीर आदि वस्तुओं से सम्बन्ध छुड़ाकर एक होना चाहता है और आप उसको खींचते हैं, उसमें बांधते हैं। अगर वह इस शरीर के साथ एक होना चाहेगा तो वह महात्मा कैसा, वह तो भूतात्मा है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश, इन पाँच भूतों से बने हुए शरीर को ही वह अपना रूप माने और आप कहते हो आरती करो, शरीर को नमस्कार करो, शरीर को पैसे चढ़ाओ। ऐसा करने से वह खुश हो तो बताओ वह कौन होगा? वह भूतात्मा

होगा, महात्मा नहीं हो सकता।

हाँ सेवा के जो कार्य हो रहे हैं वो अपने स्थान पर हो रहे हैं, वहाँ सेवा सामग्री का महत्व है। वहाँ भी पैसों का महत्व नहीं है। सामग्री सेवा की न हो तो कागज के अथवा अन्य धातुओं के पैसों से कैसे काम चलेगा, बताइये? गायों की सेवा करनी है और चारा न हो कहीं, पानी न हो, हवा न हो, तो आप रुपया लाकर यहाँ ढ़ेर कर दो, सारे इसके अन्दर भर दो, सिक्के भर दो, चाँदी के रुपये भर दोगे तो क्या होगा उससे? हवा होगी नहीं, धूप होगी नहीं, जल होगा नहीं। जब यह सामग्री है तब तो रुपये काम के हैं कि भाई इधर से-उधर से सामग्री का आदान-प्रदान करो। पर जब सामग्री पृथ्वी पर नहीं होगी तो, वस्तुएँ पृथ्वी पर नहीं होगी तो पैसे क्या काम आयेंगें, बताओ?

तो पैसों से वस्तुएँ श्रेष्ठ हैं। वस्तुओं की तरफ तो सबका ध्यान जाता ही नहीं है और पैसों को बड़ा महत्व दे रखा है। छोटे बच्चे भी रुपयों को महत्व देता है। अब साधु को भी देखो जो वीतराग हो गया है, रुपया आता है तो झट से आदमी के मुख से सीधा पैसों पर आँख चली जायेगी। अरे तो घर बार छोड़ा, भगवान् की ओर चला, पर ऐसी मोहनी इस युग में, इस समय आयी है। एक घर में आप देखेंगें कि हजारों रुपयों का अनाज खराब होता रहेगा, कोई सामान खराब होता रहेगा तो उसको नहीं सम्भालेंगे और दस रुपयों का नोट भी कहीं

इधर-उधर देख लिया न तो तुरन्त उसको उठाकर लायेंगे, सम्भाल कर रखेंगे। अब यह बुद्धि की बलिहारी है कि भाई वस्तुओं से रुपये तो हो सकते हैं पर रुपयों से वस्तुएँ हो सकती है क्या? वस्तुएँ होगी तो रुपये आ जायेंगें, पर वस्तुएँ होगी ही नहीं तो रुपयों से वस्तुएँ कैसे पैदा होगी? पर वस्तु नष्ट हो रही है, वस्तु की उपेक्षा है और पैसे का महत्व है, यह बुद्धि हो गयी है।

वास्तव में सिक्का से वस्तु और वस्तु से व्यक्ति श्रेष्ठ है। वस्तुएँ हो और व्यक्ति न हो तो वस्तुओं का भी क्या महत्व है। इसलिये वस्तुओं से व्यक्ति श्रेष्ठ है और व्यक्तियों से भी विवेक श्रेष्ठ है। व्यक्तियों में भी विवेक की श्रेष्ठता है। व्यक्ति हो और विवेकहीन हो तो सारी अव्यवस्था फैला देंगे पृथ्वी पर। हिंसा, तांडव, लूटपाट, अपना ही नाश अपने द्वारा कर देंगे जिस तरह यादवों ने किया प्रयास क्षेत्र में। तो सज्जनों! व्यक्ति से विवेक श्रेष्ठ है और विवेक भी वो श्रेष्ठ है जिसमें सत्य हो। एक यह भी विवेक है कि मुझे उसका राज लेना है तो कौनसे-कौनसे कपट, बेईमानी और धूर्तता से लूँ। विवेक का उपयोग वहाँ भी करेगा। तो वह विवेक नहीं, सत्य से जिसका सम्बन्ध है वो विवेक श्रेष्ठ है। इस प्रकार विवेक से सत्य श्रेष्ठ हुआ।

तो भाई सिक्का से वस्तु, वस्तु से व्यक्ति, व्यक्ति से विवेक तथा विवेक से सत्य श्रेष्ठ हुआ। सत्य माने भगवान्। सबसे श्रेष्ठ वो हुआ और सबसे कनिष्ठ सिक्का

हुआ। अब आप और हम देखें विचार करके कि आज हमें जो श्रेष्ठ चीज हो उसे सबसे पहले महत्व देना चाहिये या नहीं? तो बताओ हम सबसे पहले किसको महत्व देते हैं?

आज आपको कहें कि गोशाला से सौ बूढ़ी गायें ले जानी हैं और आपके जितने घर में रुपये-पैसे, मकान-जमीन हैं वो सब बेचकर उन गायों को चारा खिलाना है। घर में जितना है वह सब खिला देना है। क्योंकि इससे ईश्वर प्रसन्न होंगें और तुम्हें धर्म होगा। तो आप धर्म और ईश्वर पर नहीं देखोगे। पहले रुपयों पर देखोगे, अपनी सम्पत्ति पर देखोगे कि रुपये चले जायेंगे तो फिर क्या करूंगा? सब कैसे खिला दूँ?

तो इसका मतलब ईश्वर को, धर्म को, गाय को हम महत्व नहीं देते हैं, हम महत्व दे रहे हैं रुपयों को। जब रुपयों की बात आती है आज के मुनष्य में, अधिकतर लोगों में तो फिर भगवान, गुरु, धर्म, माँ-बाप प्रीति में सब दूसरे, तीसरे, चौथे, पाँचवे, छठे, सातवे नम्बर पर चले जाते हैं पर पहले नम्बर पर रुपया होता है।

इसका कोई यह अर्थ नहीं लगाये कि मैं रुपयों की निन्दा कर रहा हूँ। मैं रुपयों की निन्दा नहीं कर रहा हूँ और कोई सन्त महात्मा रुपयों की निन्दा नहीं करेगा। क्यों करेगा निन्दा? पर जो आसक्ति है रुपयों में, रुपयों के कारण जो अपनी बुद्धि को बिगाड़ी है, अपने जीवन को बिगाड़ा है, अपनी नीति, अपने संस्कार और अपने

सम्बन्धों को बिगाड़ा है उससे नाराजगी है। उसकी निन्दा करते हैं। रुपयों में कोई दोष नहीं है। दोष हमारी समझ-सोच में है। रुपये अपने स्थान पर ठीक है, उससे वस्तुओं का आदान-प्रदान होता है और इससे कोई परेशानी भी नहीं है। पर रुपयों को ही सब कुछ मान लेना और यह समझ लेना कि रुपयों के बिना कुछ नहीं होता, तो यह बहुत बड़ी भूल है। यह बहुत बड़ा धोखा है।

हम आज से 12 साल पहले भी जब जंगल में वृक्षों के नीचे रहते थे तब भी हमारी यही मान्यता थी और अब गोशाला के बीच में बैठे हैं, आप सबके बीच में बैठे हैं तब भी हमारी यह मान्यता है। आज तक हमारी उस मान्यता में कोई अन्तर नहीं आया कि रुपयों के बिना कुछ नहीं हो सकता। हमें तो यह वकील साहब वाली बात अभी तक नहीं जची। हम यह मानते हैं कि रुपयों के बिना ही सब कुछ हो सकता है। अभी तक हमारे यह बात मानने में नहीं आ रही है कि रुपयों के बिना नहीं हो सकता है। मैं कहूँ सब कुछ हो सकता है। कुछ नहीं, सब कुछ हो सकता है। रुपये वस्तुएँ के पीछे आते हैं, वस्तुएँ व्यक्तियों के पीछे आती हैं, व्यक्ति विवेक के पीछे आते हैं और विवेक जहाँ सत्य होता है वहाँ खिंचा आता है।

हमारे एक संत रहे हैं उन्होंने कहा कि किसी भी सेवक को संसार में सेवा सामग्री की कभी चिन्ता नहीं करनी चाहिये। ये संत के वाक्य हमारे आदर्श हैं। वो जो भी सेवा करता है, अगर वास्तव में वो सेवा के भाव

से सेवा करता है तो सेवक के पास में संसार भर की सामग्री खिंची आयेगी। यह बात हमारे जीवन की संबल रही। यहाँ जो सेवा कार्य प्रारम्भ हुआ, हम लोगों के पास कुछ नहीं था और आज भी कुछ नहीं है और आगे भी कुछ नहीं रहना है क्योंकि हम अकिंचन थे, अकिंचन हैं और अकिंचन ही रहेंगे।

तो सज्जनों! उस समय कई बार चारा, वस्तुऐं, ये वो लाना, बीच-बीच में परिस्थितियें प्रतिकूल रही। अभी महीना भर पहले भी भयंकर परिस्थिति थी और अब भी चल रही है, चलती रहती है। ऐसा कई बार आया और कभी-कभी मन थोड़ा डगमगाया, पर दूसरे ही क्षण यह बात याद आ गयी कि नहीं, ईश्वर की व्यवस्था में कोई कमी नहीं हो सकती, कहीं न कहीं हमारी गलती है। हम सेवक की जगह कहीं भोगी बन गये। सेवक उसका नाम है जो सेवा करने के उपकरण और सेवा की सामग्री इन दोनों को ही सेव्य की मानता है, अपनी नहीं मानता और बदले में कुछ लेना नहीं चाहता है। बदले में वाह-वाह नहीं लेना चाहता है।

जिस तरह ईश्वर ने हमको सब कुछ दिया है, यह शरीर दिया है, समझ दी है, वस्तुएँ दी है और भी बहुत कुछ दिया है फिर भी ऐसा नहीं जताया कि मैंने आपको दिया है। अपने को इतना गुप्त रखा है कि हमको लगता है कि ये वस्तुएँ हमारी अपनी ही हैं। शरीर भी हमारा है, ये भी हमारे हैं। उसी तरह, जब ईश्वर सब कुछ देकर

भी अपने को नहीं बताता कि मैंने दिया है तो ईश्वर की दी हुई सामग्री ईश्वर के जग में, ईश्वर के जनों की सेवा में लगा दी जाये और यह अभिमान किया जाये कि मैंने दिया तो यह बहुत बड़ी मूर्खता होती है, यह सेवकपना नहीं होता है। यह भोगपना होता है। इसी से अपने का प्रतिकूलता दिखती है।

तो यह बात न हो। ईश्वर की सामग्री, उन्होंने अपने काम में ले ली, उसका आभार प्रकट करें। लोग कहेंगे, जगत तो देखो, जगत को उदारता की जरूरत है। जब आप अपने सभी अधिकारों का त्याग कर दोगे, तो आपके उस अधिकार त्याग से जगत के कई प्राणियों की रक्षा होगी, कई प्राणियों के अधिकारों की रक्षा होगी और उससे वे आपका आदर करेंगे।

पर आपने वास्तव में जिन अधिकारों का त्याग किया, माने शरीर पर आपका अधिकार मानते थे, मन पर आप अपना अधिकार मानते थे, बुद्धि पर आप अपना अधिकार मानते थे, आपके अधीनस्थ रहने वाली वस्तुओं पर, व्यक्तियों पर आप अधिकार मानते थे, उन अधिकारों का त्याग किया, माने उन वस्तुओं को, व्यक्तियों को, शरीर को, समझ को, दूसरों के काम में लगा दिया। यह अधिकार का त्याग हुआ।

अब वास्तव में यह अधिकार हमने भूल से ही माना था। न तो यह शरीर हमारा है, न यह मन हमारा है, न यह बुद्धि हमारी है। जो मन-बुद्धि-शरीर ही हमारे

नहीं है तो शरीर से सम्बन्ध रखने वाले व्यक्ति अथवा वस्तुएँ हमारी कैसे हो सकती है? उन पर हमारा अधिकार है ही नहीं, भूल से हमने अधिकार माना था, और उनको सेवा में लगाया तो हमने उस पर से अधिकार क्या हटाया, हमने तो अपनी भूल को मिटाया है।

सज्जनों ! इस तरह अधिकार त्याग से वह यह न समझे कि मैंने अपना जीवन दूसरों की सेवा में लगा दिया, मैंने अपनी समझ-शक्ति लगा दी, ऐसा न समझे। वो यही समझे कि मेरी भूल मिट गयी। वास्तव में यह मेरा था ही नहीं। दूसरों का ही था। व्यावहारिक दृष्टि से भी यह शरीर और जो वस्तुएँ हैं वो जगत की हैं, अपनी नहीं हैं। जगत से मिली है। शरीर माँ-बाप के गर्भ से लेकर आज तक जगत के आश्रित हैं। जगत से पला, जगत से बढ़ा, जगत से बेचारा सुरक्षित है। रज-वीर्य से लेकर यह सारा जो निर्माण हुआ है यह सबका सब जगत से मिला है और जो शरीर से सम्बन्धित वस्तुएँ, व्यक्ति, ये वृक्ष, और कुछ भी हैं ये भी सब जगत से ही मिले हैं।

तो भाई जगत की सामग्री जगत को दे दी, इससे जगत पर कौनसा उपकार किया। शास्त्रों में तो यहाँ तक आता है कि मनुष्य अपने शरीर के चमड़े की जूती बनाकर माँ को पहनाये तो भी माँ का ऋण नहीं उतरता है। एक माँ जो जन्म देने वाली है, एक जन्म में नौ महीने गर्भ में रखकर पाँच साल तक पालन-पोषण करने वाली

है, उस माँ का भी इतना ऋण है कि यह चर्म उतारकर उसकी जूती बनाकर पहनाओं तो भी ऋण न उतरे तो ऐसा-ऐसा तो हमारे ऊपर कितना ऋण है? हम सोचें कि हमने पृथ्वी माँ से, वायु से, जल से, सूर्य से, जगत के विभिन्न प्राणियों से कितना ऋण लिया है?, हम चलते हैं तो मार्ग किसी ने बनाया, हम बैठे हैं तो वृक्ष किसी ने लगाया है, कहीं पानी पीते हैं, फिर भगवान् का बनाया हुआ यह सूर्य, चन्द्र, हवा इन सबका कितना ऋण है और स्वयं भगवान् का कितना ऋण है। अगर हम ऋण की दृष्टि से, लेन-देन की दृष्टि से, व्यापारी बुद्धि से सोचें तो हमारे ऊपर भारी ऋण है। उस ऋण को चुकाने का कोई साधन हमारे पास है ही नहीं।

पुराने जमाने में हमारे यहाँ गाँव में किसी पर इतना ऋण चढ़ जाता कि वह गाँव का आदमी अपनी जमीन, अपने पास जो सब सामान है वह दे तो भी ऋण उतरे नहीं और वह आदमी ईमानदार है, ऋण उतारे बिना शान्ति नहीं रहती उसको, उनके मन में अशान्ति रहती है तो वह क्या करता कि जो ऋण दाता होता उसके पास चला जाता कि यह मेरी जमीन और ये मेरे संसाधन और यह मेरा शरीर, अब आप जो भी उचित समझें इनका उपयोग करें क्योंकि ऋण तो इससे भी अधिक है। तो वह कहता कि भाई कोई बात नहीं। गोबर ले आओ जहाँ खाताबही में तुम्हारा नामा है उस जगह गोबर लगा दिया, तुम्हारा ऋण समाप्त हुआ। जाओ आज से तुम

मेरे ऋण से मुक्त हो गये।

तो जब संसार का एक आदमी गोबर लगाकर हमें ऋण मुक्त कर सकता है, सामान्य व्यक्ति, जो पैसों का लोभी है, कोड़ी-कोड़ी ब्याज जोड़कर पैसे बढ़ाता है, वह भी हमें ऐसी अवस्था में दया करके और ऋण मुक्त कर सकता है तो इस जगत का जो मालिक है वो हमें ऋणमुक्त क्यों नहीं करेगा। अवश्य करेगा। पर हम ईमानदारी से उसके सामने जाकर कभी समर्पित तो होवें। हम तो कभी अपने आपको उनके सामने समर्पित करते ही नहीं, तो ऋण बना रहता है और जब तक ऋण बना रहता है तब तक दुःखों का, क्लेशों का अन्त नहीं होता, अशान्ति का अन्त नहीं होता।

ऋण मुक्त होने का सहज तरीका यही है कि अपने पास जितनी समझ है, जितनी शक्ति है, जितना समय है, जितना बल है, उसको अच्छे से अच्छे कार्य में दूसरों के हित में, जो अपने आश्रित हैं, न्याय और नीति पूर्वक हमसे सेवा लेने के अधिकारी हैं और हम वो कर सकते हैं, वो कर दें। किसी की हानि न हो ऐसा ही करना चाहिए। किसी की हानि हो ऐसा नहीं करना चाहिये। उसका नाम कर्तव्य नहीं है। कर्तव्य पालन से योग की प्राप्ति होती है, कर्तव्य पालन से ऋण मुक्त होते हैं। पर कर्तव्य उसी का नाम है जो करने से किसी की हानि न हो और करने का सामर्थ्य हमारे पास हो, करने की समझ हमारे पास हो तथा वो करना लोक तथा शास्त्र के

विहित हो, अनुकूल हो तो उसी का नाम कर्तव्य है। ऐसा कर्तव्य पालन हम सभी कर सकते हैं। इसमें कोई नई चीज लानी ही नहीं है।

बात गुरु तत्व की थी और ये सारी चर्चाएँ गुरु तत्व की है। तो हम कह रहे थे कि बस ये बातें समझने के लिये अपने जीवन में देखो कोई पोथी तो हर समय पढ़ नहीं सकते या कोई बाहर का उपदेश हम हर समय तो सुन नहीं सकते। सीखा हुआ, सुनाया हुआ जो ज्ञान हर समय तो रहेगा नहीं और हमको तो 24 घंटे ज्ञान रूपी प्रकाश की जरूरत पड़ती है। अगर आप किसी एक देशीय वाच्य गुरु को पकड़ें जो आपका मार्ग दर्शन करे वो 24 घंटा और सब देश, सब काल में आपके साथ नहीं रह पायेगा। जब वह नहीं रहेगा तब आपका मार्ग दर्शन कौन करेगा?

इसलिये मैंने कहा कि गुरु की जरूरत तो है पर वह गुरु जो पहले हमने बताया वह आपके अंदर बीज रूप से विद्यमान है। उसका आप आदर करेंगे तो भाई वह और विकसित होकर आपका पथ प्रदर्शक बनेगा। बाहर के सत्यरूप और सत्शास्त्र भी आपके अंदर जो बीज रूप से छुपा हुआ यह गुरु है इसे विकसित और पल्लवित करने का प्रयास करते हैं। वो कोई नई चीज नहीं देते हैं। आपके ज्ञान को ही बढ़ाते हैं। आपके ज्ञान को आदर देने की शक्ति और भावना आप में भरते हैं और वे कुछ नहीं करते हैं।

तो भाई गुरु की तो जरूरत है। बिना गुरु, बिना विवेक के तो मानव शरीर क्या काम का। वो तो पशु से भी गया बीता है। इसलिये जरूरत है कि हम मानवता के महत्व का मूल्यांकन कर सकें। जिस मनुष्य शरीर के माध्यम से हम अखण्ड पद और अनन्त रस, नित्य जीवन प्राप्त कर सकते हैं उसी शरीर से हम नाशवान सुख, नाशवान पद और नाशवान वस्तुओं में ही लगे रहें और सारा समय व शक्ति सब उसमें लगा दें तो यह विवेक का घोर दुरूपयोग है। शक्ति का भी दुरूपयोग है और विवेक का भी निरादर है।

ऐसा आदमी अन्त में पराधीन हो जाता है, जड़ता में बन्द हो जाता है, अभावग्रस्त होकर अत्यन्त दुःखी और व्याकुल हो जाता है। उनमें निर्बलताएँ आ जाती हैं क्योंकि उसने बल का दुरूपयोग किया और उसके सामने कोई मार्ग नहीं रहता क्योंकि उसने प्रकाश का निरादर किया, विवेक का निरादर किया। तो वह अंधेरे में आ जाता है, प्रकाश रहित अवस्था में आ जाता है। वह एकदम जड़ हो जाता है। क्योंकि इनमें यह जो सारा हमें दिख रहा है न पद, प्रतिष्ठा, धन, मान, वस्तुएँ, पर मिलता कुछ नहीं अंत में। माने ये संसार की है और संसार में ही रहती हैं। प्रवृति तो दिख रही है, हम चलते तो हैं, करते तो हैं, खूब करते हैं पर कुछ नहीं मिलता। यहाँ केवल प्रवृति ही प्रवृति है, प्राप्ति कुछ नहीं।

आप विचार करेंगे एक छोटे से उदाहरण के रूप

में- मनुष्य जो प्रवृति करता है जिस संकल्प से प्रेरित होकर, उस प्रवृति से पहले जिस अवस्था में था उसी अवस्था में प्रवृति के अंत में आ जाता है। वह कर्म पूरा होने के बाद उसी जगह आ जाता है। माने कि मेरी इच्छा हुई कि मैं यहाँ का राजा बन जाऊँ। अब मैंने इस देश का राजा बनने के लिये प्रवृति का कर्म किया और प्रारब्ध ावश राजा बन गया, अथवा नहीं बना। दोनों में से एक हुआ। या तो बन गया या नहीं बना यही होता है। खेत में बोते हैं, व्यापार करते हैं, इसमें या तो मुनाफा होता है या घाटा होता है। तो ऐसे ही हम या तो राजा बन गये या नहीं बने। अब क्या हुआ कि राजा बनने की कामना से पहले, उस कर्म से पहले हम जिस अभाव अवस्था में थे, राजा बनने के बाद फिर कोई कामना आ जायेगी और हमारी अभाव की अवस्था तो वैसी-की-वैसी ही बनी रही।

हमारे को कुछ राजा आदि बनना था, ऐसी हमारी मांग थी, आसक्ति थी, कामना थी, उस कर्म के अंत में राजा बन भी गये तो भी दूसरी कामना खड़ी हो जायेगी और नहीं बने तो भी दूसरी कामना खड़ी हो जायेगी। माने कमी हमारे में रह ही जायेगी। राजा बनने से पहले भी कमी थी, कमी से कामना हुई और राजा बनने के बाद भी कामना हुई तो कमी मौजूद है।

तो प्रवृति में केवल संसार की ओर, भोगों की ओर प्रवृति-ही-प्रवृति होती है, प्राप्ति कुछ नहीं होती है।

खाली के खाली रहते हैं। माना कि एक लाख रुपया प्राप्त करने की इच्छा से मैंने मेहनत शुरु की और इस मेहनत से मुझे लाख रुपया मिल गया। तो इस मेहनत के संकल्प से पहले मैं लाख रुपयों के अभाव से दुःखी था, माने मुझे यह कमी थी कि लाख रुपया मिले तो मेरी कमी मिट जाये। इस कमी से प्रेरित होकर मैंने लाख रुपया प्राप्त करने के लिये कर्म किया, और कर्म के अंत में लाख रुपया मिल गया, पर इसके बाद एक करोड़ की इच्छा हो जायेगी या इन लाख रुपयों से गाड़ी, मकान आदि कुछ खरीदने की इच्छा हो जायेगी तो मेरी कमी तो बनी रही। अब इसके लिये मैंने दूसरी प्रवृति शुरु कर दी।

तो संसार में चाहे रुपया हो, पद हो, धन हो, मान हो, प्रतिष्ठा हो, पूजा हो, आदर आदि कोई भी चीज हो, इन सभी चीजों में केवल प्रवृति ही प्रवृति है, प्राप्ति कुछ नहीं है। क्योंकि जिसकी प्राप्ति यानि कि जिसकी मांग जिसकी भूख हमारे अन्दर है, वह भूख इन किसी से मिट नहीं सकती। क्योंकि वास्तव में वो भूख किसी और की है, इन वस्तुओं की नहीं है। इसलिये तो रुपया मिलने के बाद हमें दूसरी चीज की मांग आ गयी। राजा बनने के बाद सेना की मांग आ गयी। सेना आने के बाद आयुधों की मांग आ गयी।

तो यह जो हमारी मांग निरन्तर बनी रहती है, ऐसा कोई भी स्थान आप बताइये, उस पद पर, उस प्रतिष्ठा पर, उस सीमा पर जाने के बाद आदमी की मांग पूरी हो

जाये, उसको कोई जरूरत नहीं रहे, ऐसी कौनसी अवस्था है बताइये। संसार की सारी चीजें दे दो, सबका सब दे दो, पर क्या आदमी की मांग, भूख मिटेगी? अगर मिटती है तो बताइये? नहीं मिट सकती। अगर मिटती है तो विचार कीजिये और बताइये कि इस-इस से उनकी भूख मिट जायेगी। केवल अनुमान नहीं, अनुभव भी होना चाहिये। नहीं मिटती, मिट ही नहीं सकती।

संसार के जितने भी भोग हैं, बड़े से बड़ा पद और अधिक से अधिक धन, अधिक से अधिक सामर्थ्य और भी जो-जो चीजें हैं, वे सब मिलकर भी आदमी के अन्दर जो कामना है, मांग है, भूख है उसको नहीं मिटा सकते। क्योंकि यह जो मांग है यह मांग अविनाशी की है, विनाशी की नहीं है और ये संसार की चीजें जो हैं ये विनाशी हैं। अविनाशी की मांग विनाशी से नहीं मिटती। हमारे अन्दर जो मांग है, भूख है कि कुछ चाहिये, कुछ चाहिये वह अविनाशी की मांग है, भले ही हम कुछ चाहिये उसको किसी से पूरा कर रहे हैं- पदार्थ से, मान से, बड़ाई से, धन से, पद से, पर वास्तव में इनसे पूरा होगा नहीं, कमी बनी रहेगी, भले ही ये सब मिलते रहें।

ईमानदारी से आप हम सब देखें कि हमने बहुत सी कामनाएँ की और उसके फल भी मिले पर क्या तृप्ति हुई, भूख मिटी? ऐसे बहुत से कर्म हैं जिनको हम बहुत बार कर चुके हैं फिर भी हमको भ्रम है कि इसमें हमको सुख मिलेगा, शान्ति मिलेगी और फिर करते हैं। तो यह

हमारा अनुभव है कि इस प्रवृतिका फल कुछ नहीं मिला, इसमें कुछ प्राप्ति नहीं हुई। यह हमारा विवेक है, हमारा ज्ञान है। इस ज्ञान का निरादर करके फिर से उसी प्रवृति को करते हैं, यही तो ज्ञान का निरादर है, यही तो विवेक का निरादर है और यही पशुता कहलाती है।

प्रत्येक प्रवृति, प्रवृति का परिणाम हमें जिज्ञासु बनाता है। सभी भोगों का परिणाम दुःख है इसमें कोई संदेह नहीं। संसार के अथवा यूँ कहें कि संयोगजन्य जो सुख हैं उन सभी सुखों का परिणाम दुःख है और दुःख का जो भोग है, दुःख का जो उपयोग है वह जीवन के विकास के लिये हो सकता है। जीवन के विकास के लिये तो सुख का उपयोग भी होता है।

अभी जो प्रार्थना की कि दुःखी प्राणियों के हृदय में त्याग का बल दो और सुखी प्राणियों के हृदय में सेवा का बल दो, दुःखी आदमी सेवा तो कर नहीं सकता। किससे करेगा? यहाँ शरीर से रोगी है तो दुःखी है, धन के अभाव में दुःखी है, पुत्र के अभाव में दुःखी है, जो अभावग्रस्त है वह सेवा तो कर नहीं सकता, पर वो त्याग कर सकता है। किसका त्याग? उसके अन्दर जो सुख की कामना है कि मुझे इस चीज से सुख मिल जायेगा, मुझे उस चीज से सुख मिल जायेगा, कि मान से मिल जायेगा, कि पद से मिल जायेगा, उस कामना का त्याग दुःखी आदमी कर सकता है। आराम से कर सकता है और कामना का त्याग करने मात्र से ही उसके

दुःखों का अंत हो जाता है। उसकी दुःखहारी से भेंट हो जाती है। जब यह निश्चित हो जाये कि वास्तव में यह दुःख संसार की चीजों से नहीं मिटेगा, तब दुःखहारी से भेंट हो जाती है।

मानलो अब मुझे रुपयों का दुःख है, रुपये मिल जायेंगें तो फिर दुःख नहीं आयेगा क्या? फिर चोरी का दुःख आ जायेगा और चोरों का दुःख मिट गया तो रोग का दुःख आ जायेगा। माने दुःख तो एक न एक तो तैयार रहेगा ही। अब ऐसा कोई उपाय दिखता नहीं है कि इस सांसारिक सारी चीजों से दुःख सदा के लिये मिट जाये। जब वह छोटे से दुःख पर विचार करके यह निश्चित करले कि दुःखों को मिटाने का उपाय संसार में कहीं देखने को नहीं मिल रहा है, दुःख को इतना विभु बनाले विचार पूर्वक कि इनको मिटाने का उपाय परिवर्तनशील पदार्थों में, परिस्थितियों में कहीं मिले नहीं और जब दुःख इतना विभु हो जायेगा तब दुःखहारी से मिलन होगा, दुःखों का हरण होगा।

वास्तव में यह मनुष्य शरीर मिला ही दुःखों का अंत करने के लिये है, अमरता की प्राप्ति करने के लिये। जो बार-बार मरते हैं ना, इस मरने से छुटकारा पाने और दुखों का अंत करने, इन दो चीजों के लिये ही यह मनुष्य शरीर मिला है। मनुष्य शरीर दुःख भोगने और मरने के लिये नहीं मिला और अविनाशी गुरु हमें यही संदेश देते हैं। यह जो विवेक है हमारा, यह हमको यही संदेश देता

है कि तुम प्रत्येक प्रवृति के परिणाम से विचारपूर्वक असंग हो जाओ। किसी भी प्रवृति का परिणाम आपके लिये कुछ भी अर्थ नहीं रखता है। चाहे वह परिणाम कुछ भी हो। आपने मानो संकल्प किया कि मुझे अमुक देश का राज मिल जाये। अब आपको राज मिला तो और न मिला तो इससे आपके लिये कोई फर्क नहीं पड़ता। क्योंकि नहीं मिला तो भी और मिला तो भी आपमें मिलने से पहले जो कमी थी वो कमी मिलने के बाद भी बनी रहेगी। इसलिये संकल्प की पूर्ति और अपूर्ति में हमें सम रहना चाहिये। यह प्रेरणा हमें सद्गुरु प्रदान करते हैं। यही गुरु की आवश्यकता है।

संकल्प की पूर्ति और अपूर्ति में यदि हम सम रहें और उस अवस्था को, संकल्प पूर्ति की जो अंतिम अवस्था है उसको थोड़ी देर सुरक्षित रखें, उस विश्राम को सुरक्षित रखें तो उससे विवेक विकसित होगा। पर हमसे भूल क्या होती है कि संकल्प पूरा हुआ तो भी, उसकी सिद्धि हुई तो भी और न हुई तो भी दूसरे संकल्प में उलझ जाते हैं या आगे-पीछे का चिन्तन करने लग जाते हैं। दोनों में कोई फर्क नहीं पड़ता है। संकल्प पूर्ति से पहले जो कामना थी न मेरे मन में कि आज गुरुपूर्णमासी है तो कोई मुझे साधु-समझकर हार पहना दे पुष्पों का। तो यह कामना हमारे अन्दर बराबर लगी रही। किसी-न -किसी भक्तके माध्यम से सिद्ध हो गया और पुष्पों का हार आ गया, गले में डाल दिया तो यह कामना जो चित्त

ने पकड़ी हुई थी कि हार मिल जाये, वो हार मिलने पर थोड़ी देर के लिये सुखी तो हुआ कि वाह भाई, पर दूसरे ही क्षण हम दूसरी कामना में फंस गये कि कोई चन्दन नहीं लाया, कोई फल नहीं लाया, कोई वस्त्र नहीं लाया।

तो यह जो संकल्प पूर्ति में सुख दिखता है वह वास्तव में संकल्प पूर्ति का सुख नहीं है, वह उस संकल्प की वस्तु की कामना जो चित्त में चिपकी हुई थी, उसके छूटने का सुख है, उसके अलग होने का सुख है। उसके प्राप्त होने का सुख नहीं है। यह बात समझने की है। बड़ी गहरी बात है। इसलिये कभी भी यह मत समझो कि अब देखो उसको हरा कर मैं कुछ बन गया तो खुश हो गया। अरे भाई दूसरों का जो दुःखी होना है, पीड़ित होना है, दूसरों का दुःख है, उसे तूँ अपना सुख मानता है। यह सुख कितनी देर का है? थोड़ी देर में तुझे दुःख लगेगा कि मुझे मंत्री बनायेंगे कि नहीं बनायेंगे, मेरी पार्टी हार जायेगी या जीत जायेगी?

तो दूसरों का जो दुखः है उसे हमने सुख माना है यह बहुत बड़ी भूल है। किसी आदमी को धनी होने का सुख है तो आप सोचो कि वह धनी कैसे माना जाता है? उसके सामने दूसरे निर्धन हैं इसलिये तो वह धनी है। यह जो निर्धनों का दुःख है उसी ने उसको धनी बनाया है और अगर वह उसको सुख मानता है तो यह बहुत बड़ा वहम है, बहुत बड़ी भूल है। दूसरों का दुःख कभी अपना सुख नहीं हो सकता। किसी आदमी को अपने पास में अधिक

बल होने का सुख है तो यह जो अधिक बल है वह किससे? निर्बलों से। तो निर्बलों ने बलवान बनाया है। अगर सबके सब इनसे भी अधिक बल वाले होते तो इनको बली कौन कहता? तो यह जो इनको बलवान बनाया है वो निर्बलों ने बनाया है। अब वो निर्बलों का बल अपना बल मानें, उससे वो सुखी होवे तो यह सुख ठीक नहीं है। यह भ्रम है क्योंकि यह सुख होता तो निर्बलों के पास भी होता। यह सुख नहीं है। उन निर्बलों का दुःख, जो उनको अपने में बल की कमी का दुःख है वो ही तुम्हें बल की अधिकता का सुख महसूस हो रहा है और कुछ नहीं।

तो इस तरह एक का जो दुःख है वह दूसरे का सुख नहीं हो सकता वो तो केवल सुख का वहम है। अब जीतने वाला आदमी सुखी हो गया और हारने वाला दुःखी हो गया। अगर कोई हारने वाला होता ही नहीं तो जीतने वाले को कोई सुख नहीं था। तो यह जो हारने वाले का दुःख उसने सुख माना है यह केवल भ्रम है, केवल भूल है, केवल भटकाव है और कुछ नहीं। दूसरे क्षण वह दुःखी हो जायेगा।

इस प्रकार संसार में जहाँ कहीं भी हमें सुख दिख रहा है, वह सुख का भ्रम है। वास्तव में तो इस सुख के भ्रम ने ही तो उसको बेचारे को दुःखी किया है। उसको तिरस्कृत किया है, उसको अपमानित किया है। तो यह सुख थोड़ा ही है जो दूसरों के दुःख का कारण हो। यह

सुख नहीं हो सकता। सुख उसी का नाम है जो सदा रहे, सबके लिये हो और सभी को सुख मिले उस सुख से। उस सुख से दूसरों को दुःख मिले तो वह सुख नहीं है। हम देखते हैं हमारे यहाँ और संसार भर में जो लोग त्यागी रहे, विरक्त महापुरुष रहे, जिनको भगवान के भजन का सुख मिल गया, ऐसे भगवत् भजन से सुख प्राप्त करने वाले लोगों से संसार में हमें सुख मिला। देखिये न आप सारे संसार में देखिये बुद्ध को, ईसा को, मोहम्मद को देखिये, यहाँ हजारों संत हुए शंकर और न जाने कितने वे खुद तो सुखी हुए ही हुए, उन्होंने अपने आस-पास चारों तरफ भी सुख की सुगन्ध फैलायी। उस सुख ने अनेक प्रकार के संतप्त प्राणियों को शांति प्रदान की और युगों-युगों तक उनकी वाणी से त्रिताप से तपे हुए जीवों को शांति मिल रही है। उसका नाम सुख है।

आप यह न समझें कि हम सभी उस तरह घर-बार सब छोड़कर बुद्ध की तरह साधु बन जायें, ईसा की तरह सूली पर चढ़ जायें, आचार्य शंकर की तरह सन्यासी हो जायें, हम ऐसा नहीं कह रहे हैं। हम तो यह कह रहे हैं कि प्रवृतियों से, संसार की ओर प्रवृति करने से प्राप्ति कुछ नहीं होती है, जो प्राप्ति होती है वह भी भ्रम है। इसलिये प्राप्ति और अप्राप्ति में सम रहना सीखो। यह सम रहना बहुत उच्च कोटि की अवस्था है। यह समत्व योग है। भगवान् श्रीकृष्ण ने व्यवहार में जो परमार्थ की कला बतायी है, वह यही है-

योगस्थः कुरु कर्माणि, संगत्यक्त्वाधनंजय ।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ॥

"हे धनंजय! तू आसक्ति का त्याग करके सिद्धि-असद्धि में सम होकर योग में स्थित हुआ कर्मो को कर; क्योंकि समत्व ही योग कहा जाता है।"

प्रारम्भ में भी सम रहो, प्रवृति के पहले भी यह सोचलो कि जो तुम करने जा रहे हो भले ही करो अच्छा है, उससे दूसरों का हित होता हो, किसी की भलाई होती हो और तुम्हारे पास करने की शक्ति-सामर्थ्य हो तो करो, पर व्यक्तिगत रूप से तुमको इसमें से कुछ नहीं मिलना है। संसार के सभी व्यक्तियों वस्तुओं के साथ जो सम्बन्ध है उन वस्तुओं का सदुपयोग तथा उन व्यक्तियों की सेवा करने के लिये है, उनसे कुछ भी लेने के लिये नहीं है। यह बात समझने की है विवेक के द्वारा।

जैसे हमारा सम्बन्ध शरीर से है और अन्य वस्तुओं से है, व्यक्तियों से है, पिता से, पुत्र से, भाई से, अन्यान्य से, देशवासियों से सम्बन्ध है। यह जो व्यक्तियों से सम्बन्ध है यह उन-उन व्यक्तियों की सेवा करने के लिये है। उनसे आपको कुछ मिलना नहीं है। उनसे लेने की आशा रखोगे तो फँस जाओगे। और इन वस्तुओं के साथ, शरीरादि जो वस्तुएँ हैं, इनके साथ जो आपका सम्बन्ध है वो केवल इनका सदुपयोग करने के लिये है। आपके पास पुस्तक है तो इस पुस्तक का सदुपयोग है इसे पढ़ें, इसे सुरक्षित रखें। आपके पास माईक है तो

माईक का आप पूरा का पूरा सदुपयोग कीजिये, पर आप माईक से, पुस्तक से और इस पोथी से ममता करेंगें तो फँस जायेंगे। आप इससे ममता या आसक्ति रखेंगे तो फँस जायेंगे।

जिस तरह व्यक्तियों के सम्बन्ध से, व्यक्तियों की सेवा करनी है, उसी तरह से वस्तुओं के सम्बन्ध से वस्तुओं का सदुपयोग करना है। व्यक्तियों से, वस्तुओं से कोई कामना नहीं करनी है। उनसे कामना न होने से उनसे मोह नहीं होगा, ऐसे ही अगर इनमें हमारी आसक्ति नहीं हुई तो इनमें ममता भी नहीं होगी और जो मोह और ममता दोनों हमारे जीवन में नहीं रहेंगे तो उस समय क्या होगा, जो शेष रहेगा वह क्या होगा? वह समता होगी। मोह और ममता का अंत होते ही समता का उदय होता है। इस समता में आने के बाद वास्तव में मनुष्य, मनुष्य बनता है। उसके अन्दर वह दिव्य ज्ञान प्रकट होता है जो मानवता के लिये आवश्यक है। उस ज्ञान का अवतरण होता है। इस समता में आने से पहले बाहर से सीखा हुआ ज्ञान जीवन में उतरता नहीं है।

इसलिये सब प्रकार के साधनों को भजन मानो और उनसे जीवन में समता आनी चाहिये। अभी आपको हम कहें कि आप नाम जप करो, भजन करो, दो घंटा ऐसे प्राणायाम करो, ऐसे जप करो, इस तरह ध्यान करो तो ये जो साधन हैं, इसमें से किसी भी साधन को आप घंटा-दो घंटा कर पाओगे, तीन घंटा कर पाओगे। फिर आपका

इक्कीस घंटे असाधन चलेगा। तो 21 घंटे असाधन और तीन घंटे साधन। तो साधन कम हुआ और असाधन अधिक हुआ। इसलिये सफलता नहीं मिलेगी। तो हम लोग चाहते हैं कि हमारा सम्पूर्ण जीवन ही साधन बन जाये। जो कुछ हम करते हैं, जो सोचते हैं, जो चलते हैं वह सब साधन बन जाये। वह सब साधन बन सकता है और उस सबको, अपने समस्त जीवन को साधन बनाने का यह सुअवसर यह गुरु पूर्णमासी है।

आज हम यह निर्णय करें– अपने प्राप्त ज्ञान के प्रकाश में, अपनी बुद्धि रूपी गुफा में विराजमान गुरु महाराज के मार्गदर्शन में कि हमें जो कुछ मिला है, वह हमारे लिये नहीं है और इससे हमें कुछ मिलने वाला भी नहीं है। यह हमें ईश्वर से अथवा जगत से मिला है, उनका है, उनके लिये है और ईमानदारी पूर्वक उनके काम में इसको लगा देना है व बदले में कुछ नहीं लेना है। जितना अपने पास समय है, जो समझ है, जो शक्ति है वह सारा का सारा उन्हीं के लिये करो, दूसरों के लिये करो। यह शरीर भी, परिवार भी, समाज भी, राष्ट्र भी यह सब दूसरा है। यह शरीर भी 'मैं' नहीं है, यह तो विवेक हमें पहले ही समझा रहा है। यह समझे बिना तो हम आगे चल ही नहीं सकते। धर्म की पहली सीढ़ी है कि शरीर से अपने को अलग समझना। शरीर को नाशवान और अपने को अविनाशी समझना। तभी हम धर्मपर चल पायेंगें। एक बार पुनः आप सभी को जय गोमाता, जय गोपाल!

।। श्री सुरभ्यै नमः।।

5

राष्ट्रव्यापी रचनात्मक गोसेवा महाअभियान

गीता जयन्ती के ज्ञानमय पर्व पर आयोजित नवम कामधेनु कल्याण महोत्सव एवं संत समागम का शुभारम्भ हो चुका है। परम पूज्य सन्तवृन्दों के चरणों में प्रणाम। उपस्थित कर्तव्य परायण गोभक्त सज्जनों, माताओं, बहिनों एवं बालकों, आप सभी का सादर अभिवादन! जय गोमाता! जय गोपाल।

आज श्रीमद्भगवद् गीताजी का अवतरण हुआ था। श्रीमद्भगवद गीता ज्ञानयोग, भक्तियोग एवं कर्मयोग का प्रकाश फैलाने वाली आध्यात्मिक विज्ञान की खान है। अतः आज के इस मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी का दिन ज्ञानमय पर्व माना जाता है। क्योंकि करोड़ों वर्षों की सृष्टि के इतिहास में प्रथम बार युद्ध के प्रांगण में सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याणार्थ गीताजी का प्राकट्य

हुआ था। श्रीमद्भगवद् गीता के उपदेश देश, काल और परिस्थितियों की सीमाओं से ऊपर हैं। इस दृष्टि से आज का मानव भाग्यशाली है कि उनको अपनी चेतना का सम्पूर्ण विकास करने के लिए श्रीमद्भगवद् गीताजी जैसा दिव्य ग्रंथ प्राप्त हुआ है।

हम आपको नियम पूर्वक श्रीगीताजी का पाठ एवं अध्ययन करते हुए उनकी गहराईयों में पहुँकर अपने उद्धार की सामग्री गीता ज्ञान भण्डार से प्राप्त करने से वंचित नहीं रहना चाहिए। आप भले ही कम पढ़े लिखे हो, आपको केवल अक्षर ज्ञान ही हो तो भी आप गीताजी का पाठ करके उनकी कृपा प्राप्त कर सकते हैं। क्योंकि हिन्दूधर्म के श्रीमद्भगवद्गीता व श्रीरामचरितमानस दोनों ही प्रासादिक ग्रंथ हैं। इन महान ग्रंथों का श्रद्धापूर्वक पाठ एवं अध्ययन करने मात्र से श्रद्धालु के हृदय में ज्ञान एवं भक्ति का प्रकाश फैलने लग जाता है। यह पूज्य सद्ग्रन्थों की महिमा है।

हमने सन्तों से एक वृंन्दावन की घटना सुनी थी। चैतन्य महाप्रभु के समय की बात है। उस समय वृन्दावन में एक भक्त रहते थे। उनका नियम था कि प्रातःकाल श्रीयुमनाजी के किनारे बैठकर दिन भर गीताजी का पाठ करना। एक दिन श्रीचैतन्य महाप्रभु के किसी अनुचर ने उनके पास बैठकर गीता का पाठ सुना। वो श्रद्धालु भक्त एकदम अशुद्ध पाठ करते हुए रोमान्चित होकर अपने नेत्रों में अश्रुधारा बहा रहे थे। वह समझ नहीं पाये

कि क्या हो रहा है। उन्होंने श्रीचैतन्य महाप्रभुजी के पास आकर निवेदन किया कि श्रीयुमनाजी के किनारे एक भक्त गीताजी का अशुद्ध पाठ करते हुए रोमांचित होकर आँसू बहा रहा है। इसका अर्थ समझे बिना भाव कैसे आ सकता है। भगवन! मेरी शंका का समाधान कीजिए।

महाप्रभुजी ने कहा चलो उनसे ही पूछते हैं। उस गीता पाठ परायण श्रद्धालु को बुलाकर पूछा गया कि आप श्रीगीताजी को अशुद्ध पढ़ते हैं। आपको संस्कृत समझ में आती है क्या? तो उसने कहा कि समझ में तो कुछ नहीं आता। पढ़ता हूँ यह भी सुना हुआ पढ़ता हूँ। ठीक तरह से देखकर भी नहीं पढ़ सकता। जैसे ही मैं श्रीमद्भगवद् गीता हाथ में लेता हूँ तो मुझे वहाँ श्री कृष्ण एवं अर्जुन दिखते हैं। कभी अर्जुन भगवान से प्रश्न कर रहे हैं, कभी श्री कृष्ण उनको उपदेश दे रहे हैं। भगवानश्री को वक्ता एवं श्रीअर्जुनजी को श्रोता की मुद्रा में जब मैं देखता हूँ तो मेरे को रोमांच हो जाता है। मुझे फिर कोई पता नहीं रहता।

वह श्रद्धा से गीताजी का पाठ करता था। हिन्दु ध र्म की दृष्टि से गीता और रामायण ये प्रासादिक ग्रन्थ हैं। श्रद्धा से उनका पाठ करने से उनको प्रणाम करने से ज्ञान मिलता है। समझ मिलती है, भक्ति मिलती है, विवेक जगता है, सन्तों का सान्निध्य प्राप्त होता है। ये ग्रन्थ अपने आप में अनुपमेय ज्ञान, भक्ति को उदय

करके अपनी कृपा प्रदान करने वाले ग्रन्थ हैं। श्रीमदभगवद् गीताजी स्वयं श्रीभगवान गोविन्द के मुख की वाणी है।

अब देखिये जिसने गीता रूपी ज्ञान हमको दिया वे कहाँ से आये। गीताजी का ज्ञान तो गोविन्द ने दिया। पर गोविन्द कहाँ से आये। गोविन्द को इस पृथ्वी पर गो माताओं ने लाया था। वैतरणी एकादशी गाय से सम्बन्धित है। सतयुग में इस दिन गो का पूजन होता था। गोमाता को मीठा भण्डारा देकर उनकी प्रदक्षिणा करके उनसे आशीर्वाद लिया जाता था। धर्मशास्त्रों में लिखा है कि जीव मृत्यु के बाद दक्षिण की ओर यमपुरी में जाते हैं। वहाँ वैतरणी नाम की कीचड़, कीड़ों एवं जहर से भरी हुई एक नदी है। उस नदी को पार करने का कोई साधन नहीं है। वहाँ पुल नहीं है, नाव नहीं है, वहाँ वायुयान भी नहीं है। वायुयान का प्रवेश ही नहीं है। वहाँ आपके साथ स्थूल शरीर भी नहीं है। फिर भी आपको पार जाना है। तो वहाँ गोमाता पार करती है ऐसी हिन्दु धर्मशास्त्रों की मान्यता है। इस कारण इस एकादशी को गोमाता की सेवा पूजा एवं आराधना करने से गोमाता उस जीवात्मा को वैतरणी पार कराती है। यह परम्परा सनातन हिन्दुओं के यहाँ सतयुग से चली आ रही है।

आज के दिन गाय की सेवा, पूजा एवं उपासना करने से मोक्ष होता है। अगर यह पूछा जाय की किसका मोक्ष होता है? तो पापों, अपराधों, क्लेशों एवं शरीर सहित सभी प्रकार के बन्धनों से जो मुक्त होता है उसी

का मोक्ष होता है। मोक्ष के लिये किसकी जरूरत पड़ी, ज्ञान की। गाय ने ही भगवान श्रीगोविन्द को पृथ्वी पर बुलाकर श्रीगीता रूपी ज्ञान प्रकट कराया। वही आज का दिन यह एकादशी है। गोविन्द को लाना और श्रीगीता रूपी ज्ञान पृथ्वीवासियों को देना इसके पीछे महान कारक पूज्या गोमाता ही है।

इस शताब्दी में भगवद्गीता को जन-जन के मन एवं मस्तिष्क में पहुँचाने का एक अद्वितीय काम जिस संस्था ने किया है उनको आज याद किये बिना नहीं रह सकते। उनका इस देश और समाज पर बहुत बड़ा उपकार है। जिसने श्रीभगवद्गीता एवं गीता अनुवादित साहित्य सस्ते-से-सस्ते मूल्य पर जन-जन तक पहुँचाया वह है गीताप्रेस गोरखपुर।

गीताप्रेस के संस्थापक श्रद्धेय सेठजी श्रीजयदयालजी गोयन्दका, उनके साथी भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्धार और इस प्रेस को अपने जीवनजल से सींचने वाले महान संत गोलोकवासी श्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराज उनको भी हम आज के दिन स्मरण किये बिना नहीं रह सकते। जिन्होंने सनातन धर्म का बहुत बड़ा उपकार किया है। साथ में मत, पंथ, सम्प्रदाय आदि सबसे ऊपर उठकर शास्त्र प्रमाणिक संतजन अनुभूत सत्संग की बात समाज के सामने रखी उसको ग्रहण करे या न करे, यह पढ़ने व सुनने वालों पर निर्भर है। परन्तु उन्होंने तो बड़ी ईमानदारी से श्रीमद्भगवद् गीता को स्वयं के जीवन में

उतारा और सरलतम शब्दों द्वारा समझाने का प्रयास किया है। गीताप्रेस के माध्यम से श्रीमदभगवद्गीताजी और श्रीरामचरितमानस को घर-घर तक पहुँचाया है। ऐसे महापुरुषों का हम नमन पूर्वक केवल स्मरण ही कर सकते हैं, हम गीताप्रेस द्वारा प्रकाशित साहित्य का पठन-पाठन करें और जीवन में उतारें यही उनको आज के दिन सच्ची श्रद्धांजली है।

आज हम पांच सहस्त्राब्दियों में श्रीव्यासजी के बाद एकमात्र अद्वितीय सार्वभौम क्रान्ति दृष्टा भगवद्प्राप्त महापुरुष गोलोकवासी मानव सेवा संघ के संस्थापक श्रद्धेय स्वामी श्रीशरणानन्दजी महाराज को हृदय से नमस्कार पूर्वक श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। जिनकी प्रेरणा से उनके अन्तरंग सखा एवं हमारे गुरुमित्र गोलोकवासी श्रद्धेय श्रीहरिनाथजी महाराज जिनके करकमलों द्वारा श्रीगोधाम महातीर्थ की स्थापना हुई। उस महापुरुष के चरणों में आज हम हृदय से श्रद्धासुमन समिर्पत करते हैं।

मानव सेवा संघ के संस्थापक ब्रह्मलीन स्वामी श्रीशरणानन्दजी महाराज जिन्होंने मानव सेवा संघ की स्थापना भी गीता जयन्ती के दिन ही की थी। मानव सेवा संघ का जो साहित्य है वह भी श्रीमद्भगवद् गीता की तरह परमेश्वर की अनुपम और अद्वितीय देन है। श्रद्धेय स्वामी शरणानन्दजी महाराज की वाणी केवल हिन्दुओं के लिये ही नहीं अपितु सम्पूर्ण मानव जाति के लिए अनन्त का अद्वितीय उपहार है। इस महापुरुष की

वाणी देश, काल और परिस्थितियों से परे मानव को नित्य जीवन, चिन्मय जीवन एवं आनन्दमय जीवन से अभिन्न करने में समर्थ है। ऐसे संत अमर हैं, संत की वाणी अमर है। संतवाणी से मानव जाति को अमरता का संन्देश युगों-युगों तक मिलता रहेगा।

ऐसे महापुरुष के अन्तरंग सखा जीवन मुक्त ब्रह्मनिष्ठ पूज्यपाद गोलोकवासी बाबा हरिनाथजी महाराज 1992 में हमारे साथ आनन्दवन की इस भूमि पर पधारे थे। हम 40 दिन तक इस आनन्दवन पथमेड़ा के जंगल में रूके थे। उस समय बाबाश्री के मन में इस स्थान पर गोरक्षा के महान उद्देश्य की सिद्धि के लिए एक आश्रम स्थापित करने का संकल्प उदय हुआ। बाबाश्री ने हमको बताया कि यहाँ पर ध्वज लगाकर गोधाम महातीर्थ की पुनर्स्थापना करनी है। हमारे मना करने पर बाबाश्री ने अपने 40 दिनों की साधना का अनुभव एवं इस भूमि की महिमा बताई जो गोपनीय होने से कहनी या लिखनी सम्भव नहीं है। परन्तु इतना कह सकते हैं कि गीताप्रेस, मानव सेवा संघ और श्रीगोधाम महातीर्थ इन तीनों संस्थाओं के पीछे उपरोक्त महापुरुषों का सत्संकल्प सक्रिय है। इन सभी महापुरुषों के स्मरण और चरणों में श्रद्धान्जली का एक मात्र साधन हमारे पास यह है कि हम गीता को समझें और गाय की भक्ति को धारण करें।

बीसवीं सदी में सम्पूर्ण भारत के हिन्दुओं को गाय की सेवा, गाय की रक्षा, गाय का महत्व समझाने के लिए

राष्ट्रव्यापी आन्दोलन का जिन्होंने सूत्रपात किया, धर्मसम्राट स्वामी करपात्रीजी महाराज को भी याद किये बिना नहीं रह सकते। इस सदी में उन्हीं की प्रेरणा और प्रयासों से भारतीय जनमानस में गोभक्ति के भाव आज विद्यमान हैं। उनके साथ इस देश के कितने ही अलग-अलग पंथों, मतों और सम्प्रदायों के आचार्य थे। जिसमें चारों पीठों के शंकराचार्य, सभी वैष्णवाचार्य और सिक्ख, जैन, बुद्ध आदि मतानुयायी जो गाय के प्रतिश्रद्धा रखने वाले और अहिंसा में विश्वास रखने वाली जितनी उपासना पद्धतियाँ हैं, उन सभी महापुरुषों को और उनमें जितने भी गोरक्षा के निमित्त 1966 में दिल्ली पहुँचे थे उनमें से जो देश की सत्ता चलाने वालों की दुर्बुद्धि एवं अहंकार से शासन की गोलियों से जिनका गोरक्षा में बलिदान हुआ था उन सभी संत एवं गोभक्त आत्माओं को हम हृदय से श्रद्धांजलि दिये बिना नहीं रह सकते। इन सबको याद करने के बाद आप समझ गये होंगे कि श्रीगोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के आयोजन और इनके उद्देश्य क्या हो सकते हैं?

आपको पता होगा जिस महापुरुष का मैंने नाम लिया, जिन्होंने इसकी स्थापना की वे कपड़ा भी नहीं पहनते थे। एक लंगोटी पहनते थे। उनके पास कुछ नहीं था और उन्होंने एक भी शिष्य नहीं बनाया था और न ही उनके पास कोई सामान था। इसके अतिरिक्त भी हम और हमारे साथी जितने लोग आपको दिख रहे हैं इस कार्य में लगे हुए हैं इनमें भी किसी में कोई ऐसी योग्यता,

कोई ऐसा सामर्थ्य, कोई ऐसी सिद्धि, कोई ऐसी समझ नहीं है फिर भी इतने महान कार्य को होता हुआ आप देख रहे है। अगले चार दिनों तक देखेंगे इस कार्यक्रम को, इस संस्था को, इस संस्था के स्वरूप को और आप सभी को एकत्रित करने के उद्देश्य को सुनेंगे, समझेंगे तब पूरा विस्तार पूर्वक पता लगेगा कि वास्तव में श्रीगोधाम महातीर्थ की स्थापना एवं संचालन करने वाली शक्ति कौन है? राष्ट्रव्यापी रचनात्मक गोसेवा महाअभियान के सूत्रधार कौन है? तो यह कह सकते हैं कि श्रीगोधाम महातीर्थ-पथमेड़ा एवं राष्ट्रव्यापी रचनात्मक गोसेवा महाअभियान के पीछे एक ही शक्ति है, जिसका नाम पूज्या गोमाता है।

इस समय सम्पूर्ण देश में राष्ट्रव्यापी रचनात्मक गोसेवा महाअभियान अघोषित रूप से और असंगठित रूप से चल रहा है यह तो आप सबको दिखता ही होगा। पिछले पन्द्रह वर्षो से पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण चारों तरफ गो की महत्ता, गो की सत्ता, गो की उपादेयता, गो की उपयोगिता और गो की आवश्यकता पर देश भर में अनेक संगोष्ठियें, सभाएँ और सम्मेलन हो रहे हैं। आप कहेंगे सभाओं से, सम्मेलनों से और संगोष्ठियों से क्या मिलता है?

हम आपको अनुभव बताते हैं। हम भी आपके ही पक्ष के थे हमने पिछले पन्द्रह वर्षो में देखा कि इस तरह व्यवस्थित रूप से एक लक्ष्य से, एक ध्येय से गोमाता के

कार्य के लिए जहाँ–जहाँ भी सभाएँ, सेमीनार और सम्मेलन हुए उनके अद्‌भुत परिणाम आये। इन सभाओं का, सेमीनारों का शुभारम्भ 1999 में इसी दिन और इसी स्थान पर हुआ था। उस दिन से लेकर आज तक पूरे देश की सूचनाएँ मंगवा कर देखें कि देश में कितनी गोशालाएँ खुली, कितने गोसंवर्धन केन्द्रों की स्थापना हुई और कितने आदमी गोपालक बने, कितने स्थानों पर पंचगव्यों पर अनुसंधान हो रहे हैं? कितने स्थानों पर औषधियाँ बन रही हैं?

हम आपको बताते हैं इन पन्द्रह वर्षों में इस देश में कम से कम 5200 गोसंरक्षण केन्द्रों की स्थापना हुई और 1000 से अधिक स्थानों पर गोसंवर्धन हो रहा है, गायों की नस्लें तैयार की जा रही है। 100 से अधिक स्थानों पर पंचगव्यों पर अनुसंधान हो रहे हैं। उनकी औषधियाँ बन रही हैं। पूज्या गोमाता द्वारा प्राप्त गोउत्पादों पर नाना प्रकार के प्रयोग 100 से अधिक स्थानों पर शुरू हुए हैं। गोमूत्र अर्क का पेटेन्ट हुआ है। सब प्रकार के रोगाणुओं को नियन्त्रित करने की शक्ति गोमूत्र में पाई गई है।

भारत के 18 वैज्ञानिकों ने दो वर्ष तक अध्ययन करके जहाँ इनका पेटेन्ट होता है उन वैज्ञानिकों के साथ बैठकर और पूरे विश्व के चिकित्सा वैज्ञानिकों के साथ बैठकर यह सारी चीजें देखी कि आज तक जितनी रोगनिरोधक दवाईयाँ बनी हैं उन सबको मिलाकर जितनी शक्ति है उससे अधिक शक्ति अकेले गोमूत्र में है।

भारत वर्ष के चार प्रान्तों में कागजों पर ही सही पर गोरक्षा का कानून पारित हुआ है। 60 वर्षों में पहली बार भारत के सर्वोच्च न्यायलय ने सम्पूर्ण गोवंश संरक्षण को न्यायिक एवं वैधानिक बताया है और गोहत्या को अपराध कहा है। एक करोड़ के आस-पास भारतवासी गोपालक या गोव्रती बने यह इन पन्द्रह वर्षों का परिणाम है। हमने तो कम संख्या बतायी है। इनसे भी अधिक गोसेवा का कार्य हुआ है।

आज असंगठित एवं अघोषित यह कार्य हो रहा है इसके पीछे कौन है? आप बताइये कि पन्द्रह सालों से इस आन्दोलन को कौन चला रहा है? कौनसी पार्टी, कौनसा संगठन, कौनसा सम्प्रदाय, कौनसा व्यक्ति? अपने-अपने स्थानों पर करते होगें, पर राष्ट्रीय स्तर पर केवल भाषणों से नहीं क्रियात्मक रूप से कौन चला रहा है? प्रवचन तो हम घूमकर पूरे देश में दे सकते हैं, पर प्रत्यक्ष में इस कार्य को कौन चला रहा है?

सब असंगठित है, अपने-अपने क्षेत्र में स्वप्रेरित लोग लगे हैं और कार्य कर रहे हैं। भौतिक भाषा में स्वप्रेरित कहेंगे वास्तव में तो अन्तःप्रेरित हैं और यह प्रेरणा कौन देता है? अब हम कहें कि यहाँ जगद्गुरुजी बिराजे हैं और सारे धर्माचार्य बिराजे हैं फिर भी हमें प्रतीक रूप में प्रत्यक्ष आपको बताना होगा कि यह गोसेवा अभियान पूज्य गोमाता ही चला रही है।

आज तक जितने भी आन्दोलन हुए वे आवेशात्मक

थे, अब जो हो रहा है यह रचनात्मक है। गायका संवर्धन हो रहा है। गाय के गव्यों पर अनुसन्धान हो रहा है। गोऊर्जा की खोज हो रही है। चिकित्सा के लिए गव्यों का विनियोग हो रहा है। यह राष्ट्रव्यापी रचनात्मक गोसेवा महाअभियान चल रहा है, इसके पीछे प्रत्यक्ष रूप से किसी का अगर नाम लिया जाय, किसी की तरफ हाथ किया जाय तो गाय स्वयं इस आन्दोलन को करवा रही है। ये ही इस आन्दोलन की अध्यक्ष हैं, ये ही प्रेरक हैं और हम सभी राष्ट्र के गोभक्तों के लिए, गोभामाशाहों के लिए, गोसेवकों की नेतृत्वकर्त्ता भी यही है। यह केवल गाय के लिए है।

गोमाता की शरण में गये बिना केवल हिन्दू और हिन्दुस्तान ही नहीं सम्पूर्ण विश्वमानव का कल्याण नहीं हो सकता। सारा ब्रह्माण्ड विष से भर चुका है। प्रकृति संतुलन खो चुकी है। पर्यावरण सारा दूषित हो गया है। मानव का मन मस्तिष्क और शरीर विकृत एवं अनेक रोगों से ग्रस्त हो गया है। ये सारे संकट दिख रहे हैं। इनका समाधान गाय के अतिरिक्त तीनों लोकों में कहीं नहीं है और यह बात मानव जाति जितनी जल्दी समझे इतना उसका अधिक भला होगा। शीघ्र भला होगा, शीघ्र समझे, शीघ्र अपने जीवन में उतारे। मानव जाति के कर्णधार इन बातों को क्रियान्वित करें।

आपने कहा, आपके लोगों ने कहा कि संसार में हमने इतना विष फैला दिया है कि आज हम विष

फैलाना बन्द भी कर देंगे तो भी तीस वर्षों बाद इसका परिणाम मानव जाति एवं अन्य प्राणी जगत को भोगना पड़ेगा। आगे न फैलाये तो, परन्तु फैलाना बन्द नहीं कर सकते। फैलाये हुए विष को शमन करने की शक्ति और किसी में नहीं केवल गाय में है। आज तक विश्व मानव ने जितना जहर ब्रह्माण्ड में छोड़ा है गाय के अतिरिक्त कोई भी उसको मिटा नहीं सकता। जहर का परिणाम पुनः प्राणीजगत को भोगना पड़ेगा। पानी के माध्यम से, हवा के माध्यम से, आहार के माध्यम से सारे प्राणी उस विष को खायेंगे। अनेक प्रकार के रोगों से ग्रस्त होकर तड़फेंगे। नारकीय यातना भोगेंगे।

उस विष का शमन भी गोमाता के माध्यम से संभव है। वैदिक कामधेनु विज्ञान की पद्धति से इतनी मात्रा में कामधेनु घृत का ब्रह्माण्ड में विसर्जन किया जाय तो ब्रह्माण्ड में फैले हुए विष का शमन संभव है। मूल बात यही है कि मानव जाति सहित जीव जगत के भविष्य को बचाने का आधार केवल गाय है। उस गाय की महत्ता को लोग समझें, उनकी आवश्यकताओं को देखें और उनके उपयोग के विज्ञान को जाने इसलिए ये कार्यक्रम होते हैं। इन कार्यक्रमों का यही उद्देश्य है और इनके परिणाम आ रहे हैं। ये कार्यक्रम गोप्रेरित हैं।

आज का यह कार्यक्रम चार बिन्दुओं को लेकर है, आज का विषय इसको हम कहेंगे, सुनेंगे और समाज के सामने रखेंगे। जिनको सत्य लगे वह स्वीकार करे। पर

जो बात है वह आज हम मंच से हमारे सन्तों, धर्माचार्यों हम सभी को बतायेंगे। चार बातें हैं आज की। पहली बात है कि भारतीय गोवंश जिनको शास्त्रों ने पूज्य, आराध्य, उपास्य माना है। वह गोवंश इस समय जिन पीड़ाओं को भोग रहा है उसे कैसे उबारा जाय अर्थात गो संरक्षण कैसे हो?

गाय का संरक्षण कौन करे? मान लिया जाय कि आप हमको कहोगे कि गाय का आप पर बहुत बड़ा उपकार है। गाय ने आपको सब कुछ दिया है अध्यात्म दिया है, धर्म दिया है, संस्कृति दी है, स्वास्थ्य दिया है, समृद्धि दी, समझ दी। गाय का बहुत उपकार है। शास्त्रों का प्रमाण है। आपके पूर्वजों के जीवन का प्रमाण है। हम लोग गोसेवा में लगे हैं, हमारे जीवन का अनुभव है ऐसा कहकर आप हमें यह बता देंगे कि गोसेवा करनी चाहिए, चलो करनी चाहिए, पर कौने करे? करने वाला तो होना चाहिए।

आप कहो कि केवल हिन्दू ही करे तो ऐसा क्यों? गाय ने अपने उपकार से सबका उद्धार किया है, गाय कोई भेद करती है क्या कि यह हिन्दू है, यह मुस्लिम है, यह सिक्ख है, यह ईसाई है? गाय का कोई मजहब है क्या? गाय में कोई पंथ है क्या? गाय में से ही सारे दर्शन निकलते हैं और गाय में जाकर सभी एक हो जाते हैं, समाहित हो जाते हैं। जैसे सारी नदियाँ सागर में जाकर मिलती हैं ऐसे ही सारी उपासना पद्धतियाँ, साध

ानाएँ और सब प्रकार की सामुदायिक चेतनाओं के विकास का उद्गम स्थल भी और उनका संगम स्थल भी गाय ही है। तो गोसेवा हेतु केवल हिन्दुओं को क्यों कहते हैं? शास्त्र तो यह कहते हैं।

यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजंगमम् ।
तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम् ।।

अर्थात 'जिस गाय से यह स्थावर जंगम अखिल विश्व व्याप्त है, उस भूत और भविष्य की जननी गो को मैं सिर झुकाकर प्रणाम करता हूँ।

गाय में पूरा जगत व्याप्त है तो फिर हमारे लिये क्यों? पृथ्वी पर कई मजहब हैं, कई जातियाँ हैं, पर भारतवासियों के लिये ही क्यों? जो दूसरे देश हैं उनको भी जीना है। सभी स्वास्थ्य चाहते हैं, रोगमुक्त रहना चाहते हैं, सब शिक्षित होना चाहते हैं। समस्त पृथ्वीवासियों की यह प्रथम इच्छा है। यह इच्छा गाय से ही पूरी होती है। आप हमको ही क्यों कहते हैं? हिन्दूओं को ही, सनातन धर्मावलम्बियों को ही क्यों कहते हो? यह हमारा पुनः आप से प्रश्न होगा कि गोसंरक्षण कौन करे?

गोमाता सम्पूर्ण प्राणीजगत तथा सम्पूर्ण प्रकृति को सन्तुलित एवं जीवनी शक्ति प्रदान करने वाला एक आधार है। गोमाता जीवनी शक्ति की चलती फिरती टकसाल है। अगर गाय की रक्षा नहीं हुई तो सृष्टि में भयंकर उत्पात मच जायेगा।

गाय, पृथ्वी व प्रकृति एक ही है और अन्योन्याश्रित

है। एक के बिना दूसरी नहीं रह सकती। यदि गोवंश समाप्त हो गया तो निश्चित रूप से यह पृथ्वी और प्रकृति भी अपना अस्तित्व खो देगी जिसकी चेतावनी वर्तमान के प्रकृति व पर्यावरण, वैज्ञानिक आपको दे रहे हैं। धर्म, अध्यात्म, आयुर्वेद, दर्शन व इतिहास की दृष्टि से गोरक्षा का कार्य सनातन हिन्दू के लिए निज धर्म एवं ईश्वर भक्ति का अनुष्ठान है। गोरक्षा के इतने महत्वपूर्ण कार्य को करने वाले कौन हो और किस तरह से किया जाय? गोसंरक्षण करना तो है पर कौन करे? इसके लिए कोई-न-कोई तो जिम्मेदारी वाले चाहिये?

इतनी सारी गायें हैं उनको देखना, संभालना करे कौन? लोगों के पास समय तो है नहीं। ज्यादा-से-ज्यादा जोर करें तो दान दे देते हैं। जो लोग बिल्कुल समय नहीं निकाल सकते हैं उनसे हम कैसे अपेक्षा करेंगे?

कार्य हो सकता है। असंभव नहीं है पर वास्तव में गोरक्षा जैसे महत्वपूर्ण कार्य को करने के लिए कोई एक व्यक्ति, एक जाति, एक सम्प्रदाय, एक वर्ग, एक संस्था और सरकार सक्षम नहीं हैं, इसके लिए तीन शक्तियाँ चाहिए। गोसंरक्षण के लिए समाज भी आगे आये, सरकार भी आगे आये और सन्त भी आगे आये।

संत समाज में जागृति करें, समाज में जो लोग उदार हैं, जिनके पास समय है वे इस कार्य में लगे। सरकार जिस तरह आदमी की सहायता करती है, वैसे गाय की भी करे। गाय को समाज से अलग करके नहीं

देखे। गाय तो आदमी से भी पहले सरकारी सहयता की अधिकारिणी है। ये तीनों शक्तियाँ चाहे तो यह हो सकता है और यह ऐसे ही होगा।

धर्मतंत्र, समाजतंत्र और शासनतंत्र इन तीनों में से कोई एक करना चाहेगा तो नहीं कर सकेगा। ऐसा प्रयोग पहले हो चुका है। इसलिए तीनों को तैयार करना पड़ेगा। तीनों को संयुक्त पूज्य संत ही कर सकते हैं। धर्मतंत्र, समाजतंत्र और राजतंत्र को गोरक्षणार्थ संगठित करके प्रेरित करने हेतु ही राष्ट्रीय कामधेनु कल्याण महोत्सव एवं अखिल भारतीय गो संत समागम का प्रतिवर्ष आयोजन होता है। अतः कामधेनु कल्याण मंच आने वाले समय में गोसंरक्षण, गोपालन, गोसंवर्धन और गोउत्पादों के विनियोग पर समाज को विस्तृत प्रकाश प्रदान करता हुआ इस अपेक्षा के साथ प्रारम्भ हुआ है। इस विषय में हम परम पूज्य शंकराचार्यों एवं देश-विदेश में विराजमान धर्माचार्यों से मार्गदर्शन चाहेंगे। वे कृपापूर्वक हमारा और राष्ट्रवासियों का उचित मार्गदर्शन करावें।

जय गोमाता ! जय गोपाल !

❁❁❁❁❁

।। श्री सुरभ्यै नमः।।

6

पथमेड़ा एक गो-आन्दोलन

सर्वेश्वर सच्चिदानंदघन परमात्मा सबके अन्तर में विराजमान हैं, उनको हम नमस्कार पूर्वक स्मरण करते हैं। पूज्य संतवृन्द, गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के आयोजन को गति देने वाले युवा ब्रह्मचारी एवं गोधाम महातीर्थ की स्थापना की नींव का काम करने वाले सभी धर्मनिष्ठ सज्जनों, बन्धुओं आप सभी का सादर अभिवादन व जय गोमाता ! जय गोपाल !

गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा का जो कार्य है, जिससे आप सभी जुड़े हुए हैं यह कोई संस्था नहीं है। वह एक गोपालन लोक संस्कृति का आन्दोलन है। इस तीर्थ के पास ऐसी कोई सीमा नहीं है कि निश्चित संख्या में गोवंश को रखना एवं इतना ही कार्य करना। इसको लाखों गायें भी रखनी पड़े और करोड़ों गायें भी रखनी

पड़े। राजस्थान में ही नहीं, देश में कहीं भी गो का काम हो तो करना पड़े। इसका कोई कोष स्थापित नहीं हो सकता, इसका कोष तो गोभक्तों के हृदय में स्थापित होगा। हम लोग प्रयास करते हैं कि भारतवासियों के हृदय में गायें प्रवेश करें, वही गोरक्षा का वास्तविक कोष होगा।

गाय भारतवासियों के हृदय में पुनः किस तरह से प्रवेश करे? यह उपाय वेदवाणी, गुरुवाणी और संतवाणी से अनुमोदित निज विवेक के प्रकाश से प्रकाशित ऐसी व्यवस्थाएँ बनें तो हो सकता है। जैसे कि भावनात्मक रूप से गोसंरक्षण का कार्य हो रहा है। गोवंश भारत वर्ष के कोने-कोने में उपेक्षित एवं प्रताड़ित है। इन गायों को संरक्षण केन्द्रों में आश्रय देना होगा।

मान लिया जाय कि भारत में हिन्दुओं की संख्या 50 करोड़ है जिसमें बीस करोड़ हिन्दू तो ऐसे हो जो गाय को परिवार का सदस्य माने। वे चाहें सुन्दर वातनुकुलित घर बनाकर प्रतिदिन अच्छा से अच्छा घास-दाना आदि दे सकते हैं। फिर भी 13 करोड़ गायें क्यों नहीं बच पा रही है? क्यों प्रताड़ित हैं, क्यों दुःखी हैं? उनका वंश क्यों कत्लखाने जा रहा है? क्योंकि हिन्दूओं के हृदय से गाय निकल गई है। केवल वाणी में ही रही है। 10-12 साल पहले तो बिल्कुल भूल गये थे। हम लोग किसान थे बाद में व्यवसायी बन गये। वे भी और जो वास्तव में वैश्य थे वे भी गाय को भूल गये।

"कृषि गोरक्ष्य वाणिज्यम् वैश्य कर्म स्वभावजम्" वैश्य का स्वाभाविक कर्म खेती, गोरक्षा एवं व्यापार है। इस स्वाभाविक कर्म से वैश्य स्वाभाविक गति प्राप्त करता है, जो योगी करते हैं। हममें से अधिकतर लोग प्रकृति से परे भी कोई जीवन है ऐसा न तो समझते हैं और न उनका विश्वास है। पदार्थों से, परिस्थिति से पार भी जीवन है क्या? इस पर पूर्ण विश्वास हो जाता है उसी क्षण उसकी प्राप्ति भी हो जाती है। ऐसा विश्वास प्राप्त करने के लिए हमें शुद्ध और सात्विक बनना आवश्यक होगा। विश्वास हृदय की चीज है। हृदय निर्मल बनता है सात्विकता से और यह सात्विकता केवल और केवल गाय से ही मानव में आ सकती है।

सत्य, अहिंसा, दया और दान को धर्म कहा गया है। यह धर्म गाय से जन्मता है। गाय की सेवा करने और गव्यों का सेवन करने से मानव का शरीर स्वस्थ, हृदय पवित्र होता है और बुद्धि सात्विक बनती है। ऐसे पवित्र हृदय और सात्विक बुद्धि में सत्य के प्रति अनुराग, अहिंसा व दूसरों को पीड़ा न देने का भाव, पीड़ित प्राणी को देखकर हृदय द्रवित हो जाना और उस पीड़ा को मिटाने के लिए दान उत्सर्ग करना, इन चारों को मिलाकर धर्म कहा जाता है। धर्म के चार पाँव हैं। यह चार पाँवों वाला धर्म गाय का पुत्र है।

हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि कलियुग में धर्म एक पाँव पर रहेगा तीन पाँव नष्ट हो जायेंगे। एक दान

रूपी पाँव रहा है। वह दिख भी रहा है कि लोग आज भी बड़ा दान कर रहे हैं। राजस्थान जैसा सूखा प्रदेश उसमें भी मारवाड़ और मारवाड़ में भी सांचोर सबसे पिछड़ा क्षेत्र है। यह उसका प्रमाण है कि भारतवासियों में इस समय भी दान का भाव विद्यमान है। प्रतिवर्ष 100-100 करोड़ का चारा गायों के लिए खरीदा जाता है। आप स्वयं द्रवित होकर दान करें। आप देखो, समझो फिर कहो कि मुझे क्या करना चाहिए। जब हम गोसेवा को कर्त्तव्य के रूप में स्वीकार करते हैं तो यह वास्तविक धर्म है।

कामधेनु कल्याण परिवार का अर्थ है कि देश व दुनिया में जितने भी लोग हैं वे सब कामधेनु कल्याण परिवार है। जाति, मत, सम्प्रदाय, पार्टी सब तरह के लोग इसमें हैं। यह कोई संस्था या सम्प्रदाय नहीं है। इसका किसी जाति से, संगठन से अर्थात् किसी एक से सम्बन्ध नहीं हैं। यह पूरे के पूरे राष्ट्र का, भूत, वर्तमान और भविष्य का संकल्प है, वही मूर्तिमान होकर सक्रिय हो रहा है। इस जगह पर आने से नई-नई प्रेरणाएँ मिलती हैं। नई-नई ऊर्जा मिलती हैं। यह परम सत्य है। जो यहाँ आयेगा उसको इसका अनुभव भी होगा। क्योंकि इसका महत्व भी है। यह पाँच हजार वर्ष पुरानी अति पवित्र गोपालन भूमि है।

दो सूत्र गोधाम पथमेड़ा ने दिये हैं- एक भावनात्मक व दूसरा रचनात्मक। भावात्मक सूत्र यह है कि आप

प्रतिदिन भोजन से पूर्व एवं व्यवसाय प्रारम्भ करने से पूर्व गोग्रास निकालें। यह गोग्रास दुःखी व प्रताड़ित गोवंश के लिए प्राण पोषण हेतु है। गाय को आप घर का सदस्य मानें। गाय को माँ की माँ समझकर उसके लिए आप अतिरिक्त मेहनत करें। अगर आप इसको जीवन में उतार सकते हैं तो आपको बहुत बड़ी सफलता मिलेगी।

दूसरा रचनात्मक सूत्र है गोव्रती बनने का। आप सभी गोव्रती बनें। घी तो आपके पास पहुँच ही रहा है और दूध भी शीघ्र ही आपके पास पहुँचेगा। आप सभी ने मकर संक्रान्ति के पर्व पर समय, अर्थ तथा भावनारूपी आहुति प्रदान करके अपने आपको श्रेय के मार्ग की ओर, सत्य के मार्ग की ओर, समृद्धि के मार्ग की ओर, शान्ति के मार्ग की ओर बढ़ाने का एक पवित्र और कल्याणकारी प्रयास किया है। हम आपको इसके लिये क्या साधुवाद दें, गोमाता स्वयं आपको आशीर्वाद प्रदान करेगी।

मुम्बईवासियों ने गोधाम पथमेड़ा के प्रारम्भ में नींव का काम किया है। पहली बार जब गोधाम की स्थापना की उस समय ढ़ाई-तीन लाख रुपये भेजे थे। उसके पहले कभी कोई चन्दा नहीं किया था। उससे ही इसकी स्थापना एवं संचालन हुआ। आप अपना हृदय बड़ा रखें । इस गोधाम पथमेड़ा की जो विराटता है उसको समझें, उसके अनुसार ही गौरवपूर्ण परस्पर व्यवहार हो। इसमें किसी तरह की संकीर्णताएँ जाति, पार्टी, सम्प्रदाय आदि न आये। गाय ही हमारे सामने है। गाय सबके लिए एक है। हम सभी के भावों में कोई अन्तर

नहीं है। भूमिकाओं में अन्तर है और वह होना स्वाभाविक है। इसलिए सज्जनों एक मत से, एक भाव से जब गाय की बात आवे तब अपने अहंकार और स्वार्थ से ऊपर उठ जायें और सब एक हो जायें। गाय की सेवा के लिये हमेशा तत्पर रहें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप जरुर ऊपर उठेंगे ।

इन्हीं भावनाओं के साथ आप सभी का एक बार पुनः सादर अभिवादन !

जय गोमाता, जय गोपाल।

❁❁❁❁❁

।। श्री सुरभ्यै नमः ।।

7

गाय की महत्ता एवं उपादेयता

सर्वेश्वर सच्चिदानंदघन परमात्मा, अन्तर्यामी रुप से सबके हृदय में विराजमान हैं। उनको हम नमस्कार पूर्वक स्मरण करते हैं और इस गोपुष्टि महायज्ञ में पधारे हुए पूज्य संतों, कर्तव्यपरायण धर्मनिष्ठ सज्जनों, माताओं, बहिनों, बालकों आप सभी का सादर अभिवादन। जय गोमाता ! जय गोपाल !

हमें कोई भाषण देना नहीं आता है। सज्जनों! हमारे बड़े भैया भगवान श्रीराम का यह ननिहाल है और लाला का ससुराल है। यह भूमि, यह प्रदेश, यह धरती पहले से ही महामहिमा से मंडित है। ऐसी महान पवित्र भूमि को हम सभी नमस्कार करते हैं कि यहाँ गोतीर्थ है। बाणासुर ने अपने आसुरी दम्भ में, अहंकार में, सत्ता और सामर्थ्य था तब उसने गो व ब्राह्मण विरोधी अनेक

अत्याचार किये थे। उनमें गायों की हत्या भी की थी। अन्त समय में भगवान से उसने कहा कि मुझे उस महापाप से मुक्ति कैसे मिलेगी? क्योंकि गोहत्या के पाप से तो मुक्त भगवान भी नहीं कर सकते हैं। तो भगवान ने कहा कि ठीक है भाई तेरी मुक्ति का साधन बताते हैं। साथ-साथ में आने वाले युगों में भूल से गोहत्या हो जाय उनका भी प्रायश्चित हो ऐसा वरदान भगवान शिव के अनन्य भक्त बाणासुर ने भगवान श्रीकृष्ण से मांगा और उन्होंने दिया।

आज भारतवर्ष में अनजाने में भी गोहत्या होने वालों का प्रायश्चित तो यहाँ होगा ही पर जानबूझ कर जो गोहत्या कर रहे हैं, करा रहे हैं, समर्थन कर रहे हैं, वाणी से, कलम से या मूक होकर ऐसे सभी गोघातकों का प्रायश्चित इसी जगह हो, ऐसी प्रार्थना हम सब लोग भगवान से करें कि ये सारे गोहत्यारे हैं या किसी कारण से उनके द्वारा गो हत्या हो रही है, जिसने कलम से ऐसा कानून बनाया वह भिक्षा मांगते-मांगते यहाँ पहुँचे और वह कलम यहाँ डालकर स्नान करके जायें। जिसने कुर्सी पर बैठकर ऐसा कानून बनाया वह कुर्सी को लेकर भिक्षा मांगते-मांगते यहाँ आवे और कुर्सी को यहाँ डालकर स्नान करके जायें।

वास्तव में आप देखेंगे तो इस समय भारत के शासक और भारत की प्रजा जो मत के अधिकार का प्रयोग करती है वे सारे-के-सारे गो हत्या के भागी हैं।

सारे गोहत्यारे हैं और उन सबको प्रायश्चित करना आवश्यक है। गोहत्या का प्रायश्चित गोरक्षा, गो की सेवा के बिना संभव नहीं है। जब तक भारतवासी, भारत के शासक गो की रक्षा, गो की सेवा पर ध्यान नहीं देंगे तब तक वे इस महापाप से मुक्त नहीं हो सकते। इस महापाप का दुष्परिणाम यह देश तथा देश का समाज भोग रहा है। यहाँ पर अनेक तरह के संसाधन मनुष्य की सुविधा के लिये मिले हैं। सड़के मिली हैं, संचार के साधन हुए हैं, बहुत सारी सुविधायें जो आठ दशक पहले हमारे पास नहीं थी वे सब आयी हैं, धन भी आया है, सामग्री भी आयी है, साधन भी आये हैं, पर गाय की हत्या से बहुत बड़ी हानि हुई है। बहुत बड़ा नुकसान हुआ है। आनेवाली सब वस्तुओं का मूल्य अगर आंका जाये और गोहत्या से जो क्षति भारत में और भारतीय समाज में हुई है उनकी तुलना की जाये तो लाभ नहीं बहुत बड़ी हानि हुई है।

इतना भंयकर नुकसान हुआ है सज्जनों! कि यहाँ से सब कुछ चला गया है। यहाँ से नैतिकता चली गयी, चरित्र चला गया, संयम चला गया, धैर्य चला गया, परोपकार चला गया, कृतज्ञता चली गयी, सदाचार चला गया, ईमानदारी चली गयी यह सब चला गया। इनका क्या मूल्य हो सकता है। करुणा चली गयी, दया चली गयी। क्या देख रहे हैं हम, किस युग में जी रहे हैं? क्या हो रहा है पैसों के लिये? अर्थ उपार्जन के लिये

भंयकर से भंयकर पाप इस समय हो रहे हैं। ये सब उस देश में हो रहे हैं जिस देश नें सारी दुनिया को दिशा और दर्शन दिया। जो देश सारे संसार का जगदगुरु माना जाता था। जो देश समृद्धि की दृष्टि से सोने की चिड़िया माना जाता था। उसी देश में ये भयंकर पाप हो रहे हैं और यह देश इस समय आध्यात्मिक और भौतिक दोनों ही दृष्टियों से कमजोर हो गया है।

जो जगत को ज्ञान देता था, जगत का गुरु था, आज वही देश दूसरे देशों से ज्ञान का आयात कर रहा है, जानकारी का आयात कर रहा है। जो देश संसार की 80 प्रतिशत मानव जाति के लिये अन्न, फल, औषधि और अन्यान्य जीवन निर्वाह की सामग्री को पूरी करता था वह देश पराश्रित हो गया है। जीवन निर्वाह की सामग्री बाहर से मंगवायी जा रही है।

ज्ञान की दृष्टि से और भौतिक समृद्धि की दृष्टि से यह जो दिवालियापन आया है इसके पीछे एक मात्र कारण यही है कि इस देश ने और देश के समाज ने पूज्या गोमाता और उसके वंश की उपेक्षा, तिरस्कार और उसके साथ अत्याचार किया है। जिस गाय ने करोड़ों-करोड़ों वर्षो से मानव जाति को सब कुछ दिया, मानव जीवन जीने की पद्धति, मानव जीवन जीने के संसाधन, निर्वाह की आवश्यक सामग्री आदि सब कुछ गाय ने ही हमें दिया है। उसी गाय को इतना तिरस्कारित किया? इतना अपमानित किया? इतना प्रताड़ित किया?

हम विचार करें, करोड़ों वर्षों से हमारा देश कृषि करता था, खेती करता था और हमारी खेती सोना उगलती थी। सोने उगलने का यह अर्थ नहीं है कि फसलों पर सोना लगता था। पूर्वाग्रह और दुराग्रह रहित होकर दस-बारह शताब्दियों पूर्व के इतिहास को ठीक तरह से देखें तो संसार के 80 प्रतिशत मनुष्यों के जीवन निर्वाह की सामग्री हमारे देश से जाती थी और उसके बदले में क्या मिलता था? पहली बात तो हमारे पूर्वज कुछ लेना ही नहीं चाहते थे। वे कहते थे कि आवश्यकता से अधिक जो उत्पादन है उस पर अधिकार उन्हीं लोगों का है जिनके पास यह सामग्री नहीं है। यह तुम्हारे अधिकार की चीज तुम्हें दी जाती है। इसके बदले में हमें कुछ नहीं चाहिए।

तो लेने वाले लोगों ने अपने ऊपर बहुत बड़ा दबाव समझा। वे सोचते रहे कि इन लोगों को हम क्या दें जिससे हमें लगे कि हम भी कुछ न कुछ काम आ गये। तो ऐसे बहुत से देशों में, बहुत से द्वीप हैं जहाँ कीमती धातुएँ और हीरा-जवारात आदि बहुतायत में हैं। ये लोग सामग्री लेकर भारत आये और कहा कि ये वस्तुएँ हमारे यहाँ होती है जो न तो हमारे खाने के काम आती है और न ही पहनने के काम की है। न औषधि के काम की है। हम इनका उपयोग करना भी नहीं जानते हैं पर बड़ी चमकीली और अच्छी हैं। हमारे पूर्वजों ने कहा कि देखो हम बदले में तो कुछ नहीं लेगें पर आप अपनी प्रसन्नता

के लिये भेंट के रुप में देना चाहते हो तो हमें इसका उपयोग करना भी आता है।

संसार के अन्दर ऐसा कोई पदार्थ नहीं, कोई वस्तु नहीं जिसका विनियोग करना भारतीयों को न आता हो। छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी वस्तुओं का कैसे विनियोग हो सृष्टि के एवं सृष्टि के प्राणियों के हित में वह भारत की संस्कृति व भारत की कोटि-कोटि वर्ष की लम्बी विकास यात्रा है। विकास यात्रा के अन्तर्गत यह सारी जानकारी भारतवासियों को थी। उसी सोने से हम लोगों ने मंदिर बनवाये, सिंहासन बनाये, पूजा के पात्र बनाये, भगवान के गहने बनाये, हमारे भी गहने बनाये। उनकी मुद्रायें बनायी और उससे भी अधिक आ जाता था तो जमीन में गाड़ दिया जाता था। आज भी खुदाई में कई जगह निकलता है।

भारत में वास्तव में इतना सोना था। सोने की चिड़िया कहने का अर्थ रूपक नहीं है। भारत की भूमि का उत्पादन था। उत्पादन के बदले में इतना सोना भारतवासियों को मिला था। जमीनों में गाड़ा जा रहा था, मुद्रा उसकी बनायी जा रही थी। सिंहासन और भोजन के पात्र बनाये जा रहे थे। मंदिर बनाये जा रहे थे। इतना सोना था कि यह सोने की चिड़िया था। सोने की चिड़िया के पीछे कारण गाय थी। गाय ने ही इस पृथ्वी को वह उर्वरा शक्ति प्रदान की जिससे पृथ्वी कोटि-कोटि वर्षों से हमें निरन्तर हव्य-कव्य, औषधि,

फल-सब्जियों देती आ रही है। इस रूप में हमें अमृत देती आ रही है। फिर भी इसकी उर्वरा शक्ति यथावत बनी हुई थी जब से यहाँ पर गाय रही। गाय इस सृष्टि का केन्द्र बिन्दु है।

प्रकृति और पृथ्वी का चिन्मय स्वरुप देखना चाहें, उनका दर्शन करना चाहें तो वह है गाय। गाय भूत प्राणियों की तो माँ है ही, विश्व की तो माँ है ही पर समष्टि पंच महाभूतों की भी माँ है। उनको भी यह पोषण प्रदान करती है। प्रकृति को भी गाय पोषण देती है। प्रकृति की भी गाय माँ है। पृथ्वी, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार यह अष्टधा समष्टि प्रकृति है। इनका भी सात्विक पोषण, इनको जीवनी शक्ति गाय से ही प्राप्त होती है।

हम लोग निरन्तर मेहनत करते हैं तब थक जाते हैं। हमें भोजन की आवश्यकता होती है। गाड़ी चलती है तो उसे डीजल की आवश्यकता पड़ती है। ऐसे ही प्रकृति निरन्तर काम करती है। निरन्तर क्रियाशील है। इसलिये इनको भी जीवनी शक्ति की आवश्यकता रहती है, भोजन की आवश्यकता रहती है, पोषण की आवश्यकता रहती है। इस समष्टि प्रकृति का पोषण केवल और केवल गाय ही कर सकती है और कोई नहीं कर सकता। गाय का गोबर इस पृथ्वी का आहार है। गाय गोबर, गोमूत्र और दूध ये तीन चीजें तो प्रत्यक्षरुप से देती है।

इसके अलावा गाय श्वास छोड़ती है, गाय पृथ्वी

का स्पर्श करती है और उनके रोम-रोम से एक ऐसी सात्विक जीवनी शक्ति का निरन्तर सृजन होता है। जो उसके आसपास में रहने वाले सभी प्राणियों को आशीर्वाद के रुप में मिलती है। गोबर, गोमूत्र, दूध तो है ही, उसके अलावा गाय की उपस्थिति, गाय का स्पर्श, गाय का श्वास, गाय का स्पर्श करके चलने वाला पवन और गाय के स्पर्श से पृथ्वी, ये सब दिव्य शक्ति से सम्पन्न होते हैं। आप हम सब जानते हैं कि गायो के पांवों से स्पर्श होकर जो रज आकाश में उड़ती है उनको हमारे पूर्वजों ने गोधूलि मुहूर्त कहा है। उस गोधूलि मुहूर्त में हम कोई कार्य करना चाहते हैं तो निर्विघ्नतापूर्वक सम्पन्न और सिद्ध होता है। क्यों? क्योंकि गोधूलि के कुछ कणों से चारों तरफ ऐसा एक वज्र कवच बनता है, अभेद्य कवच बनता है जिसका भेदन ग्रह नक्षत्र आदि नहीं कर सकते। अगर हम भौतिक विज्ञान की भाषा में कहें तो संसार के लिये भयंकर से भयंकर रोगाणु और विषाणु इनको भेदकर इसकी परिधि में नहीं जा सकते हैं। यह शक्ति गाय के स्पर्श होकर उड़ने वाली रेती में है।

अब गाय की श्वास निरामय होती है। हम लोग मनुष्य के सामने देखते हैं तो घबराहट होती है, पर गाय के मुख के सामने आप मुख रखकर बैठिए आपमें स्फूर्ति आयेगी। गाय जो श्वास छोड़ती है उसमें जीवनी शक्ति है। उसमें भी ऑक्सीजन है। जबकि संसार के सारे प्राणी श्वास छोड़ते हैं उसमें मृत्यु है, जहर है, निर्जीवता

है। पर गाय जिस श्वास को छोड़ती है उसमें जीवन है।

ऐसे ही हम लोग थोड़ा विचार करें और देखें कि हम लोग करोड़ों -करोड़ों वर्षों से इनके मल और मूत्र को परम पवित्र मानते हैं। इतना विशाल भारतखण्ड सारे भारतवासी गंगा के प्रति श्रद्धा रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति अपनी जीवित अवस्था में अगर न जा सके तो मरने के बाद भी अस्थि गंगाजी में जावे ऐसी इच्छा रखता है। उस देश में गंगा जब गांव-गाँव और घर-घर कैसे पहुँचे? करोड़ों वर्षों पहले हमारे ऋषियों ने कहा कि गाय का गोमूत्र गंगाजल है। जहाँ आपको शुद्धि की आवश्यकता पड़े, पवित्रता की आवश्यकता पड़े वहाँ आप गाय का गोमूत्र लीजिए।

आप यज्ञ करते हैं, पूजा करते हैं, देवालय बनाते हैं, आप जिस भूमि पर बनाते हैं वहाँ पहले किसी प्राणी की हत्या हुई है, किसी के साथ क्रूरता हुई है, कहीं गन्दगी वहाँ पड़ी है उस भूमि को अगर आपको शुद्ध करना है तो क्या लायेंगे? वहाँ गाय का गोबर लायेंगे। गाय के गोबर का लेपन करने से वह भूमि शुद्ध एवं पवित्र हो जायेगी और सात्विक हो जायेगी।

गाय का गोबर क्या है? गाय का गोबर जैसे मनुष्य मल होता है वैसे यह गाय का मल है। शरीर में सबसे गन्दी से गन्दी चीज होती है उसे कहते हैं मल। गाय के शरीर में सबसे गन्दी से गन्दी चीज है वह है गाय का गोबर। उस गोबर के लीपने से मलिनता मिटती है।

गन्दगी समाप्त हो जाती है।

ऐसा प्राणी जिसका मल मलिनता मिटाता है उस प्राणी की उपमा देने के लिये इतिहास में, संसार के किसी कोने में कोई वस्तु दिखती ही नहीं। कोई व्यक्ति दिखता ही नहीं भारत में और भारत से बाहर भी। भारत में तो असंख्य संत हुए पर भारत के बाहर भी संत, वीर, पैगम्बर हुए। भगवान का अवतार केवल भारत में हुआ। किसके लिये हुआ भगवान यहाँ पर क्यों आये? निराकार निर्मोह सच्चिदानंदघन परिपूर्ण है। जिनका कोई आकार नहीं, जिनका कोई नाम नहीं, जिसमें अनेक ब्रह्माण्ड उत्पन्न होते हैं, ठहरते हैं और समाप्त हो जाते हैं ऐसा परम सत्य सगुण साकार वह मूर्तिमान होकर भारत में कैसे उतरा? कौनसी शक्ति थी भारत के पास। वह कोई शक्ति थी तो वह थी गाय। गाय ने गोविन्द को गोलोक से नीचे उतारा। गाय ने ही भारत को अपौरुषेय ज्ञान दिया था। जो किसी अन्य जगह प्राप्त नहीं हुआ।

ये वेद संहिताएँ दर्शन उपनिषदों, उपनिषदों के ऐसे मन्त्र हैं जिनके एक-2 मंत्र की ठीक से हम व्याख्या नहीं कर सकते, उन मंत्रों का साक्षात्कार किया उन लोगों ने जो गोउपासक थे। गाय के गव्यों का सेवन करते थे और गाय की उपासना करते थे। गाय को आगे रखकर स्वयं पीछे चलते थे। इतने सारे सन्त हुए उन्होंने भगवान को नहीं उतारा गाय ने उतारा। गाय के लिए परमात्मा यहाँ आये और हमारे साथ हमारे जैसे बनकर रहे।

गाय में यह शक्ति कहाँ से आयी है? इस पृथ्वी पर गाय अन्य प्राणियों की तरह जन्मती और मरती है। तो गाय के मल में इतनी पवित्रता कैसे आ गयी? किसी संत के, पीर के, पैगम्बर के यहाँ तक कि भगवान राम, भगवान कृष्ण और कोई अवतार-संत के बारे में भी हमने नहीं सुना कि उनका मल मूत्र पवित्र माना जाता था या पवित्रता के लिये काम लिया जाता था ऐसा न कहीं सुना है और न कहीं पढ़ा है।

गाय में यह विशेषता कहाँ से आयी? अगर इसको थोड़े से शब्दों में समझना चाहें तो यह गाय मृत्यु लोक का प्राणी है ही नहीं। प्रकृति के अन्य उत्पन्न होने वाले प्राणी हैं उनमें गाय है ही नहीं। गाय गोलोक का प्राणी है और हिन्दु धर्म की दृष्टि से गोलोक सातों लोकों से ऊपर है। प्रकृति का जो साम्राज्य है स्थूल, सूक्ष्म और कारण उन तीनों से अतीत गोलोक है। गोलोक से ही यह गाय पृथ्वी पर आयी है। पृथ्वी पर रहते हुए गाय का निरन्तर सम्बन्ध गोलोक से बना रहता है। इसके लिये शब्द प्रमाण हैं।

वेदों में बताया गया है कि सूर्य की एक किरण है जिसका नाम है गो। वैसे तो सूर्य की सहस्त्रों किरणें हैं पर सूर्य की तीन किरणें प्रधान मानी जाती है। एक किरण से सूर्य भगवान समुद्र के खारे जल को अवशोषित करके मीठा बनाकर वर्षाते हैं। दूसरी किरण के माध्यम से सभी शरीरधारी प्राणियों को ओज प्रदान करते हैं और

तीसरी गो नामक किरण सीधी गाय में उतरती है। गाय के ऊपर वाले भाग में कुकुद होता है जिसे मारवाड़ी में थूंभी कहते हैं। इस थूंभी (कुकुद) में सूर्यकेतु नाम की नाड़ी है।

यह गो किरण इस सूर्यकेतु नामक नाड़ी में प्रवेश करके आंत में जाती है वहाँ गाय चारा, पानी, श्वास आदि लेती है। उस गो नामक किरणसे शरीरमें स्वर्णपितक्षार नामक एक तत्व की संरचना होती है। यह स्वर्णपितक्षार ही सतोगुण है। जिसे हमारे पूर्वजों ने परम पवित्र माना है। यह स्वर्णपितक्षार गोबर में भी होता है, गोमूत्र में भी होता है, दूध में भी होता है, उसकी श्वास-प्रश्वास में भी होता है। गोमाता के रोम-रोम से निकलता है। यह कोई किसी यन्त्र से पकड़ में आवे ऐसा तत्व नहीं है।

यह है तो स्वर्ण का क्षार पर हम यन्त्र से पकड़ कर अलग कर दें ऐसा नहीं है। यह सूक्ष्म चीज है। यह सूक्ष्म चीज निकलती है गाय के शरीर में से पर अभी तक इसको नापने के लिये किसी प्रयोगशाला में यन्त्र निर्माण हुआ नहीं। ऑक्सीजन जीवनी शक्ति को नापने के यन्त्रों का निर्माण हुआ है परन्तु जीवनी शक्ति कहाँ से आती है? जीवनी शक्ति के उत्पन्न होने का आधार क्या है? उस आधार को देखने का यन्त्र अभी तक विकसित नहीं हुआ। जैसे कपास में से तेल निकाल दिया जाये और पीछे केवल खल रहती है। ऐसे ही जो सतोगुण है उस सतोगुण का सार रस तो गाय के गोमय में जो क्षार

है वह तो शुद्ध सतोगुण है और उसका बचा हुआ भाग जो गोबर का खल है वह है। जीवनी शक्ति आक्सीजन की बात तो हम लोगों के समझ में आती है।

शास्त्रों में गाय को इतना महान महिमावान इसलिये बताया कि गाय इस पृथ्वी पर रहेगी तो प्रकृति संतुलित रहेगी। प्रकृति में मानवीय अपराधों से जो विष निर्मित होता है उस विष का शमन गाय के द्वारा होता रहेगा। गाय में विष को शमन करने की अमोघ शक्ति है। भिलावा, संखिया, कुशला आदि ऐसे जहर होते हैं जिसको सीधा खाये तो आदमी मर जाये और यदि चालीस दिन तक उसको गोमूत्र में रखते हैं तो ये जहर अमृत के रूप में बदल जाते हैं। यह गाय के गोमूत्र की शक्ति है।

गाय के अन्दर की शक्ति यह दर्शाती है कि गाय विष को अमृत के रूप में बदलने की क्षमता रखती है। गाय जब यहाँ रहती है तो विष का शमन होता है, प्रकृति संतुलित रहती है। पर्यावरण में जो जहर फैलता है वह जहर भी गाय की उपस्थिति से गाय के गव्यों से मिट जाता है। गाय की उपस्थिति से नयी जीवनी शक्ति का सृजन होता है। वह शक्ति सभी को मिलती है।

अब गाय से आगे हम चलें कि मानव श्रेष्ठ हुआ या गाय। अगर ये दो बातें सामने आती है, हमें कोई श्रेष्ठता को लेकर चुनाव करने का कहते हैं तो हम कहेंगे कि मानव विवेक के कारण तो श्रेष्ठ हो सकता है पर मानव शरीर के कारण श्रेष्ठ नहीं हो सकता। मानव का

मल-मूत्र दूषित है। अच्छे से अच्छा खाता है अथवा पेय के रूप में लेता है तो गंदे से गंदा मल तथा मूत्र बनाकर छोड़ता है और गाय बेकार का घास फूस खाकर बढ़िया-से-बढ़िया दिव्य अमृत बनाकर हमें देती है। तो शरीर की दृष्टि से गाय मानव से श्रेष्ठ हो ही गयी। अन्य दृष्टियों से देखा जाय तो मानव में हम जिसको विवेक कहते हैं वह विवेक मानव सात्विक होगा तभी जगेगा और मानव में सात्विकता कहाँ से आयेगी? मानव का निर्माण जिन पदार्थों से होता है उन पदार्थों में सात्विकता होगी तो ही मानव में सात्विकता आयेगी।

मानव का निर्माण पंच महाभूतों से होता है। अन्न, जल और हवा यही मानव के आहार हैं। अगर ये आहार शुद्ध तथा सात्विक रहे तो मानव सात्विक होगा। हवा को, अन्न को व जल को तीनों लोको में गाय को छोड़कर सात्विक कौन बना सकता है? गाय ही अन्न को, जल को, हवा को शुद्ध एवं सात्विक बना सकती है। गाय के माध्यम से सात्विकता मानव में आती है। गाय के माध्यम से मानव में मानवता उदय होती है। करूणा, दया, वात्सल्य, परोपकार, धर्म, संयम, नैतिकता और चरित्र के जो गुण हैं वे सात्विक मानव में ही रहते हैं। गाय से ही मानव सात्विक बनता है। इस प्रकार यह बात सिद्ध हो गयी कि गाय मनुष्य से श्रेष्ठ है।

सतो, रजो और तमो तीन गुणों के तारतम्य की दृष्टि से देखा जाय तो गाय इस पृथ्वी पर शुद्ध सतोगुण

का सृजन करती है। आंशिक सतोगुण तो हमें अन्य स्थानों से भी मिलता है पर गाय से पूर्ण तथा शुद्ध सतोगुण प्राप्त होता है। अतः सात्विकता के सृजन के लिये यह सर्वदेव अधिष्ठात्री दिव्य शक्ति जो गोलोक से पृथ्वी पर आयी है भगवती नारायणी, इनका संरक्षण, इनका वर्धन करो तथा इनके सेवन से मानव में मानवता आयेगी और मानव में जब मानवता आयेगी तो सब तरह से शांति, समृद्धि और विकास की बात सफल हो पायेगी। दीर्घ जीवन की बात, शान्ति की बात, स्वास्थ्य की बात, समृद्धि की बात यदि हम चाहते हैं तो गाय को जीवित और सुखी रखकर ही हो सकता है।

लोग सारे संसार में पैसों के लिये दौड़ रहे हैं, आर्थिक स्थिति को स्थिर बनाना चाहते हैं। यदि यह समृद्धि है और समृद्धि की स्थिरता सात्विक मन से होती है। हमारे यहाँ कहा जाता है कि तामसी धन एक दशक टिकता है, राजसी धन एक पीढ़ी तक और सात्विक धन पीढ़ियों-2 तक रहता है। अगर भारत वास्तव में समृद्ध होना चाहता है, स्वावलम्बी होना चाहता है, स्वाधीन होना चाहता है तो उसे अपनी समृद्धि के लिये जो विकास करना है, विकास की जो योजनायें बनानी हैं उन योजनाओं में पवित्र संसाधनों का प्रयोग करे और पवित्र साधन गाय से ही मिलेंगे।

इन साधनों से ही सात्विक उपार्जन होगा। सात्विक उपार्जन से की हुई समृद्धि ही दीर्घकाल तक रहेगी।

स्वास्थ्य की दृष्टि से, समृद्धि की दृष्टि से, सुरक्षा की दृष्टि से और जनसंख्या की दृष्टि से भी देखें तो गाय के समान दूसरा हमारे लिये उपयोगी और प्रभावी कोई नहीं है। जनसंख्या बढ़ रही है और बहुत बड़ा खर्चा किया जा रहा है नियन्त्रण के लिये। उसके पता नहीं क्या-2 नाम दिये हैं? जैसे परिवार कल्याण- है तो परिवार संहार, परिवार का विनाश परन्तु नाम दिया परिवार कल्याण। गोदूध पीने वाले समाज में जनसंख्या अपने आप नियन्त्रित होती है। गायका जो दूध पीते हैं, गायका पालन करते हैं वहाँ आज भी उन लोगों को जाकर आप देखेंगे तो उनमें कोई असाध्य रोग नहीं दिखेगा। जिसको आजके डाक्टर कैंसर, मधुमेह, रक्तचाप, हृदय रोग, एड्स आदि कहते हैं ऐसे कोई रोग उनको नहीं होगें।

दूसरा, अधिक संख्या में संताने नहीं होगी और कोई बोझ नहीं होगा। लड़कों की संख्या व लड़कियों की संख्या सही अनुपात में होती है। इन सारी बातों की आप जाकर जाँच कर सकते हैं। अध्ययन और अनुसंधान कीजिये इन पर। जो भी गाय पालते हैं, गाय का दूध पीते हैं तो उनमें ये चीजें स्वाभाविक रूप से हैं। अगर यह सम्पूर्ण भारत वर्ष में लागू कर दिया जाये तो जनसंख्या नियन्त्रण के लिये, रोगों के निदान के लिये जो करोड़ों रुपये और इतना जो समय बर्बाद किया जा रहा है वह सारा बच जायें। जिसे गाय की सेवा में और अन्य विकास कार्यों में काम ले सकते हैं।

ऐसी बहुत सी बातें हैं जिनमें गाय हमें बचाती है। जैसे प्राकृतिक आपदायें जो भारत में आती हैं इन आपदाओं से भी गाय हमें बचा सकती है और बचायेगी। पहले भी गाये ने ही बचाया। भयंकर से भयंकर प्राकृतिक आपदाओं से गाय हमें बचा सकती है, बचाने का सामर्थ्य है उसमें। अतिवृष्टि और अनावृष्टि का अभिशाप हम प्रतिवर्ष झेल रहे हैं। कभी राजस्थान, कभी छत्तीसगढ, तो कभी बुन्देलखण्ड, तो कभी महाराष्ट्र, तो कभी गुजरात कभी मध्यप्रदेश तो कभी बिहार आदि प्रतिवर्ष झेल रहे हैं, इससे भी गाय हमें बचा सकती है।

भगवान भास्कर की किरणें विष के कारण कमजोर हो गयी हैं अथवा दूसरे शब्दों में कहें तो देवी शक्ति कमजोर हो गयी है। देवताओं का आहार है सात्विक पदार्थ। गाय के गव्य मिलने बन्द हो गये इसलिये देवता कमजोर हो गये। मरेंगे तो नहीं क्योंकि ये अमर हैं, पर कमजोर हो गये। वे कमजोर होने से जो जिम्मेदारियों इनके ऊपर थी उनको ठीक तरह से नहीं निभा पा रहे हैं।

जो कमजोर हैं, अशक्त हैं, असहाय हैं, उनको शक्ति भी गाय के गव्यों से मिलती है। गोपुष्टि यज्ञ हो रहे हैं। यज्ञ से वर्षात् होती है। शास्त्र कहते हैं। शास्त्र झूठ नहीं बोलेंगे। क्यों बोलेंगे झूठ? किसलिए बोलेंगे, उनको कौनसी सत्ता और सम्मान चाहिए? उन्होंने जो कहा वह सत्य है। फिर यज्ञ इतने हो रहे हैं तो भी वर्षात् क्यों नहीं होती? पहले इतने यज्ञ नहीं होते थे। फिर भी

वर्षात् होती थी अथवा अमुक देशों में जहाँ यज्ञ नहीं होते हैं वहाँ भी बरसात होती है। यह सारे संशय हमारे मन में पैदा होते हैं।

हम देखें कि जिस समय कम यज्ञ होते थे उस समय बरसात अधिक होती थी। उस समय पर्यावरण में इतना प्रदूषण नहीं था। आज जितना जहर बाहर उगला जा रहा है, इतना जहर तो हम हजारों वर्षों के इतिहास में देखते हैं तो कहीं नहीं था। तो जिस गति से जहर को उत्पन्न किया जा रहा है और फैंका जा रहा है, उस मात्रा में यज्ञ नगण्य हो रहे हैं। घर-घर गोघृत से यज्ञ होने चाहिए। हमारे यहाँ पहले अग्निहोत्री थे। सारे-के-सारे घरों में गोघृत से प्रतिदिन यज्ञ होते थे प्रातः एवं सांय दोनों समय। कुछ नहीं तो हम गोघृत से धूप और दीप तो करते ही थे। अब भी ग्रामीण भारत में यह परम्परा है।

परन्तु ये यज्ञ, दीपक और धूप जो भी करें केवल गाय के घी से ही होने चाहिए। अगर आप डेयरी के घी से करते हैं, जो घी है ही नहीं केवल चिकनास है तो लाभ होने के स्थान पर आपको भारी हानि होगी। भैंस और संकर पशु उसके दूध से बनाया हुआ पदार्थ घी नहीं हो सकता। वह चिकनास है उसमें घी का गुण नहीं है। भैंस तामसी है। यह संकर पशु तामसी से भी अत्यधिक तामसी है। जो संकर दोषसे तैयार किया गया है। भारतीय गायों को ले जाकर अन्य पशुओं के मिश्रण से तैयार किया गया है। वह वास्तव में अत्यधिक तामसी है।

अगर आप गोगव्यों की बजाय इन पशुओं के दूध घी से पूजा करते हैं, यज्ञ करते हैं, हवन करते हैं तो उसे देवता तो ग्रहण करेंगे नहीं, उनका तो वे भोग लेते ही नहीं, दानव उसको ग्रहण कर लेंगे। मन्दिर देवता का, नाम देवता का, मंत्र देवता का और खा जाते हैं दानव। इससे क्या होगा? इससे यह होगा कि दानव होते जायेंगे बलवान। दानवों का कार्य क्या है? इनका कार्य है प्राकृतिक, व्यावहारिक, मानसिक और बौद्धिक अव्यवस्था फैलाना, उत्पात करना, सृष्टि में नाना प्रकार के उपद्रव करना।

अब आप देखें कि एक तरफ तो विकास की बात हो रही है और दूसरी तरफ भयंकर पतन हो रहा है। ऐसी मानसिक एवं बौद्धिक विकृतियाँ पैदा हो रही है। लोगों के भाव ही दूषित हैं, विचार ही दूषित हैं। यह जो विनाशकारी भावों एवं विचारों का निर्माण हो रहा है यह बड़ा भयंकर जहर है। यह जहर इसी कारण फैल रहा है और चारों ओर दानवी शक्ति बढ़ रही है। जहर माने दानव और दानव माने जहर। देव माने जीवन और जीवन माने देव।

तो सज्जनों! सात्विक जीवनी शक्ति कम हो गयी है। शरीर पुष्ट तो मांस-मच्छी खाने से भी हो जाते हैं। इससे पशु बल तो मिल जाता है पर पौरुष बल नहीं मिलता है। पौरुष बल तो सात्विक आहार से आता है। जिसमें पौरुष बल होता है न, शरीर भले कैसा ही हो

वह ही अदम्य साहसिक होता है। पौरुष बल अमोघ होता है और अदम्य होता है। हमने देखा था बूढ़े-बूढ़े लोग शरीर की चमड़ी लटक रही है, पर जब कठिन परिस्थिति, धर्म पर संकट आया, माताओं व बहिनों पर संकट आया, भूमि पर संकट आया तो पता नहीं उनमें कहाँ से बल आ गया। वे ऐसे आगे बढ़े जैसे कोई युवा योद्धा बढ़ता हो। सैकड़ों जवानों का बल आता है।

गाय के गव्यों से शरीर तो स्वस्थ रहता है परन्तु हृदय भी पवित्र हो जाता है। बुद्धि तीक्ष्ण, सात्विक और स्थिर हो जाती है। यदि स्वस्थ शरीर, पवित्र हृदय और विवेकवान बुद्धि हो तो ऐसा मनुष्य पृथ्वी का श्रृंगार होता है। इसके विपरीत कोई शरीर से रोगी, हृदय से कलुषित और बुद्धि से विपरीतगामी है तो इस सृष्टि को नरक बना देगा। गो गव्यों से क्या नहीं हो सकता।

यहाँ हमने अरबों वर्षों के इतिहास में गुणवता को महत्व दिया है। मात्रा को नहीं, संख्या को नहीं, वस्तु को नहीं, वस्तु की गुणवता को ही महत्व दिया है अर्थात् विवेक को महत्व दिया। समझ है अगर और संख्या में कम हैं तो भी सारे संसार का मार्गदर्शन कर लेंगे और अगर समझ नहीं हो ठीक और संख्या होगी अधिक तो सारे संसार को विपत्ति में डाल सकते हैं। आज इस पृथ्वी पर मताधिकार का जाल फैलाया हुआ है। निन्नावे भले आदमियों को सौ मूर्ख मिलकर बेकार कर देते हैं। यह कैसी पद्धति है? यह सब दानवों का जाल है, उनकी

माया है। किस तरह से पद और सामर्थ्य हथियाया जावे, उस तरह से मायाजाल फैला रखा है। यह कोई लोकतन्त्र नहीं है, यह कोई मानवहित की बात नहीं है। यह तो भीड़तन्त्र है। भीड़ हर युगमें कम समझवालोंकी रही है। अच्छे लोगों की भीड़ नहीं रही है, बुरा मत मानना आप।

गाय के गव्यों का सेवन नहीं करेंगे तो यह बेकार की भीड़ है। गाय के गव्यों का सेवन करेंगे तो शरीर से स्वस्थ, हृदय से पवित्र और बुद्धि से विवेकवान आप बनेगें। ऐसे मानव की आवश्यकता तो सारे जगत देवता को है। पूरा जगत आपको बधाकर कर लेगा, प्रेम से लेगा, सम्मान करके लेगा। आपको जगत की नहीं, जगत को आपकी जरुरत रहेगी। आज हमको जगत की जरूरत है, परन्तु जगत को हमारी जरूरत नहीं है।

आज तो यह हाल है कि जन्म ही नहीं लेने देते हैं पेट में ही मार देते हैं। यहाँ आने ही नहीं देते, तुम ज्यादा आ जाओगे तो खाओगे क्या? ऐसे लोग ज्यादा आयेंगे तो खायेंगे ही खायेंगे, उन्हें भला बुरा दिखेगा ही नहीं। अगर अच्छे लोग आते हैं तो नया सृजन करते हैं, नया आविष्कार करते हैं, नया निर्माण करते हैं। यदि बेकार की भीड़ आती है तो जो पहले हमारी प्रकृति में शुद्ध वस्तुएँ हैं उनको नष्ट करेंगे। वो कुछ नया पहीं करते। उनसे किसी नये की अपेक्षा नहीं रखनी चाहिये। पिछले तीन सौ वर्षो में हमने यही कार्य किया है।

सज्जनों ! हम आज इस गोपुष्टि महायज्ञ के समापन

समारोह में छत्तीसगढ की और पूरे भारत की जनता से निवेदन करना चाहते हैं। माघ कौसल प्रदेश, यह कोसल्याजी का पीहर है। भगवान राम का ननिहाल है। भगवान श्रीकृष्ण का ससुराल भी है। दोनों चीजे हैं फिर भी यहाँ पर एक बात समझ में नहीं आयी कि यहाँ गायों की इतनी उपेक्षा क्यों? बात समझ में आयी हुई तभी मानी जाये जब सभी के काम में आती हुई दिखाई दे।

गो का कार्य इस प्रदेश में सबसे पहले होना चाहिए। होना तो सम्पूर्ण भारत में चाहिए परन्तु जिस भूमि को इतनी महिमा, इतना सम्मान मिला हुआ है, जहाँ पर भगवान को जन्म देने वाली माँ पैदा हुई हो और भगवान ने जहाँ गोहत्या से मुक्त करने के लिये यह तीर्थ बनाया हो। तो इस सम्पूर्ण प्रदेश को गोतीर्थ बनाया जाये और देश भर में जितने भी लोग गोहत्या के भागी बने हैं वे सब इस प्रदेश में आकर गोहत्या के पाप से मुक्त होकर जायें। यहाँ से प्रेरणा लें और अन्य प्रदेशों में जाकर गोसेवा करें।

इसके लिए जरुरी है कि हम यहाँ रचनात्मक कार्य करें। रचनात्मक कार्य कहने का अर्थ यह है कि छत्तीसगढ में अच्छा गोवंश तैयार हो। जो गोवंश है उनकी रक्षा तो करें ही साथ ही जो अभी तक गायों की दशा आप देख रहे हैं, पिछले कई दशकों से उनकी उपेक्षा के कारण वे बहुत ही कमजोर हो गयी हैं, वे बहुत कम दूध देती हैं, वे कम शक्ति रखती हैं। इसलिये गोसंवर्धन का कार्य

करें, अच्छी नस्ली गायें तैयार करें, गांव-गांव में नंदीशालाओं की स्थापना करें, पुनः घर-घर में गोपालन शुरु किया जाये। गोसंवर्धन के कार्य में सरकार सहयोग करे और समाज के लोग इसका संचालन करें। यह रचनात्मक कार्य बिल्कुल सहज है।

इस प्रदेश में गाय के गोबर की खाद से कृषि उपार्जन करें तो इसको देश का ही नहीं दुनिया के लिये आदर्श बनाया जा सकता है। यहाँ चावल पैदा होते हैं और संसार के अधिकतर लोग चावल खाते हैं, माने चावल सब खाते हैं। गेहूँ कुछ लोग खाते हैं। बाजारा और मक्की तो बहुत कम लोग खाते हैं। पर चावल सारे संसार के लोगों का आहार है।

छतीसगढ में गाय के गोबर की खाद से जैविक चावल उत्पादन कर सकें तो छत्तीसगढ की प्रजा को बहुत बड़ी समृद्धि मिलेगी। जैविक उत्पादन की मांग सारे संसार में है। इनके दाम भी दो गुणा मिल सकते हैं। यहाँ के चावल गाय के गोबर से उत्पन्न किये जाये तो यह प्रदेश की आर्थिक समृद्धि का बहुत बड़ा आधार बनेगा। यह सरकार का कार्य है। सरकार ऐसी योजनाएँ बनायें जिनका लक्ष्य ही प्रजा का कल्याण हो और प्रदेश का विकास हो। इस समय गोआधारित कृषि से बढ़कर और कोई कार्य हो ही नहीं सकता जिसे छत्तीसगढ में तैयार करें।

गाय के गव्यों का गुणवत्ता के आधार पर मूल्य दें।

जो गोवंश दूध के लिये काम नहीं आ रहा है अथवा खेती के लिये काम नहीं आ रहा है, ऐसे गोवंश के संरक्षण के लिये प्रत्येक खण्ड स्तर पर गोअभ्यारण्यों की स्थापना करें। कम से कम हजार-हजार एकड़ के जंगल केवल गायों के लिये आरक्षित किये जायें। उनमें गायों के लिये चारा, पानी, छाया और सुरक्षा की समुचित व्यवस्था हो तथा इनके संचालन का जिम्मा समाज सेवी संस्थाएँ देखें ।

गाय के गोबर से उत्पादित वस्तुओं की सरकार समर्थित मूल्य देकर खरीद करे। गाँवो में नंदीशालाओं की स्थापना करना, गोरक्षा कानून में कठोरता लाना ये काम सरकार और समाज मिलकर ही कर सकते हैं। न अकेला समाज कर सकता है और न ही अकेली सरकार कर सकती है। इससे आर्थिक समृद्धि होगी, प्रदेश के लोग स्वस्थ होंगे, यहाँ का वातावरण पवित्र होगा और साथ-साथ में गोमाता का अमोघ आशीर्वाद प्राप्त होगा।

आशीर्वाद की भाषा आज के शासकों के समझ में नहीं आती है। यह दुर्भाग्य ही होगा इस देशवासियों का कि देश के शासक केवल बौद्धिक व्यायाम में लगे हुए हैं। कहने को तो वे हिन्दू हैं और धर्मपरायण भी हैं, फिर भी वे अन्दर ही अन्दर अपनी बुद्धि लगाते हैं कि यह कार्य करेंगे तो इससे कितने वोट मिलेंगे। आशीर्वाद भी मिलता है उसका पता नहीं है। अगर गाय से वोट मिलता होता तो सारी की सारी व्यवस्था करते, पर गाय को वोटों का

अधिकार दिया नहीं। हमें ऐसा प्रयास करना चाहिए कि भारत में लोकतन्त्र रहे तो गायों को मत का अधिकार मिले । प्रयास करेंगे तो सफलता मिलेगी।

छत्तीसगढ और पूरे देश के शासन एवं समाज के लिये हमारी यही प्रार्थना है, यही निवेदन है कि वे असहाय, निराश्रित, अशक्त, क्रूर कसाइयों के हाथों में जाने वाला या जाने की संभावना हो ऐसे गोवंश की रक्षा के लिये गोअभ्यारण्य स्थापित करें। भविष्य में अच्छा गोवंश तैयार हो इसके लिये गाँवो में नंदीशालाएँ बनायें, गाय के उत्पादों को समर्थित मूल्य पर खरीदें और कानून को कठोर बनाये।

जो यहाँ पर गोरक्षा एक्ट बना हुआ है उस एक्ट को हमने देखा है तथा अन्य राज्यों के गोरक्षा एक्ट भी देखे हैं। वहाँ काम भी देखे हैं, पर वास्तव में ये सारे गोरक्षा एक्ट पंगु हैं। इसको न तो कोई वित्तीय अधिकार हैं और न ही प्रशासनिक अधिकार है। इससे तो न बनाना ही अच्छा था। बना भी दिया और उसके पास कुछ है भी नहीं तो वे काम कैसे करेंगे ? काम करना हो और अन्दर से इच्छा शक्ति है तो इसे पूरे मन्त्रालय का दर्जा दो। यह वास्तव में गोपालन मंत्रालय होना चाहिए। इस मंत्रालय के पास गोवंश के अनुसंधान की, चिकित्सा की, वृद्धि की सारी सुविधाएँ हों। इस मंत्रालय को जो बजट देंगे वह अगले पांच वर्षो में 10 गुणा होकर मिलेगा यह हम विश्वास दिलाते हैं। अगर विश्वास को समझें और गाय के आशीर्वाद की भाषा को समझें तो।

मुझे थोड़ा विश्वास है कि यहाँ के शासकों में और

समाज में गोभक्ति है इसलिये वे इस बात को समझेंगे और जल्दी से जल्दी गोसंवर्धन के लिये नंदीशालाएँ, गोसंरक्षण के लिये गोअभ्यारण्य, गोपालकों को रोजगार देने के लिये, उन्हें समृद्ध बनाने के लिये जैविक कृषि और जैविक उत्पादों को बढ़ावा देने की व्यवस्था करेंगे। गाय के गव्यों से बहुत सी औषधियाँ बनती हैं। उन औषधियों को समर्थित मूल्य पर खरीद कर सब्सीडी मूल्य पर वापस दें।

आप सभी गोसंरक्षण, गोपालन, गोसंवर्धन एवं गोत्पादों के विनियोग को समझकर जीवन में क्रियान्वित करने का संकल्प लेकर इस गोतीर्थ से प्रस्थान करेगें ऐसी अपेक्षा के साथ अपनी वाणी को भगवान भास्कर के चरणों में अर्पित करते हुए विराम देते हैं। पुनः सभी सन्तों के चरणों में प्रणाम एवं आप सभी गोभक्त सज्जनों का सादर अभिवादन।

जय गोमाता ! जय गोपाल !

❁❁❁❁❁

।। श्री सुरभ्यै नमः।।

8

गावो विश्वस्य मातरः

सर्वेश्वर सच्चिदानंदघन परमात्मा सभी के हृदय में अंतर्यामी रूप से विराजमान हैं, उनका नमस्कार पूर्वक पावन स्मरण करते हैं। पूज्य संतवृन्द, उपस्थित गोभक्त सज्जनों, माताओं, बहनों और बालकों आप सभी का सादर अभिनन्दन! जय गोमाता! जय गोपाल!

कई दिनों से हम महान गोरक्षक, गोभक्त, राष्ट्रभक्त, धर्माचार्यों से सनातन हिन्दूधर्म, गो की वर्तमान परिस्थिति और उन्हें पुनः अपने स्थान पर स्थापित करने के बारे में अनेक उदाहरणों से, प्रमाणों से और जीवन के अनुसंधानों से समझ चुके हैं। पूरे देश एवं दुनिया के लोग जो सनातन धर्म में आस्था एवं श्रद्धा रखते हैं और गोमाता के प्रति भक्ति रखते हैं वे सभी आचार्यों एवं संतों की ओजस्वी वाणी से गाय की सत्ता, महत्ता,

उपादेयता एवं गोउत्पादों की विशेषता का सविस्तृत वर्णन सुन चुके हैं।

हम गुजरात गोमहोत्सव एवं श्रीराम कथा समारोह के समापन दिवस पर सभी मानव जाति से अपेक्षा करते हैं, प्रार्थना करते हैं कि गाय, जिसकी महिमा संसार के प्राचीनतम ग्रन्थ, जिसे हम लोग भगवान वेद कहते हैं उनमें और उनके बाद जितने ग्रन्थों की रचना हुई हैं उन सभी में तथा इस पृथ्वी पर मानव जीवन जीने की पद्धति का विकास करने वाले महापुरुषोंके मुखारविन्द से गाय को इस समष्टि सृष्टिकी धुरी मानी है- "गावो विश्वस्य मातर:" "गोषुलोका: प्रतिष्ठिता:" "भूत भव्यस्य मातरम्" "मातर: सर्व भूतानाम्" ये सारे पौराणिक वैदिक और संहिता के सूत्र गाय की महत्ता को प्रतिपादित करते हैं कि गाय में ही समस्त लोक प्रतिष्ठित हैं, उस महिमा को, महत्ता को समझने की कोशिश करेंगे।

गाय अतीत में भी सबकी माँ थी, वर्तमान में भी है और आगे भी रहेगी। "मातर: सर्व भूतानाम्" व्यष्टि और समष्टि जितने महाभूत हैं उन सबकी गाय माँ है, सबको जीवनी शक्ति प्रदान करती है। गाय मनुष्यों को, पशु-पक्षियों को, देवताओं को, ऋषियों को और पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश और सूर्यको भी पोषण प्रदान करती है। इसलिये वह समस्त भूतों की माँ कहलाती है। गायकी महिमा करोड़ों-2 वर्ष पहले कल्पके आदि में ही कल्पजीवी महापुरुषों ने मानव कल्याण के लिये, मानव

हित के लिये, सृष्टि को सुसंचालित करने के लिये समझ ली थी एवं सम्पूर्ण गोविज्ञान मानव जाति को दिया था।

ऋषि और कृषि को भारतीय सनातन संस्कृति के दो मुख्य आधार माने गये हैं। ऋषि और कृषि दोनों की जननी गाय है। ऋषि का जन्म भी गाय से होता है और कृषि का जन्म भी गाय से होता है। ऋषि की ऋतम्भरा प्रज्ञा गो उपासना से प्रकट होती है और कृषि के आने से तथा भूमि को उर्वरा बनाने के लिये गाय की ही आवश्यकता होती है। यह पृथ्वी माता हमें अन्न, फल,औषधियाँ आदि देती है। वह गाय के गोमय से आहार करके ही दे सकती है। उनके बिना यह निर्जीव होती है और कृषि को जोतने के लिये ''वृषभ' भी गाय ने ही दिया है।

कहते हैं कि संसार में सबसे पहले कृषि का आविष्कार भारत में हुआ। पहले सूर्यवंश में एक राजा ऋषभदेवजी हुए। उन्होंने और बाद में द्वापर में भगवान् बलरामजी ने किसानों के लिये कृषि विज्ञान का निर्माण किया। सम्पूर्ण कृषि विज्ञान गो केन्द्रित है। गाय के हटने के बाद वह कृषि जो ऋषि के साथ सम्बन्ध रखती थी नष्ट हो गई। ऋषि और कृषि दोनों को समानता दी जाती थी वह इस कारण कि ऋषि संसार के सभी मानवों के मन मस्तिष्क का पोषण करता है और कृषि सभी के शरीरों का पोषण करती है। अगर वह कृषि गोकेन्द्रित न रहे, गो आधारित न रहे तो वह कृषि पोषण की जगह सबके संहार में कारण बनती है।

सज्जनों ! इस संसार में कोई ऐसा प्राणी आज तक न सुना है, न पढ़ा है, न देखा है कि जिनके मल से मलिनताएँ मिटती हो। जिनका मल मलिनता को मिटाता हो ऐसा एक भी प्राणी कहीं देखने में, पढ़ने में और सुनने में नहीं आया। चाहे वह पीर हो, पैगम्बर हो, सिद्ध हो, संत हो, अवतार हो पर ऐसा कोई नहीं है कि जिनका मल शुद्ध हो, जिसे अशुद्ध जगह पर लेपा जाय जिससे वह जगह शुद्ध एवं पवित्र हो जाये। गाय को छोड़कर ऐसा कोई प्राणी नहीं है जिसके मल में इतनी शक्ति है। जिसके मल की बराबरी कोई नहीं कर सकता है उस गाय की महिमा, उनकी सत्ता, उसकी उपादेयता का जो विज्ञान है उसका वर्णन करने का सामर्थ्य स्वयं भगवान् व्यास और भगवान् गोविन्द में भी नहीं है। इसलिए वे अपने को गाय का ऋणी मानते हैं।

भगवान् गोविन्द गाय के रक्षण के लिए, गाय की सेवा के लिये इस भूमि पर गोलोक से आते हैं। गो के लिये ही भगवान् के अवतार भारत वर्ष में होते हैं। संसार के किसी देश में भगवान् का अवतार नहीं हुआ, पीर हुए, पैगम्बर हुए, संत हुए पर अवतार केवल भारत में ही हुए। ऐसी कौनसी शक्ति भारत के लोगो में है जो उस सर्वव्यापक निरामय सच्चिदानंदघन को इस पृथ्वी पर उतार सके? ऐसा कौनसा बल भारतवासियों के पास है? कौनसा ऐसा आधार है कि परमात्मा को और कोई उतार नहीं सकते और भारत के लोग ही उतारते हैं? तो

सज्जनों! उसका कोई आधार है, बल है, कोई सामर्थ्य है तो वह है गाय। गाय के कारण ही सर्वव्यापक सच्चिदानंदघन परमात्मा गोलोक से नीचे उतरते हैं, गाय ही उनको नीचे उतारती है।

गाय के कारण मानव जाति को ऋषि मिला, गाय के कारण मानव को परमात्मा मिला और गाय के कारण मानव को मानव जीवन जीने की कला मिली। गाय से ही यह सब कुछ मिला है, यह सार्वभौमिक सत्य है। कोई दुराग्रह से, पूर्वाग्रह से या उनके स्वाभाव के कारण इस सृष्टि को विखण्डित, मानव जाति और सम्पूर्ण जीव जगत को विखण्डित, विकृत और विषैला बनाना चाहता हो तो वह इस बात को स्वीकार न करें वह अलग बात है, पर वास्तव में जो अपना व सम्पूर्ण संसार का हित चाहते हैं उनके लिये यह सार्वभौम सत्य है कि गाय इस समष्टि प्रकृति में जितनी भी विकृतियों मानव भूलों के कारण होती है, उन सबका शमन करती है।

गाय मानव के द्वारा फैलाये गये विष का शमन करके सृष्टि को पुनः जीवनी शक्ति से भरती है। वह शक्ति केवल गाय में ही है। गाय एक ऐसा प्राणी है जो इस समष्टि प्रकृति को देता ही देता है, लेता कुछ भी नहीं है। सभी प्राणी लेते हैं, ले-ले कर जो देते हैं उसमें विकृति होती है, मृत्यु होती है पर गाय इस शरीर से ग्रहण करके पुनः इस सृष्टि को देती है उसमें जीवन होता हैं, प्राण होते हैं। गाय कचरा जींमकर (खाकर) भी

हमको बदले में दूध, गोमूत्र और गोबर देती है।

आज तक ऐसा कोई प्राणी नहीं हुआ जैसा मैंने पहले निवेदन किया कि जिसका मल पवित्र हो कि मलिनता को मिटाता हो। ऐसी कोई प्रयोगशाला नहीं जो गाय के गोबर के समान 50 ग्राम रसायन बना सके। संसार के सारे वैज्ञानिक, सारे राष्ट्रों के सारे धनी मिलकर भी गाय के शरीर में जैसा गोबर बनता है वैसा 50 ग्राम गोबर भी नहीं बना सकते। अभी तक बना नहीं है और आगे बन नहीं सकता।

गाय वास्तव में मृत्युलोक का प्राणी है ही नहीं। यह तो गोलोक का प्राणी है। गाय का पृथ्वी पर रहते हुए भी गोलोक से निरन्तर सम्बन्ध बना रहता है। यही गाय की विशेषता है। निरन्तर गोलोक से सम्बन्ध बने रहने के कारण इनके शरीर में से सत्व का सृजन होता है। गाय के पाँव पृथ्वी पर जहाँ स्पर्श होते हैं, पृथ्वी की रज आकाश में उड़ती है तो यह रज इतनी पवित्र मानी जाती है कि रज के उड़ने का समय सांयकाल का होता है उसे हमारे पूर्वजों ने गोधूलि वेला कहा।

कोई और मुहूर्त, ग्रह, नक्षत्र आदि देखने की आवश्यकता नहीं जब गायों के चरणों की रज आकाश में उड़ती हो तब वह समय और वह स्थान सब तरह से मंगलमय होता है। ऐसी शक्ति गाय के पाँवों से स्पर्श होकर रज में आ गयी। गायों के पाँवो से वह शक्ति आ रही है जो गोलोक में है। गायों के रोम से वह शक्ति

आ रही है, गाय के श्वास और प्रश्वास से वह शक्ति आ रही है। गाय के गोबर, गोमूत्र और दूध से वह शक्ति आ रही है। गाय जहाँ भी खड़ी है वह अपने चारों तरफ सात्विक जीवनी शक्ति का निर्माण करती है। यह सारी बातें अक्षरशः सत्य है, पर इनको हम प्रमाणित करके दे सकें ऐसी हमारे पास कोई प्रयोगशाला नहीं है। हमें तनिक भी संदेह नहीं है इनमें।

हम जो सुन चुके हैं और जीवन में अनुभव कर चुके हैं और जो कह रहे हैं उससे कई गुणा अधिक महिमा गाय की है और कई गुणा अधिक शक्ति गाय के गव्यों में है। जिन लोगों को इस विषय में जरा सा भी संदेह हो वे इन गोउत्पादों को संसार की किसी भी प्रयोगशाला, अनुसंधानशाला में ले जाकर प्रमाणित कर सकते हैं। अगर यह जो कहा जा रहा है इसमें कोई कमी हो तो ईसा को लोगों ने जिस तरह सूली पर चढ़ाया था, हमें, माने इस शरीर को भी उसी तरह सुई से भेद देना।

आप पंचगव्य का जीवन में प्रयोग करके देखें। हमारे पूर्वज कहते थे कि गोतत्वों को वही समझ सकता है जो गोव्रती हो। पूज्य आचार्य श्रीधर्मेन्द्रजी विराजे हैं, इनके पिता महान गोरक्षक श्रीमहामना महात्मा रामचन्द्र वीरजी महाराज जिन्होंने सन् 1940 से लेकर 1970 के दशक के मध्य में सम्पूर्ण भारत वर्ष में गोरक्षा और गोभक्ति का एक कम्पन पैदा कर दिया था वे गाय की महिमा जानते हैं। उनका इतना आभामण्डल फैल चुका

था पूरे देश में कि उस आभामण्डल के अन्दर हमारे सारे धर्माचार्य, साधु महात्मा खींचे चले आये थे। भले ही कोई कहता हो कि किसी और संगठन ने या किसी और योजना से यह सारा आन्दोलन हुआ था, पर यह वास्तविक सत्य है कि महात्मा रामचन्द्रवीरजी ने उस समय की गोभक्ति और गोरक्षा के भावों से विभोर होकर भारतवासियों को आन्दोलित किया। जब यह आन्दोलन 1966 में दुर्दैव से या भारतवासियों के किसी पाप से मन्द पड़ गया तब कुचला गया।

सज्जनों! इसके बाद स्वर्गाश्रम ऋषिकेश में महापुरुषों की, संतो की सभा हुई जैसा मैंने उन पूज्य संतों से सुना है जो उस सभा में थे। परम पूज्य श्री श्रीजी महाराज, परमपूज्य हरिनाथजी महाराज, परम श्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराज- इन चार महापुरुषों से मैंने प्रत्यक्ष देखी हुई घटनायें सुनी हैं। उन्होंने कहा कि आन्दोलन को कुचलने के बाद सभी लोगों ने बैठकर विचार किया कि "देखो आजाद भारत की सरकार ने गोभक्तों के साथ अत्याचार किया है। गोभक्ति को ठेस पहुँचायी पर अब आगे क्या करना है। तो वहाँ पर भारत के गोभक्तों में दो विचार पैदा हो गये, वे दो धाराओं में बंट गये।

एक भाग ने कहा कि अभी गोरक्षा के अनुकूल वातावरण नहीं है इसलिए अभी इस विषय को छोड़ देना चाहिए और दूसरे भाग ने कहा कि नहीं, जैसे दीपक जलाया जाता है और उस पर काई आ जाये तो उस काई

को हटाने पर दीपक की लौ अच्छी हो जाती है, वैसे ही यह गोरक्षा आन्दोलन का दीप जला हुआ है। यह घटना केवल काई है। हम काई को हटा दें तो यह दीप जलता रहे। अगर इस दीपक को बन्द कर दिया तो पुनः इसे जलाने के लिये दीया, बाती और घृत इन सबको इकट्ठा करना पड़ेगा और वह कठिन होगा। सज्जनों! ये दो बातें उस समय हुई थी। मैं ठीक तरह से नहीं कह सकता हूँ कि कौनसी बात चली और कौनसी रही, पर मेरे विचार से दोनों ही बातें चली। वह न करने वाले लोग भी रहे और करने वाले लोग भी रहे। दोनों धाराएँ आज भी चल रही हैं।''

हम गुजरात गोमहोत्सव और श्रीराम कथा समारोह के माध्यम से भारतवासियों और दुनिया के समस्त लोगों को केवल इतना ही संदेश प्रार्थना के रूप में देना चाहते हैं कि गाय (गोमाता) मानव जाति सहित सम्पूर्ण जीव जगत की सारी समस्याओं का समाधान लिये हुए इस पृथ्वी पर आयी हैं। जब कभी भी पृथ्वीवासियों के ऊपर मुसीबत आयी है तब उसका समाधान पूज्या गोमाता के माध्यम से ही हुआ। आज भी मानव सहित सम्पूर्ण जीव जगत के ऊपर बहुत बड़ा संकट मुँह फाड़े खड़ा है और उसके निवारण का उपाय भी गाय से ही मिलेगा और कहीं से मिल ही नहीं सकता। गो ही उसके समाधान का कारण बनेगी।

आज पृथ्वी, वायु, आकाश, अग्नि और जल में

भयंकर विष फैल चुका है। इतना ही नहीं मनुष्य के शरीर में तो अनेक रोग हुए पर उनके मन एवं मस्तिष्क में भयंकर विकार पैदा हो गये हैं। व्यष्टि और समष्टि जगत में देखा जाय तो सारे स्थूल जगत में स्थूल दृष्टि से और सूक्ष्म जगत में भावनात्मक दृष्टि से, विचारात्मक दृष्टि से विचार भी विषैले हो गये, भाव भी विषैले हो गये और व्यवहार भी विषैला हो गया है। जिससे दूसरों को क्षति पहुँचे, दूसरों को हानि हो ऐसा बोलना, ऐसा काम करना, ऐसा सोचना, ऐसी भावना करना, उनके द्वारा विष पैदा होता है, जहर पैदा होता है। किसी भी प्राणी को पीड़ा देने का भाव, चिन्तन, शब्द बिना कारण विष पैदा करते हैं।

सारे संसार को पीड़ा देने का षड़यन्त्र पिछली सात शताब्दियों से चल रहा है और उसका दुष्परिणाम यह है कि सारा ब्रह्माण्ड विष से भर गया। इस विष का शमन केवल गोमाता से ही हो सकता है। जो जहर आज से पहले छोड़ा गया है उसका शमन गाय के घृत से किया जा सकता है। पूरे ब्रह्माण्ड का शोधन किया जा सकता है। गाय की अधिकाधिक संख्या में उपस्थिति रहने से यह सारा वायुमण्डल शुद्ध एवं परिमार्जित हो सकता है, सात्विक जीवनी शक्ति से सम्पन्न हो सकता है।

गाय का गोबर इस पृथ्वी को नवजीवन प्रदान कर सकता है। गाय का गोमूत्र मानव जाति को नया जीवन प्रदान कर सकता है। गायका दूध नये गोकर्णों का निर्माण

कर सकता है। जिस गोकर्ण ने भागवत् की रचना की और धुन्धुकारी के जीव को सुनाई, ऐसे गोकर्ण का जन्म गो से हुआ था। पुनः भारत में गोकर्ण का अवतरण होगा। गोकर्ण उसे कहते हैं जो शरीर से स्वस्थ हो, हृदय से पवित्र हो और बुद्धि से विवेक सम्पन्न हो। ऐसा मानव गाय से ही मिल सकता है। गाय मनुष्य को शरीर से स्वस्थ, हृदय से पवित्र और बुद्धि से विवेकवान बनाती है। ऐसा मनुष्य ही इस पृथ्वी का श्रृगांर हो सकता है और ऐसे मनुष्यों की ही आवश्यकता इस पृथ्वी को है।

संसार के समस्त धर्मों, मजहबों, इजमों, पंथों आदि के लोग अपने अनुयायियों का, अपने देशवासियों का भला चाहते हैं, हित चाहते हैं। वे चाहते हैं कि हमारे सभी लोग आरोग्यवान रहे, सभी लोग संस्कारयुक्त शिक्षा प्राप्त करे और सभी स्वावलम्बी हो। ये तीनों चीजें गाय के माध्यम से होती है, होगी और हो सकती है। हमारे पास ऐसी कोई चीज नहीं है कि आप हमारी बात नहीं मानेंगे तो हम आपकी जगह को नष्ट कर देगें। हमारे पास ऐसी कोई कलम भी नहीं है कि अगर आप हमारे को नहीं मानेंगे तो हम आपको कैद में डाल देंगे। हमारे पास तो जो बोल रहे हैं ये शब्द हैं। अगर आप सबको ठीक लगता हो, आप सबके हित का हो तो आप इस बात को समझें। गाय सारे संसार का कल्याण करने वाली है। बिना किसी भेदभाव के सबका हित करती है।

गाय उसको मारने वालेको भी अमृतके समान दूध

देती है और पालने वाले को भी वही दूध देती है। ऐसा महान समतानिष्ठ या कहें साम्यवादी, समरसतावादी गाय के समान कोई भी नहीं मिल सकता है। गाय सारे-के -सारे पंथ, मजहब, इजब, व्यक्ति, जाति, पार्टी, राष्ट्र, देश, द्वीप, खण्ड आदि किसी का भी नहीं रखती है। जो गाय की सेवा करता है उनको गाय के सानिध्य से आशिर्वाद प्राप्त होता है। गाय को जो मारता है उनको गाय की क्रंदन से शाप मिलता है।

पर वह माँ है और माँ को बच्चा मारता है तो भी माँ कहती है कि मेरा बच्चा है। गाय माँ है, गाय में श्राप देने की अद्‌भुत शक्ति है। गाय के साथ इस समय जो अत्याचार हो रहे हैं, अगर गाय में मातृत्व न होता तथा वह अपने सामर्थ्य का उपयोग करती तब यह सारा संसार उसी क्षण भस्म हो जाता या सातवें पाताल में घुस जाता। पर वह माँ है, वह श्राप नहीं दे रही है। आज जिस गाय ने करोड़ों-करोड़ों वर्षो से मानव जाति को जीवन निर्वाह का पोषण दिया, शुद्ध वायुमण्डल दिया, जीवनी शक्ति से सम्पन्न यह समष्टि प्रकृति दी, ज्ञान-विज्ञान दिया, पवित्रता दी, बुद्धि दी, ऋतम्भरा प्रज्ञा दी और दे रही है, पर आज हमें हमारे अज्ञान के कारण गाय की जरुरत नहीं दिख रही है तो हमने गाय के साथ कैसा व्यवहार किया? गायों की पहले क्या स्थिति थी?

दूसरे देशों का इतिहास नहीं पढ़ा न किसी देश में गया हूँ पर भारतवर्ष में गायों के लिये बड़े-बड़े अभ्यारण्य

थे जिन्हें हम गोचर भूमि कहते थे। अतः गोचर भूमि की इंच भी जमीन कोई नहीं ले सकता था और जो कोई लेता था तो वह सबसे भयंकर अपराधी माना जाता था। अन्त्यज भी उनकी दृष्टि पड़ती तो भोजन नहीं करते थे। इतना अपराधी माना जाता था गोचर को हड़पने वाला व्यक्ति।

हमारे वैदिक काल में जो भारत का निर्माण किया गया था उस समय वहाँ ग्राम व नगर के साथ में उसके लगती हुई कृषि और आवास के अतिरिक्त जो भूमि होती थी उसे गो के चरने-विचरने और निवास के लिये छोड़ी जाती थी उसे गोचरभूमि कहा जाता था। वो गोचरभूमियाँ थी वो कहाँ गयी? कौन लूट ले गया? वे किसी कानून से नहीं धर्म से बनी थी।

धर्म जीवन होता है। भारत का निर्माण किसी कानून से नहीं हुआ है, धर्म से हुआ है। धर्म की पुस्तक, धर्म का संविधान वेद है, वेद का पहला शब्द प्रणव है। प्रणव ही धर्म था, प्रणव ही संविधान था। उसी से इन व्यवस्थाओं का निर्माण हुआ था। वह प्रणव प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में रहता है। आदर करने से वह प्रकट होता है और उसका निरादर करने से छुपा हुआ रहता है।

उस जमीन को, उन गोचरभूमियों को कौन हड़प गया? गोचरभूमियों को सबने लूटा। मुगलों ने लूटा, पठानों ने लूटा, पुर्तगालियों ने लूटा, अंग्रेजों ने लूटा और उनके लूटते-लूटते भी गोचरभूमि बच गयी उसको उन्हीं

के द्वारा स्थापित वर्तमान भारत के शासकों ने नष्ट किया। गोचर सारे नष्ट हो गये। गोचरों में गायें रहती थी। गोचरों में गायों के लिये अभयारण्य थे। गोचर समाप्त हो गये। फिर दूसरा स्थान गाय का था कृषि। किसान के पास वहाँ पर ट्रेक्टर ले आये। गाय खड़ी कहाँ रहे? उनके सेवा की बात तो दूर रही, गाय खड़ी कहाँ रहे ऐसी बुरी स्थिति बना दी। खेतों में ट्रेक्टर, गोचरों में रेलें, सड़कें, फैक्ट्रियें और न जाने क्या-क्या? अब गाय के रहने के लिये स्थान कहाँ? व्यवस्था तो यह थी कि गाय सर्वत्र थी, सब जगह थी अब गाय को न तो गुरुकुलों में जगह है, न खेतों में, न गोचरों में और न घरों में।

ऋषियों के पास हजारों-लाखों गायें होती थी। वे गुरुकुल विश्वविद्यालय होते थे। स्वावलम्बी होते थे। जमीन, पानी, फल और गाय उनके पास थी। वहाँ नियम उनके चलते थे। राजा के नहीं। ऐसे में क्या करेंगे? अब वह कहाँ गया? हमारी यही प्रार्थना है कि सज्जनों! वैदिककाल की जो व्यवस्था थी वही स्थापित हो ऐसा नहीं कहते, परन्तु गाय के बिना जीवन नहीं रहेगा यह हम कह रहे हैं। इसलिये वैदिककाल के समान नहीं, पर कोई तो ऐसी व्यवस्था हो कि हम गाय के साथ रह सकें और गाय हमारे साथ रह सके। ऐसा करना ही सबके हित में है। गाय की बात सबके हित की बात है।

अगर मानव को स्वस्थ रहना है, परमात्मा की प्राप्ति करनी है, जीवन का कल्याण करना है, प्रेम और

शान्ति से रहना है तो गाय अतिआवश्यक है। वह गाय आदर पूर्वक पाली जाये। जब आदर पूर्वक गोमाता को घर में रखेंगे तो वो हमारा बच्चों की तरह रक्षण करेगी, हमें वो सब कुछ देगी जिसकी इच्छा हमारे भीतर होगी। गाय को रखने के लिये सबको समझाना पड़ रहा है, पर यदि गाय को अपने घरों में रख लोगे तो गाय को समझाना नहीं पड़ेगा कि वह हमारा हित करे। उसके साथ रहने से वह सब स्वतः हो जाता है जो हम चाहते हैं, जो हमारे हित के लिये आवश्यक होता हैं। इस उम्मीद के साथ कि आप गैया मैया को आदर सहित अपने-अपने घरों में पुनर्स्थापित करेंगे, भगवान भास्कर के श्रीचरणों में अपनी वाणी को विराम देते हैं। एक बार पुनः आप सभी का सादर अभिनन्दन!

जय गोमाता ! जय गोपाल।

❁❁❁❁❁

।। श्री सुरभ्यै नमः।।

9

मानव किसे कहते हैं

आज की आयोजित धर्मसभा के इस आसन पर विराजमान पूज्य संतवृंदों के चरणों में वंदन, अतिथिगणोंका अभिनंदन, उपस्थित धर्मनिष्ठ, कर्तव्यपरायण गोभक्त सज्जनों, माताओं, बहनों, बालकों! आप सभी का सादर अभिनन्दन ! जय गोमाता ! जय गोपाल!

सज्जनों! मानव क्या है और मानवका जीवन क्या है? मानव किसे कहते हैं और जीवन किसे कहते हैं? इन दो बातों को हमें आज की इस धर्मसभा में सुनना, सुनाना और समझना है।

सज्जनों! मानव किसे कहते हैं और जीवन किसे कहते हैं? तो आप कहोगे यह तो हम समझे हुए हैं। मानव इस शरीर को कहते हैं, जीवन हम जी रहे हैं उसे कहते हैं। नहीं भाई! न तो इस शरीरका नाम मानव है

और न ही हम जो जी रहे हैं वह जीवन है। हाँ मानवता का आधार यह शरीर अवश्य है। मानवता साध्य है और यह शरीर उस साध्य का साधन है। पर शरीर ही मानव नहीं है।

दूसरी बात आप कहोगे, हम जी रहे हैं यही जीवन है, तो यह जीवन नहीं है। क्यों नहीं है? क्योंकि आप आज से दस साल पहले थे, ऐसे आज नहीं रहे और आज जिस स्थिति में हैं ऐसे दस साल के बाद नहीं रहेंगे। तो जो वस्तु घटती हो, बढ़ती हो, नष्ट होती हो उसको जीवन नहीं कहते हैं। उसको तो मृत्यु कहते हैं, मृत्यु। जीवन उसे कहते हैं जो उत्पन्न न हो, घटे नहीं, बढ़े नहीं, मरे नहीं, नष्ट न हो। यह जीवन नहीं है, यह जो हम देख रहें हैं शरीर, यह तो उस तक पहुँचने का साधन है।

सज्जनों! यह जो मानवता की और वास्तविक जीवन की दो बातें हमारे सामने हैं, इन पर चर्चा करने से पहले एक प्रार्थना और करूँगा कि पृथ्वी पर गायों की जो पीड़ा है, गायों को जो दुःख है, गायों की जो उपेक्षा है उस उपेक्षा को मिटाने वाला, दुःख को मिटाने वाला, पीड़ा को मिटाने वाला, न कोई व्यक्ति, न कोई समाज और न कोई सरकार है। कोई नहीं है, किसी को कोई परवाह नहीं है। हाँ जितना उनका स्वार्थ हो उतनी परवाह रखते हैं, उससे अधिक नहीं रखते हैं।

महाराज ने अभी यह कहा कि, मैंने यह समाचार दिया कि अमुक सरकार ने गोहत्या पर प्रतिबन्ध लगा

दिया। मेरी जानकारी में मैंने ऐसा समाचार नहीं दिया। क्योंकि 1995 में गुजरात, राजस्थान तथा मध्यप्रदेश तीनों सरकारों ने गोरक्षा एक्ट के बिल लाये थे। उनमें गुजरात सरकार के गोरक्षा एक्ट बिल के विरुद्ध में गोवध करने वाले कसाई न्यायालय में गये थे। न्यायालय ने कसाइयों के पक्ष में निर्णय दे दिया था। तो मध्यप्रदेश और राजस्थान में तो गोरक्षा एक्ट लागू हो गये और वहाँ पर आयोग भी बन गये तथा जहाँ कहीं गोवंश जाता था उसे पकड़ना भी शुरू कर दिया, पर गुजरात में ऐसा नहीं हो सका।

इससे पहले भी 1956 में भारत के लगभग सभी प्रान्तों में गोरक्षा एक्ट लाये थे और वे इस आधार पर लाये गये थे कि उपयोगी गोवंश का वध नहीं होना चाहिये। दूध देने वाली गायें और हल चलाने वाले बैलों को उपयोगी माना था। जो बैल हल नहीं चला सकता था, जो गाय दूध नहीं दे सकती उनके वध पर कोई रोक नहीं थी। पिछले 40-45 वर्षों से लगातार मांग बराबर बनी रही कि गोवध बन्द हो-गोवध बन्द हो। उन आधे -अधूरे कानूनों में गोहत्यारे छूट जाते थे।

तो सज्जनों! यह पुनः प्रान्तों के सामने प्रश्न आया। तो जो जिस-जिस प्रान्त में अधिक उदार और करूणाशील लोग रहते हैं ऐसे तीन-चार प्रान्तों में गोहत्या पर प्रतिबन्ध लगाने का प्रयास किया गया। उस प्रयास में उनको सफलता नहीं मिली, क्योंकि 1956 में भारत के सर्वोच्च

न्यायालय ने यह फैसला दिया था कि उपयोगी गोवंश हो उसका वध न हो। तो उस न्यायालय के फैसल के प्रकाश में अनुपयोगी गोवंश का भले ही वध हो, छूट दे दी गई थी। अब कोई राज्य कानून बनाये तो गोमांस के व्यापारी, गोमांस भक्षी और गाय की हत्या करने वाले लोग मिलकर कोर्ट में, न्यायालय में जाते हैं, संसद में जाते हैं, विधानसभा में जाते हैं। जहाँ उनकी चलती है वहाँ चलाते हैं।

इस बार यह जो है 1995 में कसाइयों द्वारा जिस रिट को, जिस विधान को चुनौति दी गई थी, उसी चुनौति के अंतर्गत गुजरात के न्यायालय ने कसाइयों के पक्ष में फैसला दिया कि हाँ अनुपयोगी गोवंश पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है। उसके बाद भारतभर के लोगों ने यह प्रयास किया कि भाई न्यायालय के द्वारा एक बार ऐसा फैसला आना चाहिये कि गाय किसी भी स्थिति में अनुपयोगी है ही नहीं।

उसके लिये केन्द्र में एक राष्ट्रीय गोसेवा आयोग बना था। उसके 17 मेम्बर थे और वे छः महीने भारतभर में घूमे। उन्होंने गाय के जीवन पर, गाय से समाज को और प्रान्तों को मिलने वाले लाभ पर तथा गाय की उपस्थिति और अनुपस्थिति से हानि-लाभ का विवेचन किया और गाय के गव्यों पर अनुसंधान की हुई रिपोर्टों को एकत्रित किया। उन सबको इकट्ठा करके 700 पेजों की एक रिपोर्ट बनायी और वह केन्द्र सरकार को दी कि

गोवंश किसी भी स्थिति में अनुपयोगी नहीं है और गो के बिना भारत की कृषि समाप्त हो जायेगी तथा सारा राष्ट्र और राष्ट्रवादी रुग्ण हो जायेंगे। जब तक इस राष्ट्र में गाय नहीं आयेगी तब तक इस राष्ट्र में शान्ति, समृद्धि, विकास और शौर्य, ये गुण नहीं आ सकते। उत्तरोत्तर पतन होगा।

इस रिपोर्ट पर उस समय की सरकार कोई निर्णय नहीं ले पायी। कई कारण बने और वह रिपोर्ट ऐसे ही पड़ी रही। उस रिपोर्ट को अभी सर्वोच्च न्यायालय को दिया था और कारण बना था वह गुजरात हाईकोर्ट का फैसला। उस फैसले को लेकर हम लोग सर्वोच्च न्यायालय गये थे और सर्वोच्च न्यायालय ने उन दस्तावेजों का अध्ययन करके यह निर्णय दिया था कि सम्पूर्ण भारत में किसी भी तरह के गोवंश की हत्या करना अपराध है, इतना निर्णय दिया था। अब जो बात है उस निर्णय को, कानून को क्रियान्वित करने की वह है विधायीपालिका की, सरकार की।

मुझे पता नहीं है कि गुजरात सरकार ने इस कानून को क्रियान्वित किया या नहीं। क्योंकि हमें सुनने में आता है कि गुजरात में से बहुत सा गोवंश वध के लिये महाराष्ट्र जा रहा है और खुद गुजरात में ही अहमदाबाद, वीरमगाम, मियाँगाम, कर्जन और ऐसे कई स्थान हैं जहाँ पर कत्लखाने हैं और गो का वध हो रहा है। ऐसा मैंने सुना है, देखा नहीं है एक भी कत्लखाना। इसलिये मैं

किसी की झूठी प्रसंशा या झूठी निन्दा इस धर्मसभा में नहीं करना चाहूँगा। हम अपेक्षा रखते हैं कि गुजरात की प्रजा, प्रजा के भावों के अनुरूप गुजरात की सरकार सम्पूर्ण गोवंश संरक्षण और गोपालन का नियम बनाकर मंत्रालय बनाये गुजरात में, जिसका नाम गोसंवर्धन-गोपालन मंत्रालय हो। ऐसी अपेक्षा करते हैं, पर ऐसा हुआ अभी तक कुछ नहीं। आशावादी हैं कि होगा, यह स्पष्ट कर दिया।

दूसरी बात यह कि गोसेवा का कार्य किसी दल का, किसी समाज का, किसी सम्प्रदाय का, किसी वर्ग का, किसी व्यक्ति का नहीं है। यह अमुक व्यक्तियों, समाजों के लिये आदरणीय हो और दूसरों के लिये अनादरणीय हो ऐसा नहीं। यह हम सभी का है जो गाय को मानने वाले हैं। गाय को जो मानने वाले लोग हैं वे इस अभियान से जुड़ेंगे ही। हम चाहते हैं सभी जुड़ें, सभी की गाय है।

सभी दल, पंथ, सम्प्रदाय, मजहब-इजम सबके लिये समान रूप से गाय अपने गव्य और आशीर्वाद देती है और इसी चाह से हम लोग घूम रहे हैं, चिल्ला रहे हैं। फिर अमुक दल, पंथ, सम्प्रदाय, मजहब-इजम के लोग नहीं जुड़ते हैं तो हम क्या कर सकते हैं और जो जुड़ रहे हैं तो उनको क्या धक्का दें? हमें तो चाहिये सभी जुड़ें। जो गाय से श्रद्धा रखता हो वो जुड़े, आये।

राम दड़ी चौड़े पड़ी, जो कोई खेले आय ।

दावा नहीं रामदास का, जीते जो ले जाय ॥

यह कार्य सभी के लिये है। आइये! आप सभी दलों के, जातियों के, पार्टियों के, सभी इसमें सम्मिलित हो जाइये, सभी इसका सम्मान कीजिये और आपको ठीक लगे कि हाँ गाय की बात ठीक है तो इसको समर्थन दीजिये तन से, मन से, भाव से, सब तरह से। जब ऐसा करेंगे तभी तो गोरक्षा होगी, तभी तो गोपालन होगा। तो सज्जनों! इसी अपेक्षा के साथ हम सभी से निवेदन करते हैं। तो यह पहला हमारा संदेह था उसका समाधान हो गया।

अब हम उन दो बातों पर आते हैं जिनको हमने पहले उठाया था कि भाई मानव क्या है और जीवन क्या है? अभी हमारे महाराजजी बता रहे थे, पूज्यश्री प्रज्ञाचक्षु महाराजजी के बारे में। वे अपना नाम बताने की मनाई कर गये। पुस्तक में भी नहीं लिखने देते थे, शरणानन्दजी महाराज। तो हम बतायें आपको, उन्होंने बड़ी गहराई से इसका अनुसंधान किया, अपने जीवन में अनुभव किया और एक बड़ा सुन्दर सूत्र दिया कि भाई मानव कौन है? बोले मानव वह है जिसके अंदर कोई मांग हो और जिसके ऊपर कोई दायित्व हो। कोई जिम्मेदारी है और कोई मांग है, ये दो चीजें जिस तत्व में है, उसका नाम मानव है। यह तो हो गया मानव।

अब मानव की मानवता क्या? बोले मानव की मानवता यह है कि वह अपनी मांग पूर्ति के लिये सम्पूर्ण

पुरुषार्थ करे और अपने दायित्व को पूरी शक्ति के साथ निभायें। दायित्व का अर्थ होता है कर्तव्य। कर्तव्य का तात्पर्य यहाँ क्या है- दूसरों के अधिकारों की रक्षा। दूसरों के अधिकारों की रक्षा करना, इसका नाम कर्तव्य है। पेट भरने का नाम कर्तव्य नहीं है। कर्तव्य की शिक्षा जानवरों को नहीं दी जाती है। अगर पेट भरने के लिये कर्तव्य की शिक्षा देनी पड़ती तो जानवरों को देते।

कर्तव्य पेट भरने के लिये नहीं, कर्तव्य दूसरों के अधिकारों को सुरक्षित रखने तथा उनकी रक्षा करने के लिये है। दूसरे कौन? बोले भाई जहाँ आप जन्में हैं वह परिवार, वह समाज, आपका राष्ट्र और आपका शरीर भी दूसरा है। इस संसार में आपके सामने जो भी आते हैं सारे प्राणी वो आपसे भिन्न हैं। इन सभी प्राणियों के अधिकारों की रक्षा करना मानव का दायित्व है।

मानव की मांग क्या है? बोले मानव की मांग तो यह है कि वह कभी मरे नहीं, वह सब कुछ जान जाये और उसके सारे दुःख मिट जाये। यह मानव की वास्तविक मांग है। इस मांग की परिभाषा हमारे धर्म शास्त्रों ने तीन शब्दों में दी है- पहली मांग है सदा बना रहूँ। इस मांग को कहते हैं अमरता अर्थात अविनाशी तत्व की मांग। दूसरे शब्दों में इसे सत् की मांग कहते हैं। दूसरी चीज की मांग है- मैं सब कुछ जान जाऊँ, कोई अनजान में न रहे। इस मांग को कहते हैं चित् की मांग। यह ज्ञान हुआ। तीसरी मांग है- मेरे कोई दुःख न रहे। इस मांग

को कहते हैं रस की मांग, आनन्द की मांग। तो सत्-चित्-आनन्द की मांग जिसके अन्दर है और जिसके ऊपर दूसरों के अधिकारों की रक्षा के दायित्व का भार है, उसका नाम है मानव। यह हुई मानव की सम्पूर्ण परिभाषा।

जीवन क्या है? बोले जीवन वह है जिससे अभिन्न होने पर भय नहीं रहता, भिन्नता नहीं रहती, निरसता नहीं रहती और निर्बलता नहीं रहती। यह चार चीजें भय, भिन्नता, निरसता और निर्बलता जहाँ नहीं हो, उसका नाम है जीवन। उस जीवन की प्राप्ति कैसे होगी? बोले भाई उस जीवन की प्राप्ति होगी- प्राप्त साधन और सामर्थ्य का सदुपयोग करने पर। हमको जो शरीर, बुद्धि, इन्द्रियाँ आदि मिले हैं इनका ठीक तरह से उपयोग करेंगे तभी हमें वास्तविक जीवन की प्राप्ति होगी। जिस जीवन में रस है, प्रकाश है, नित्यता है ऐसा जीवन हमें तभी प्राप्त होगा जब हम प्राप्त शक्ति और सामर्थ्य का सद्व्यय करेंगे।

सज्जनों! विषय तो है गौ का और बात करते हैं आत्मा, परमात्मा, मानव, अविनाशी जीवन, रसममय जीवन, और प्रकाशमय जीवन की। तो इन दोनों का क्या सम्बन्ध है? इनका सम्बन्ध यह है कि वास्तव में हम लोग आए तो इसी जीवन को प्राप्त करने के लिये पर हम यह भूल गये हैं कि हमें कौनसा जीवन चाहिये? और यह भूल कैसे हुई? बोले- यह भूल हुई संग, संस्कार, आहार

और विहार से। आपने जिन लोगों का संग किया, आपको इसमें संस्कार मिले, जैसा आपने भोजन किया और जिस तरह का आप व्यवहार करते हैं उसी के आधार पर आपकी आंतरिक चेतना का विकास होता है। अगर ये चारों चीजें तामसी हैं तब तो आपके अन्दर मानवता नाम की चीज होगी ही नहीं, दानवता जरूर होगी।

मानवता, दानवता और देवता के बारे में फिर बता देते हैं- जो थोड़ा लेकर अधिक देता है उसका नाम है-देवता और जो जितना लेता है उतना देता है उसका नाम है-मानव तथा जो केवल लेता ही लेता है, देना किसी को नहीं चाहता है उसका नाम है-दानव और जो कुछ भी न लेकर सब देता ही देता है उसका नाम है-नारायण। देवता तो कुछ लेकर अधिक देते हैं, मानव जितना लेते हैं उतना देते हैं, दानव केवल लेते ही लेते हैं पर एक ऐसी भी सत्ता है वो केवल देती ही देती है, लेती नहीं है, उसका नाम परमात्मा है।

अब आप विचार करें कि अगर हम ऐसी सत्ता को प्रत्यक्ष आँखों से इस पृथ्वी पर देखने जायें तो कहाँ मिले? कोई मिल सकते हैं? हाँ हमें मिलते हैं, संतलोग परमार्थ के लिये हैं, वृक्ष परमार्थ के लिये हैं, जल परमार्थ के लिये है, ऐसा दीखता है। बात तो ठीक है पर ये कुछ न कुछ तो लेते ही हैं। यदि कुछ नहीं तो आपसे नमस्कार ही लेते हैं। तो आपको उस परमात्मा का प्रत्यक्ष मूर्तिमान रूप कैसे दीखे? कहीं है जो केवल देता ही देता है, लेता

कुछ नहीं? जो अपनी सभी चेष्टाओं से केवल देता ही देता हो, ऐसा कोई केन्द्र, ऐसा कोई बिन्दु, ऐसा कोई प्राणी, ऐसी कोई मूर्ति है? है तो अवश्य।

हम लोग देखो हिन्दु हैं और हमारी उपासनाओं के तीन स्तर है। जिसमें पहला स्तर है सगुण साकार, दूसरा स्तर है सगुण निराकार और तीसरा स्तर है निर्गुण निराकार। हम हमारे प्रभु के तीन रूप मानते हैं। हमारा प्रभु जो निर्गुण निराकार सर्वव्यापक सच्चिदानन्दघन है, वही इस जगत के रूप में परिवर्तित होता है, व्यक्त होता है उसको हम कह देते हैं सगुण निराकार। गुण है पर आकार नहीं है उसी में से हमारा तीसरा उपास्य का रूप बनता है वह है सगुण साकार। गुण भी है और आकार भी है। गुण और आकार वाले प्रभु की उपासना सर्वसाधारण के लिये सुलभ होती है और गुण व आकार न हो तो वह थोड़ी कठिन होती है। जिनमें गुण भी न हो, आकार भी न हो ऐसे निर्विष्ट-नित्यश परमात्मा की प्राप्ति किसी-किसी के लिये अपवादरूप में उपयुक्त हो सकती है।

तो सज्जनों! सगुण साकार स्वरूप आप कहेंगे मन्दिर में है। मन्दिर में तो श्रीविग्रह ही है। वो तो पार्थिव है। चिन्मय विग्रह कोई आपको मिलता है? बोले राम-कृष्ण आदि अवतार हुए थे। वो तो हुए थे, अपनी लीला करके उन्होंने अपने स्वरूप को समेट लिया। ऐसा कोई प्रभु का विग्रह नित्य, सतयुग, कलियुग, द्वापर, त्रेता आदि सभी

युगों में समान रूप से है क्या? जवाब नहीं देंगे, आता तो सबको है। हाँ, ऐसा है और उसी विग्रह का नाम पूज्या गोमाता है। गायें केवल देती ही देती है, लेती कुछ नहीं।

देखिये सज्जनों! इस संसार में इस तरह का कोई भी प्राणी नहीं मिलेगा जिसके सारे अपशिष्ट जो मल है, मूत्र है अर्थात् जो छोड़ी हुई वस्तुएँ हैं वे सारी पवित्र हो। आज तक ऐसा कोई भगवान के अवतार या महापुरुष का शरीर भी नहीं हुआ है। गाय के गव्यों (गामूत्र, गोबर, दूध, दही, छाछ, घी आदि) के सेवन से, गाय के निकट रहने से सात्विकता आती है। गाय के श्वास से ऑक्सीजन बढ़ती है। गाय के पांवों से स्पर्श होकर पृथ्वी मंगलमय हो जाती है और उसके कण जब ऊपर उठ जाते हैं तो उसे गोधूलि-वेला कहते हैं जो कि बिना पूछे बहुत बढ़िया मुहूर्त है। जिसके पांवों के स्पर्श होने से रज भी इतनी पवित्र हो जाती है और जिसके मल से मलिन स्थान पवित्र हो जाता है, वह गाय साक्षात् भगवान नारायण का विग्रह है। धर्म शास्त्रों में भी यह सूत्र है-'*गावो: साक्षात् नारायण विग्रहा*'

सज्जनों! गाय क्या-क्या देती है और वह न दे तो हमारे, हमारे राष्ट्र व समाज के क्या-क्या फर्क पड़ जाय? अब इन दो बातों को करके इस विषय को यहाँ विराम देंगे। देखिये, अगर हमको गोबर न मिले तो हमारी पृथ्वी मर जायेगी। केवल मर ही नहीं जायेगी हमारी पृथ्वी रोग और विष से व्याप्त हो जायेगी। अगर

गोमूत्र नहीं मिले तो हमारा जल दूषित हो जायेगा और घी नहीं मिला तो हमारा सूर्य कमजोर हो जायेगा, समुन्द्र के खारे जल को आकाश में ले जाकर मीठा बनाकर नहीं बरसा पायेगा। उनकी किरणें कमजोर हो जायेगी। गाय के दूध, दही, छाछ आदि नहीं मिले तो इस समाज का हृदय कलुषित हो जायेगा।

सज्जनों! गाय के पांवों का स्पर्श भूमि को नहीं मिला और वह रज आकाश में नहीं उड़ी तो हम सब अमंगलता में आ जायेंगे। गाय की श्वास-प्रश्वास पवन देवता को नहीं मिली तो पवन स्पन्दन रहित हो जायेगा। गाय का गोबर न मिला तो हमारी पृथ्वी की उर्वरा शक्ति नष्ट हो जायेगी, गाय का गोमूत्र नहीं मिला तो हमारा जल विकृत हो जायेगा, गाय के बिना हमारी प्राण वायु निष्क्रिय और निर्जीव हो जायेगी। गाय के न रहने से हमारा सौरमण्डल शक्तिहीन हो जायेगा। उससे जो हानि होगी उस पर आप लोग विचार करना।

गाय की कितनी महत्ता है इसको समझने के लिये मैं बातें कर रहा हूँ आपसे। यह एक तरह से मेरे द्वारा गो की पूजा है। मैं इसी ढ़ंग से पूजा करता हूँ गोमाता की। हाथ से कोई चारा-गोबर हर समय डाल नहीं सकता, आरती हर समय कर नहीं सकता। यह जो आपसे निवेदन कर रहा हूँ, यह आप सभी जनता-जनार्दन (यह भगवान का एक नाम है) की आराधना कर रहा हूँ। तो हम आपकी आराधना में प्रस्तुत कर रहे हैं कि गो की

महत्ता अगर आप समझेंगे तो ऐसा समझने वाला कोई व्यक्ति नहीं हो सकता कि वह गाय की उपेक्षा कर सके, प्रताड़ना कर सके, उनकी हत्या में हत्यारों के साथ सम्मिलित हो सके या उनका समर्थन कर सके।

आप शहरों में तथा गाँवों में रहते हैं, हम जानते हैं अच्छी तरह से। पहले आप गायें रखते थे। आप ही ने गोपालन संस्कृति का संदेश सारी पृथ्वी पर फैलाया है और आपकी ही नकल करके यूरोप और अमेरिका गाय की सेवा करके आज सारे संसार पर आधिपत्य जमाये बैठे हैं। वो सब आपकी ही नकल करके हुए हैं। हाँ, इतना जरूर है कि वो दूध के साथ-साथ बाद में गाय का मांस भी खा लेते हैं, इस कारण वे दानवों में हैं। पर वे दूध, दही, घी गाय का ही लेते हैं। तो उन्होंने आपकी जो गो-भक्ति थी, गो के प्रति आपकी जो श्रद्धा और समर्पण था उसको महत्व देकर गाय और गाय के गव्यों पर अनुसंधान किया है और उस अनुसंधान के परिणाम स्वरूप वो यह समझे हैं कि अगर निरोग रहना है तो, स्वस्थ रहना है तो, बुद्धिशाली रहना है तो, शौर्यवान रहना है तो, दृढ़ संकल्पी रहना है तो हमें गाय का घी, दूध, दही ही खाना होगा, भैंस का नहीं।

संसार भर में भारत और अफ्रीका को छोड़कर, जैसा हमने सुना है, भैंस का दूध कोई नहीं पीता है। भैंस के, दूध, दही, छाछ, घी आदि को आप सब अच्छी तरह से जानते हैं कि उनमें चर्बी व अत्यधिक वसा होती है

और वह खाने से हमारी प्राणवाहिनी नसों में जम जाती है। उसके जमने से प्राणों के संचार में अवरोध पैदा होते हैं जिससे दमा, श्वास, क्षय तथा बाद में हार्टअटेक जैसे भयंकर से भयंकर रोग उत्पन्न होते हैं।

हमारे धर्म शास्त्रों ने हमें यह हजारों साल पहले बता दिया था कि भैंस पर यमराजजी बैठते हैं या फिर शनि महाराज बैठते हैं। यमराजजी शीघ्र मृत्यु एवं काल के प्रतीक हैं तथा शनि रोगों के प्रतीक हैं। आपको शीघ्र और समूल नष्ट होना हो और अत्यधिक रोगों से ग्रस्त होना हो तो आप भैंस को पालिये, भैंस का दूध खाइये, भैंस का पौदला खेत में डालिये, भैंस का घी खुद खाइये, अपने बच्चों को खिलाइये, अपने देवताओं के देवालय में भी भोग लगा दीजिये जो हमारी देवी-संस्कृति, सनातन-संस्कृति जल्दी-जल्दी समाप्त हो जाये। और अगर आपको स्वयं को स्वस्थ रहना है, समृद्ध रहना है, स्थायी और दीर्घजीवी रहना है, अपने गौरव और गरीमामयी परम्पराओं को बनाये रखना है इस पृथ्वी पर तो भाई जरूरी है हम भैंस के दूध, दही, छाछ, घी को खाना छोड़ें।

धर्म शास्त्रों की दृष्टि से प्रत्येक प्राणी में तीन गुण होते हैं। इनमें से कोई एक गुण प्रधान तथा दूसरे गौण होते हैं। पशुओं में भी इसका विचार हुआ है, वृक्षों में भी हुआ है और पक्षियों में भी हुआ है। तो हम पशुओं की चर्चा करते हैं- ऊँट, बकरी, घोड़ा, हाथी आदि तो

रजोगुणी हैं, भैंस, सुअर, गधा आदि तमोगुणी हैं, केवल सतोगुण में एक गाय ही है। गाय सत्वप्रधान है और गाय के इस शरीर रूपी यंत्र से चारों तरफ सत्व का ही सर्जन होता है। गाय के गोबर से, गोमूत्र से, दूध से, दही से, घी से, श्वास-प्रश्वास से, स्पर्श होकर चलने वाली पवन से सत्व का प्रसारण और सर्जन इस सृष्टि में होता है। वह सत्व हमें कब मिलता है? तब, जब सत्व से आपूरित औषधि, अन्न, जल, हवा का सेवन करते हैं। तो इससे हमारा शरीर स्वस्थ रहता है, हृदय पवित्र रहता है और बुद्धि जागृत रहती है। बुद्धि जागृत रहने का अर्थ है हमारे भीतर सत्य-असत्य को समझने का विवेक बराबर बना रहता है।

इसीलिये हम प्रार्थना कर रहे हैं कि खाना ही है दूध, दही, घी तो भाई गाय का ही खाओ। अगर अनाज खाना ही है, सब्जी-फल खाने ही हैं तो गाय के गोबर से बनी खाद से उत्पन्न किया हुआ खाओ, नहीं तो फिर तेल खालो, हवा खालो। ये भैंस और डेयरियों का घी खा-खाकर आप बहुत बड़ा नुकसान कर रहे हैं। जमीनों में डीएपी, यूरिया, और कीटनाशक दवाइयें डालकर उसका उत्पन्न किया हुआ अन्न खाकर खुद रोगी हो रहे हैं और सारे समाज व राष्ट्र को रोगी कर रहे हैं।

गाय की रक्षा किसलिये करनी है? गोमाता के लिये आंदोलन किसलिये चला रहे हैं? क्या इससे केवल गाय का ही हित हो रहा है? आपको कोई समझ में नहीं आ

रहा है। यदि हम झूठे हों या शास्त्र झूठे हों तो हमें चुनौति दो आप या फिर इस बात को ठीक तरह से समझो, मनन करो और क्रियान्वित करो।

गाय से ही मानव में मानवता, ऋषियों में ऋषित्व, संतों में संतत्व और माताओं में वात्सल्य आता है। अगर गाय नहीं रहेगी तो ये सारे सद्गुण विलुप्त हो जायेंगे। मानव हृदय दानव हृदय बन जायेगा। माँ और पुत्र का वात्सल्य भाव समाप्त हो जायेगा। गाय से ही पृथ्वी को सात्विक आहार मिलता है। जब गाय नहीं होगी तो इस धरती को आहार नहीं मिलेगा। पृथ्वी से हमें अन्न, फल, सब्जियों, चारा, वृक्ष मिलने बन्द हो जायेंगे। बिना आहार के धरती की हरियाली समाप्त हो जायेगी।

इसलिये गाय की रक्षा और सेवा मानव सेवा ही है। बिना गाय के मानव सेवा की बात तो दूर रही, मानव, मानव ही नहीं रहेगा। तब सेवा क्या दानवों की करोगे? गाय के लिये जो कुछ भी सेवा की जा रही है, परिणाम में उसका लाभ सबसे अधिक मानव को ही मिलना है। जो मानव सेवा की बात करते हैं, उनको बताना चाहते हैं कि मानव की यदि सबसे बड़ी सेवा आप करना चाहते हो तो धरती पर गोवंश की संख्या बढ़ा दो। जिस मानव की सेवा करनी हो उसे प्रत्यक्ष गोसेवा से जोड़ दो। उसके सब दुःख दर्द दूर हो जायेंगे। उसके लोक और परलोक दोनों सुधर जायेंगे।

7 वर्ष पहले कहीं आंदोलन हुआ और गोभक्तों

को जेल में डाल दिया तो हमने कहा– गोसेवा के लिये जो लोग गये उनको जेल में क्यों डाला? आपको अगर इतना गो से परहेज है, गो आपकी इतनी शत्रु है तो गाय का महात्म्य बताने वाले धर्मशास्त्रों में आग लगा दो और धर्म की बात बताने वाले संतों को बुलडोजरों से कुचल डालो फिर आप निश्चिन्त हो जाओगे।

यहाँ सब तरह के लोग विराजमान हैं। काश्तकार हैं, व्यापारी हैं, कर्मचारी हैं, नेता हैं, समाज के प्रमुख लोग हैं, माताएँ हैं, पुरुष हैं, सभी हैं और हम थोड़ी–थोड़ी संख्या में होते हुए भी सम्पूर्ण समाज का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। ऐसे सम्पूर्ण घटकों से हमारी प्रार्थना है कि अगर आपको संदेह हो तो पूछिये, चुनौति दीजिये और संदेह न हो तो सज्जनों! आप गोव्रती बनें। घर में गाय न पलती हो तो गायें गोशालाओं में रह जायेगी, वहाँ चारा डालिये पर दूध–घी तो गाय का ही लो। महंगा से महंगा लो पर गाय का ही लो। ऐसा करने से आपका स्वास्थ्य, आपका हृदय, आपकी आत्मा तो शुद्ध होंगे ही साथ में समाज का बहुत बड़ा हित होगा और इस सृष्टि के रचियता की आपको प्रसन्नता प्राप्त होगी। बस यही बात है कि मानव का जो स्वरूप है, उसकी इस सृष्टि पर जो उपयोगिता है उसके अनुसार वह काम में आ जाये।

मानव का बस इसीलिये सर्जन किया गया है कि यह मानव शरीर में आकर अपनी आत्मा का कल्याण

करे, जगत का हित करे और परमात्मा की प्रसन्नता प्राप्त करे। ये तीनों चीजें गोसेवा में, गोपालन में, गोरक्षण में और गोउत्पादों के सेवन में हैं और ये तीनों आपके जीवन में उतर जायेगी। इसलिये हम आपको केवल एक मंत्र देते हैं-गो-गो-गो-गो-गव्य! गो और गो-गव्य। इनको आप-हम पकड़ लें तो हमारी संस्कृति, हमारा सत्य, हमारा गौरव हमारे हृदय में, हमारे जीवन से ही प्रकट होगा, बातों से नहीं होगा। बातें कर लेंगे पर जब तक वो बातें हमारे जीवन में नहीं दिखेगी तब तक उनका प्रभाव न तो राष्ट्र पर पड़ेगा और न संसार के अन्य लोगों पर ही पड़ेगा और उससे कोई लाभ नहीं होगा।

इस कारण इन बातों को, इन भावों को हम सब अपने जीवन में उतारें, सभी गोसेवी, गोव्रती और गो की रक्षा करने वाले बनें। सारे के सारे गोभक्त शीघ्रातिशीघ्र अपने हृदय को पवित्र करें, अपनी बुद्धि को ज्ञान के आलोक से आलोकित करें और परमपिता परमात्मा की प्रसन्नता हम सबके ऊपर बरसे। इन्हीं भावों के साथ अपनी वाणी को भगवान भास्कर के परम पावन चरणों में विराम देता हूँ। एक बार पुनः आप सभी का सादर अभिनन्दन!

जय गोमाता! जय गोपाल!

❁❁❁❁❁

।। श्री सुरभ्यै नमः।।

10

गोवर्धन पूजा

गोवर्धन पूजा का हमारे मानवीय जीवन के साथ क्या सम्बन्ध है? शास्त्रों में दो आख्यान पढ़ने और सुनने को मिलते हैं। हमारी आदिकालिन परम्परा है कि दीपावली के दूसरे दिन गोबर-धन की पूजा होती थी। गाय का गोबर है, उसकी पूजा होती थी। पूजा होने का अर्थ था कि कुछ समय गोबर का पूजन करके वहाँ से स्थापित कर कृषि भूमि में डाला जाता था। आज से हमारे खेतों में गाय के गोबर की खाद पूजा के बाद भाईदूज के दिन से जाती थी। इस दिन गोबर खेत में पहुँचने से कार्तिक द्वितीया के दिन गाय के गोबर और पृथ्वी माता का सम्बन्ध है। यानि गाय के गोबर से भूमि माता को आहार मिलता है। भूमि माता को भोजन कराया जाता

है, भोजन कराने से पूर्व की तैयारी है गोबरधन पूजा। गोबर धन का आर्थिक, आरोग्य और स्वास्थ्य के लिये यह दिन गायों के लिये चुना गया। इन सभी दृष्टियों पर हमें पर्याप्त प्रकाश मिलता है।

एक कथा भगवान श्रीकृष्ण के लीलावतार के समय की लीलाओं में आती है। भगवान श्रीकृष्ण के पूर्वज जो दीपावली के दूसरे दिन देवताओं एवं देवताओं के राजा इन्द्र की पूजा करते थे। भगवान श्रीकृष्ण ने कहा कि अबकी बार हम देवताओं एवं देवताओं के राजा इन्द्र की पूजा नहीं करेंगे। बोले बाबा- यह गिरीराज पहाड़ है, इस पहाड़ की पूजा करेंगे। बाबा बोले- इस पहाड़ की पूजा करोगे तो देवता नाराज हो जायेंगे। पूजा तो देवताओं की करनी चाहिये। भगवान बोले बाबा- जो देता है उसे देवता कहते हैं।

हमें अदृश्य दृष्टि से कौन-कौन देता होगा वह तो वे जाने परन्तु प्रत्यक्ष दृष्टि से देखा जाये तो यह पहाड़ वन, आगोर और गोचर हमें देते हैं। जल पहाड़ों के माध्यम से ही पृथ्वीवासियों को मिलता है। पहाड़ों पर वृक्ष हैं, वृक्षों से वाष्प बनती है, जब मानसून आता है तो बादलों को कहीं न कहीं टकराना पड़ता है। जब टकराने को कुछ भी न मिले तो ये पहाड़ उसके टकराहट के लिये हैं, इनके टकराहट से वर्षा होती है। वृक्षों, औषधियों, पशु-पक्षियों को तो जल मिलता ही है, इसके उपरान्त बहुत सारा जल पहाड़ एकत्रित करके इसके नीचे निवास

करने वाले मानव सहित सभी प्राणियों के लिये नदियों के रूप में, नालों के रूप में बारहमासी एवं वर्षादी नदियों के रूप में सभी को प्रदान करते हैं। जो अपनी जड़ों में एवं अपने अन्दर खाली भाग है उसमें बहुत सारे जल का संग्रह भी करते हैं। जो कभी कहीं कठिन परिस्थितियों में प्राणियों के काम आवे।

इस तरह भगवान ने पहाड़ का बड़ा महात्म्य बताया तो नंद बाबा चुप हो गये। बाबा के पास कोई प्रश्न ही नहीं था। बोले बाबा इससे बड़ा कौन देवता हो सकता है? जो हमें जल दे, उससे सारा जीवन, सम्पूर्ण प्राणी जीवन जीवन्त हो, वृद्धित हो, संरक्षित हो, ऐसा प्रदान करे, उससे बड़ा देवता कौन होगा? जल से ही हमें सारी आवश्यक सामग्रियाँ प्राप्त होती हैं। जल ही जीवन है। जल जहाँ जगदीशा। तो बाबा बोले- तुम जैसे कह रहे हो वैसे ही कर लो। हमको तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर नहीं आता। तुम पता नहीं क्या-क्या प्रश्न करते हो? तो ठाकुरजी ने गिरीराजजी की पूजा करवायी। प्रत्यक्षरूप में पूजन किया और भोजन किया। वे लीला पुरुषोत्तम थे।

अब हम देखें कि हम क्या कर रहे हैं? हमारे यहाँ गिरीराज गोवर्धनकी पूजा होती है। गिरीराजजी को गोवर्धन इसलिये कहा कि इन्हीं के कारण गोवंश की वृद्धि हुई इसलिये इस गिरीराज पर्वत को ही गोवर्धन कहा है। यह गोवर्धन पूजन द्वापर में लीला पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण के समय प्रारम्भ हुआ और जो आदिकालीन

पूजन है। यह गोबरधन का पूजन है।

गाय के गोबर की पूजा ये दोनों ही पूजा इस दिन हुई। प्रतिपदा के दिन गोवर्धन की पूजा करवायी, दूसरे दिन इन्द्रजी नाराज हो गये कि अच्छा वे तो राजा हैं। सारी सृष्टि के राजा हैं, वे बोले की हमारी पूजा छोड़कर पहाड़ों की पूजा कराते हैं, देखते हैं तुमको पहाड़ कब बचाते हैं। फिर उन्होंने खूब मेघ बरसाये। इतने मेघ बरसे चारों तरफ कि नदियों ही नदियों चलने लगी, गाय, ग्वाले, गोप आदि सभी डूबने लगे। तो भगवान श्रीकृष्ण ने उन्हीं गिरीराजजी को छत्री बनाया और कहा कि आजाओ सभी लोग मेरा साथ दो हम इन गिरीराजजी को उठाते हैं और इसके नीचे घुस जाते हैं तो इस जल के प्रवाह से बच जायेंगे।

ठाकुरजी, गवालबाल और गोप सभी लोग लगे तो गिरीराजजी को उठा लिया, बीच में श्रीकृष्ण खड़े हो गये चारों तरफ ग्वाल बाल, गोप-गोपियाँ ने अपने-अपने साधनों से गिरीराजजी को उठाने में सहारा दिया। इन्द्र बरसते रहे। सात दिनों तक बरसे, आठवे दिन (गोपाअष्टमी) को इन्द्र देवता भगवान श्रीकृष्ण का पूजन व आरती करने इनके चरणों में आये और माँ कामधेनु वहाँ भगवान श्रीकृष्ण का अभिषेक करने के लिये आयी। कामधेनु ने श्रीकृष्ण का अभिषेक किया और इन्द्रजी ने पूजन किया। उस दिन से भगवान श्रीकृष्ण का नाम पड़ा गोविन्द। भगवान श्रीकृष्ण ने गाय को प्रधान रखकर गोवर्धन की

पूजा करवायी थी, इसके माध्यम से गोवंश की वृद्धि होती है। पहाड़ होंगे तो बारिस होगी, बारिस होगी तो जल होगा और जल होगा तो चारा, अनाज आदि होंगे और यह सब होगा तो गाय रहेगी। गाय रहेगी तो मनुष्य रहेंगे और असंख्य प्राणियों को पोषण मिलेगा। गो के ऊपर सम्पूर्ण मानवीय सभ्यता का आधार उन्होंने गिरीराज पूजन से सिद्ध किया कि गिरीराज पूजन गो के लिये है।

वेदों में पहाड़ों से गाय के लिये प्रार्थनाएँ की हैं। अलग-अलग पहाड़ों से अलग-अलग मंत्रों एवं सूत्रों से गो को लेकर ही की है। जब हम गिरीराजधरण कहते हैं तो इसका अभिप्राय भगवान श्रीकृष्ण होता है और जब हम गिरीराज कहते हैं तो इसका अभिप्राय गोवर्धन पर्वत होता है। तो गोवर्धन पर्वत धारण करने वाले उन लीला पुरुषोत्तम भगवान श्रीकृष्ण ने हमें गोपालन लोक संस्कृति का एक आधार, योजना, कला, विज्ञान प्रदान किया वह आधार, योजना, कला, विज्ञान, प्रयोग यह था कि आपके पहाड़ सुरक्षित रहें, आपके पहाड़ों को नष्ट न किया जाय, आपके पहाड़ों के ऊपर से वृक्षों का विनाश न हो, आपके पहाड़ों के ऊपर गर्मी बढ़ाने वाली किन्हीं भी धातुओं का प्रयोग न हो।

ये सारी चीजें अगर नहीं हुई तो आपको निरन्तर जल मिलता रहेगा जो आकाश से बरसता है और अगर आपने इस व्यवस्था को बिगाड़ दिया तो आपको शुद्ध जल नहीं मिलेगा और जल नहीं मिलेगा तो जीवन भी

नहीं बचेगा। आज दुर्भाग्य से गोवर्धन पूजन से पहले कहना पड़ रहा है, अभी हमें नहीं कहना चाहिये, आज उत्साह आनंद, उमंग और नया कार्य करने की भावना जगाने का दिन है। अभी यह कहना पड़ रहा कि गिरीराजजी की पूजा जो भगवान श्री कृष्ण ने करवायी थी उस पूजा के विपरीत घोर दुस्कार, तिरस्कार हो रहा है। पहाड़ों को काटा जा रहा है। पत्थरों के अलग-अलग नाम दे दिये- ये ग्रेनाइट, संगमरमर, कोटा स्टोन आदि न जाने क्या क्या नाम देकर पहाड़ों को तोड़ा जा रहा है। पहाड़ों को तोड़ना सम्पूर्ण गोपालन लोक संस्कृति पर आघात है। गोपालन लोक संस्कृति के आघात का अर्थ है सम्पूर्ण सृष्टि को नष्ट करना। पहाड़ों को तोड़ने में हम सब सहायक हैं। हम सभी पत्थरों का उपयोग करते हैं, हमारे चारों तरफ हो रहा है। पहाड़ों को तोड़कर पत्थरों को लाकर हम हमारी सुरक्षा के लिये, सुविधा के लिये नये-नये घर या मकान खड़े करते हैं।

हमको आधुनिक समय में जो विज्ञान प्राप्त हुआ था उसका घोर दुरुपयोग किया। इस तरह के कार्यो के लिये हमारे पूर्वजों ने लाखों-लाखों वर्षो से कभी पहाड़ों को काटा नहीं, अगर पत्थर का उपयोग भी किया तो पहाड़ अपने आप जो पत्थर देता है, उन पत्थरों का उपयोग किया। जिस तरह वृक्ष फल देते हैं ऐसे ही पहाड़ भी हमें पत्थर देते हैं उन पत्थरों का उपयोग हमारे राजधानियाँ और किलों में किया जाता था। जनसाधारण कोई

पत्थरों का उपयोग अपने आवास में नहीं करते थे। उनको अगर बेसमझ मानते हो, मूर्ख मानते हो, आलसी मानते हो, युक्तियों से हीन मानते हो तो उनके आचरणों के विपरीत काम तुम पृथ्वी पर करो। अगर आपके पूर्वजों को थोड़ा ही समझदार मानते हो, आपके पूर्वज अच्छे थे ऐसा मानते हो तो आप उनका अनुसरण करो।

यह जो समझ आप में आयी है, आपको मशीनें मिल गयी, ढ़ोने के लिये यन्त्र मिल गये, यन्त्रों की विद्या का आधार जो विज्ञान है उनका जन्म भी आपके पूर्वजों से हुआ है। वे सब समझते थे पर वे विज्ञान का प्रयोग दर्शन के प्रकाश में करते थे कि आप-हम ऐसा अगर हमारी सुविधा के लिये करेंगे तो कल उसका क्या परिणाम आयेगा। और आप हमने विज्ञान का प्रयोग यह किया कि कल भले रहे न रहे पर हमें आज चाहिये, जो आज को देखेगा कल को नहीं देखेगा तो उसकी प्रवृति विध्वंसक होगी और उससे विनाश होगा।

आज के विज्ञान के द्वारा विनाश हुआ, प्रकृति के साथ अत्याचार हुआ। यह विज्ञान क्या है? हमने कहा- आसुरी विज्ञान तो लोग नाराज होते होंगे। हमने कहा कि आसुरी शासन प्रणाली, मैंने कहा कि सारे संसार के शासक दानव हैं और इनकी सोच दानवी है। इनकी सोच को, इनकी कला को, इनके विज्ञान को आसुरी माया कहा जाता है। यह आसुरी माया क्या करती है? पहले आपके अन्दर आकांक्षा जगाती है, भूख जगाती है,

मायावी है, आकर्षित करती है, आप तड़फोगे। जब आप आकर्षित नहीं होंगे तो वह आपका शोषण कर ही नहीं सकती। वह आपको कई सुविधाएँ, कई सुख, कई इन्द्रिय और विषयों के संयोग से होने वाले सुखों की लालचा देंगे। तो उससे आपमें गाड़ी मिल जाये, हवाई जहाज मिल जाये तो यह कर लूँगा, वह कर लूँगा और न जाने क्या-क्या आकांक्षा जगाकर फिर वह वस्तुओं हमें देते हैं। मकान बनायेंगे तो ऊपर से वर्षात नहीं आयेगी, ऊपर से ठण्डी नहीं आयेगी, लीपना नहीं पड़ेगा, सुन्दर दिखेगा, ऐसी यह कामनाओं जगा-जगा कर फिर मूल प्रकृति का जो स्वरूप है उसको नष्ट कराती हैं ये आसुरी माया, आसुरी शक्तियाँ।

आसुरी शक्तियाँ के शिकार हम सब हो रहे हैं। इससे राजसत्ता, समाजसत्ता और धार्मिकसत्ता कोई भी अछूता नहीं रहा है। वे एक तरफ गिरीराज गोवर्धन की पूजा एवं परिक्रमा करते हैं और दूसरी तरफ कई लम्बे चौड़े पहाड़ों को नष्ट करते हैं, उनके टुकड़े-टुकड़े कर रहे हैं, उनके टुकड़ों को अनेक आकार देकर पूरे देश में कंक्रीट-पत्थर फैला रहे हैं। पहाड़ का आकार टूट गया, जल बरसना बन्द हो गया, पहाड़ों पर बड़े-बड़े उद्योग डाल रहें हैं, बहुत सी ऐसी प्रक्रियाऐं चला रहे हैं, जिससे पहाड़ों की शुद्वता सत्व और शक्ति है वह तो नष्ट हो जाये, वह शक्ति जो जल को खिंचने वाली है वह भी समाप्त हो जाये, गर्मी बढ़ जाये, पहाड़ छोटे होंगे तो

बादल टकरा भी नहीं पायेंगे। इस तरह भयंकर नुकसान हो रहा है। अगर हम लोग इनमें से कुछ चीजें जिससे हमारे पहाड़ नष्ट होते हों, जिससे हमारे नदियों और नाले नष्ट होते हों, ऐसी प्रवृतियों से दूर होवें, ऐसा हम व्रत लें कि पत्थर का मकान नहीं बनायेंगे नदियों और नालों को रोकेंगे नहीं, गोचर तोड़ेंगे नहीं, वृक्षों को काटेंगे नहीं, ऐसा कुछ आप व्रत लें तो यह गिरीराज जी की पूजा है।

बाकी कुंकुम, गुलाल, पंचोपचार, षोड्शोपचार से पूजा तो हमारे अवधूतजी महाराज ने गोपराजा को प्रधान यजमान बनाकर कर ही दी है पर आप सबको पूजा करनी है वह यह है कि आप इनमें से जिनके द्वारा गोपालन लोकसंस्कृति पर चोट पहुँचती हों, जहाँ हमारे पहाड़ नष्ट होते हों, नदियाँ समाप्त होती हों, वृक्ष कटते हों, वन गोचर, आगोर नष्ट होते हों, ऐसे लोगों के साथ, ऐसी व्यवस्था के साथ असहयोग करें। कम-से-कम हम उन बातों से बचें। हमारे किसी प्रकार के असहयोग से यह दानव अपनी आसुरी माया द्वारा हमारी प्रकृति का, हमारी परम्परा और हमारी गोपालन लोक संस्कृति का विनाश न कर सके ऐसा हम व्रत लें।

सबसे पहली बात तो आज के शासकों की शक्ति तो जनता का वोट है। वोट देने वाले लोग हैं। वोट से ही वे लोग सत्ता पाते हैं, पर वे सत्ता में बैठकर ऐसी-ऐसी योजनाएँ बनाते हैं जिससे धर्म का नाश हो। अब वे जो पाप करते हैं, उस पाप का दण्ड उसको उस सत्ता तक

पहुँचाने वाले प्रत्येक व्यक्ति को मिलता है। क्योंकि वह सत्ता और सामर्थ्य उसके पास न होते तो ऐसा पाप न कर सकता और वह पुण्य करेगा तो पुण्य का फल भी सभी को मिलेगा।

आपकी शक्ति ही केन्द्रीभूत होकर सत्ता में बैठी है तो आप बताइयें मैं किसको दानव कहूँ और किसको कहूँ कि आसुरी माया से बचा हुआ कोई प्राणी है? सबके-सब उस माया में आबद्ध हैं। ऐसे में आपको यह निर्णय करना है जो मैं मत दे रहा हूँ, जिसके द्वारा पृथ्वी की नीति बदली जा रही है या नीति बनायी जा रही है, उस नीति से सृष्टि का भला, हित या अहित होता है तो उसका परिणाम भी मुझे भोगने को तैयार रहना चाहिये। ऐसी दोगली बात नहीं, एक तरफ तो हम पहाड़ों को पूजते हैं, पहाड़ो के टुकड़ों को भी देवता बना-बनाकर पूज रहे हैं, वृक्षों की भी पूजा कर रहे हैं और दूसरी तरफ उनका भयंकर विनाश हो रहा है उसमें सम्मिलित हो रहे हैं। ऐसे द्वन्दात्मक जीवन से न तो शान्ति मिलेगी न आनंद आयेगा और न निर्भयता ही आयेगी। द्वंद रहित जीवन ही निर्भय जीवन होता है। उसी जीवन में आनंद और शान्ति के फव्वारे या स्रोत प्रकट होते हैं।

इसलिये गो के प्रति हमारी जो निष्ठा है यह गिरीराजजी की पूजा करके बतायें और गिरीराजजी की पूजा करने का अर्थ है कि हम गोचरों को बचायें, वृक्षों को बचायें, पहाड़ों को बचायें, नदियों और नालों को

बचायें, तालाबों को बचायें। इसके लिये हमारे मन, बुद्धि, शरीर आदि बचाने में लगें। इसके लिये जो भी हमें सृजनात्मक और रचनात्मक कार्य करने पड़े उसमें हम अपने जीवन की भी आहूती दें तो यह गो के प्रति सच्चा समर्पण होगा।

पूजन का अर्थ ही है समर्पण करना। समर्पण किया ही नहीं तो कैसी पूजा? किसकी पूजा? अपने जीवन के किसी अंश को आप इस तरह गिरीराजजी की पूजा में अर्पित करें तो यह भारत की गिरीराज पूजा की परम्परा सार्थक होगी, सुपरिणामकारी होगी और पुनः गोपालन लोक-संस्कृति की स्थापना में महान सहायक और आधार बनेगी। क्योंकि इसी पूजा से गोचर बचेंगे। इस पूजा के अनेक उपाय हो सकते हैं, अनेक पदार्थ हो सकते हैं, अनेक सामग्रियाँ हो सकती हैं। पंचोपचार षोड्शोपचार और राजोपचार आदि इनमें जो भी आप कर सको, आप अपने जीवन से, सिद्धान्त से, अपने शासकों से इन पहाड़ों, नदियों, गोचरों, तालाबों की रक्षा के लिये क्या-क्या कर सकते हो वह करवायें। यही पूजा है और यही उस पूजा का महात्म्य है।

जय गोमाता! जय गोपाल !

❁❁❁❁❁

।। श्री सुरभ्यै नमः।।

11

गो अधिकारों की रक्षा के लिये संघर्ष क्यों

सर्वेश्वर सच्चिदानंदघन परमात्मा सभी के हृदय में अंतर्यामी रूप से विराजमान हैं, उनका नमस्कार पूर्वक पावन स्मरण करते हैं। उपस्थित संतवृन्दों, धर्माचार्यों, गोभक्त सज्जनों आप सभी का सादर अभिनन्दन! जय गोमाता! जय गोपाल!

यह सर्वविदित है कि गाय पार्टियों, दलों, जातियों, मतों एवं सम्प्रदायों के साथ कोई पक्षपात नहीं करती है। गाय स्वयं के लिये कोई अपने-पराये का भेद नहीं रखती है-सबका समान रूप से मातृवत् पालन-पोषण करती है। वास्तव में गोमाता समता में स्थित रहकर अपनी जीवन यात्रा द्वारा सर्वहित एवं सर्वकल्याण का सम्पादन सहज रूप से करती रहती है। सृष्टि सृजक ने गोमाता का सृजन सर्वमंगल के लिये किया है। इसलिए गोमाता द्वारा प्रदत्त

प्रत्येक गव्य पदार्थ परम मांगलिक, अनुपमेय, समृद्धिकारक, स्वास्थ्यवर्धक, पर्यावरण शोधक, प्रकृति पोषक एवं प्रसन्नता, ज्ञान व परमानन्द का जनक है, ऐसा महामनिषियों का अनुभूत (अनुभव में लाया हुआ) सत्य है।

गोमाता के लिए पृथ्वी जल में स्थिर है, सूर्य का आविर्भाव भी गाय के लिये हुआ। सोम मण्डल का निर्माण एवं मेघों का सृजन गाय के लिये हुआ है। वनस्पति, पहाड़ और नदियों ये सभी गोमाता की प्रकृति प्रदत सम्पत्तियाँ हैं। पूज्या गोमाता की महानता को तत्व से समझने वाले सनातन भारत ने ही पूज्या गोमाता तथा उनके अखिल गोवंश के गोअधिकारों को आदिकाल में ही आरक्षित कर दिया था।

पूज्या गोमाता के जागतिक प्राणियों पर आदिकालीन अनन्त उपकार हैं। गोमाता के आशीर्वाद एवं वात्सल्य से ही सृष्टि में शान्ति, समृद्धि, मंगल, करूणा, दया, प्रेम, सेवा, समर्पण आदि दैविक गुणोंकी वृद्धि होती है जिससे सबका उपकार तथा सबका कल्याण होता है। गोमाता ने भूमण्डल पर आकर कभी पार्टी, दल, जाति, पंथ, मत, सम्प्रदाय आदि की दीवारें नहीं बनाई। गोमाता ने वेश-भूषा, भाषा, भोजन, परम्परा एवं सत्ता प्राप्ति के लिये मानव को मानव से लड़ाया नहीं हैं। पूज्या गोमाता ने सबको आपस में एक किया है, लड़ाइयाँ मिटाई हैं। मानव जाति को स्वास्थ्य, समझ, संस्कार, स्वावलम्बन, शौर्य तथा समृद्धि का दान किया है। गोमाता ने भेद मिटाया है,

भिन्नता मिटाई है, भ्रम मिटाये हैं, सभी मानवों को कर्तव्यपरायण बनने की प्रेरणा तथा प्रकाश दिया है, त्याग और समर्पण की ऊर्जा दी है, आदर और स्नेह का पाठ पढ़ाया है, अधिकारों की सीमा तथा कर्तव्यों की विशालता का बोध कराया है।

इस तरह सदा सर्वदा सब प्रकार से दूसरों के अधिकारों की रक्षक, परमार्थ में निरत गोमाता तथा उनके अखिल गोवंश का अपमान, उपेक्षा, तिरस्कार, प्रताड़ना करना घोर अमानवता, महामूढ़ता तथा भयंकर कृतघ्नता है। इतना ही नहीं गोवंश की क्रूरतापूर्वक हत्या करके धन अर्जित करने की सोच तो सम्पूर्ण सृष्टि तथा मानवता के प्रति जघन्य, अक्षम्य अपराध तथा राक्षसी प्रवृति है जिसका परिणाम मानव जाति के लिये सर्व विनाश और महापतन होगा।

कहाँ तो सनातन भारत के अमर इतिहास का उद्घोष कि गोवंश की सम्पूर्ण सुरक्षा, गोसंवर्धन, गोचर भूमियों का आरक्षण, गोउत्पादों का पवित्र कार्यो में विनियोग कर पूज्या गोमाता के आशीर्वाद से राजा-प्रजा सभी को लोक और परलोकमें कल्याणकारी लक्ष्य प्राप्ति के अमोघ साधन के रूप में प्रतिपादन करना और कहाँ आधुनिक भारत की विनाशकारी अर्थोपार्जन की उल्लुक नीति जिससे पूज्या गोमाता तथा उनके अखिल गोवंश की हत्या, गोचरों, ओरणों, पहाड़ों, वनों, नदियों का विनाश, भारतीय गो नस्लों का संहार तथा पंचगव्यों का

तिरस्कार करके गोमाता के अभिशाप से विषैला पर्यावरण, असन्तुलित प्रकृति, विकृत मौसम, बंजर भूमि, रुग्ण शरीर, परावलम्बी जीवन, सामाजिक असुरक्षा, परस्पर वैमनस्य, आन्तरिक कलह, विभाजनकारी आतंक तथा अंधकारमय मानवजाति एवं भारत का भविष्य, यह लोक की बात है। परलोक, अध्यात्म, मानवता, धर्म, कर्तव्य आदि को तो आधुनिक भारत तथा वर्तमान विश्व ने चर्चा तक ही सीमित कर दिया है। वास्तविक दृष्टि से होशपूर्वक देखकर विचार किया जाये तो प्रत्येक व्यक्ति, परिवार, समाज, प्रदेश तथा देश का सर्वोपरी हित इसी में है कि गोमाता तथा उनके अखिल गोवंश की सम्मानपूर्वक पूर्ण सुरक्षा की जाये, उनके चरने-विचरने तथा विश्राम के लिए जलाशयों, झरनों, नालों एवं नदियों को आबाद किया जाये, गोचरों का विकास किया जाये, गो-अभ्यारण्यों की स्थापना की जाये और गोष्ठ, गोसदनों का निर्माण किया जाये, गोपालकों को प्रोत्साहित किया जाये, गोमाता के दुग्ध वृद्धि के लिये भारतीय नस्ल के उन्नत नंदियों की नन्दीशालाएँ स्थापित कर गोविज्ञान-पद्धति से गोसंवर्धन किया जाये, पचंगव्यों की गुणवत्ता को परखकर उसका उच्च मूल्य में पात्रता के आधार पर विनियोग किया जाये, गो-आधारित कृषि उत्पादों के लिये समर्थित मूल्य का बाजार उपलब्ध कराया जाये।

ये सब कार्य समाज और शासन के पूर्ण सहयोग बिना संभव नहीं है। आज अधिकतर समाज के मुख्यागण

एवं शासक वर्ग उक्त महत्वपूर्ण तथा सर्वहितकारी विषय की पूर्णतया उपेक्षा करके अपने-अपने क्षणिक स्वार्थ पराणयता, अधिकार लोलुपता और सत्ता, पद प्राप्ति के विखण्डनजन्य विनाशकारी संघर्ष में रत बेसुध अवस्था में गोमाता तथा उनके सर्वकल्याणकारी गोविज्ञान की उपेक्षा तथा तिरस्कार करते हैं। यह घनघोर अन्धता है। पूज्या गोमाता के उपकारों, उनके महत्त्व को बिना सोचे समझे ये लोग गाय को केवल साधारण जानवर मानते हैं। ऐसे लोग गाय की रक्षा तथा सेवा में अपना हित नहीं स्वीकार करते हैं। उनकी बुद्धि अत्यधिक जड़ता को प्राप्त हो गई है। उनको अपना स्वार्थ, अपना हित, सड़कें, मकानों तथा मोटरों में ही सब कुछ विकास दिखता है। उनके लिये पर्यावरण शुद्धता हेतु गो-अभ्यारण्य, वन, गोचर, वृक्ष, तालाब, नदियों व पहाड़ों की सुरक्षा अनावश्यक है। शुद्ध जल, पवित्र हवा, सात्त्विक अन्न, फल, सब्जियों, औषधियों, सब बेमानी हैं। उनको प्राकृतिक प्रकोपों तथा विपरीत व विकृत मौसम से कोई हानि नहीं दिखती।

ये लोग शारीरिक आरोग्यता, हृदय की शुद्धता और वैचारिक परिमार्जितता को महत्त्व नहीं देते हैं। इनको तो केवल धन चाहिये जिससे महल बनाये जायें और मोटर आदि यंत्र खरीदे जायें। वह धन चाहे किसी भी उपाय से मिले, पर मिलना चाहिये। ऐसे लोग धन प्राप्ति के लिये नैतिकता, चरित्र, धर्म, समाज, राष्ट्र तथा

स्वयं अपने प्राणों को भी दांव पर लगा देते हैं। क्योंकि उनको धन के अतिरिक्त कुछ भी दिखता नहीं है। इस तरह अर्थ लोलुपता से अन्धे लोगों के कारण ही आज पूज्या गोमाता तथा उनके अखिल गोवंश की हत्या कर उनके मांस से धन अर्जित करने का पापकर्म हो रहा है। इनकी अगुवाई में गोचरों, ओरणों, वनों, पहाड़ों तथा पवित्र नदियों का नाश किया जा रहा है।

इनके अनुकरण से भारत की कृषिभूमि विषैली तथा बंजर हो रही है, इनकी कुप्रवृतियों से पर्यावरण प्रदूषित हो रहा हैं, प्राकृतिक प्रकोप हो रहे हैं, सारा राष्ट्र तथा मानव जाति शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक रूप से असाध्य रोगों से ग्रस्त बनता जा रहा है। ये लोग सम्पूर्णतया वैश्विक दानवी शासन की आसुरी माया से मोहित हो गये हैं। इसलिये तो इनको अपनी माँ के उपकार भी याद नहीं हैं और बाप का पता नहीं हैं क्योंकि माँ के बिना बाप कौन बता सकता है। आसुरी माया से मोहित प्राणी माँ-बाप, समाज, राष्ट्र, धर्म, ईश्वर इन सबको अपनी भूख वासना पूर्ति का साधन मान कर खाना चाहते हैं। आज हम देख रहे हैं, ऐसा ही हो रहा है।

पूज्या गोमाता तो सबकी माँ है, माँ की भी माँ है, समाज की भी माँ है, राष्ट्र की भी माँ है तथा सारे विश्व की माँ है- ''गावो विश्वस्य मातरः'', ''मातरः सर्वभूतानाम्'' ऐसी पूज्या गोमाता के प्रति वर्तमान समाज

तथा शासन के कर्णधारों का घृणित व्यवहार देखकर हृदय फट रहा है कि इसके कितने भयंकर दुष्परिणाम होंगे। आने वाली मानवीय पीढ़ियों की क्या दशा होगी? ये लोग बिल्कुल विचार ही नहीं करते हैं कि गोमाता के बिना व्यक्ति, परिवार, समाज, देश-प्रदेश तथा दुनिया की कितनी भयंकर दुर्दशा हो जायेगी।

पूज्या गोमाता तथा उनके अखिल गोवंश का इसी तरह विनाश होता गया तो कितना विनाशकारी अभिशाप मानव जाति भोगेगी और गोवंश के अभाव में प्रकृति को सन्तुलित रखने वाला कौन होगा? पर्यावरण के विषैले प्रदूषण का शमन कौन करेगा? पृथ्वी क्यों स्थिर रहेगी? मेघ क्यों बरसेंगे? समुद्र, अग्नि, वायु अपनी-अपनी मर्यादा में क्यों रहेगें? शुद्ध आरोग्यकारक एवं जीवनी शक्तिवर्धक आहार कहाँ से प्राप्त होगा? देवताओं को दुर्लभ मानव शरीर का क्या मूल्य रहेगा अर्थात् विनाशकारी शिवताण्डवों से ब्रह्माण्ड में हा-हा कार मच जायेगा।

केवल और केवल गोमाता और उनका अखिल गोवंश ही वह महान सहारा है, जिससे मानव सहित सभी प्राणी स्वस्थ, सात्त्विक, स्वावलम्बी, निर्भय तथा शान्ति एवं आनंदपूर्वक जीवन यात्रा कर सकते हैं। यह सार्वभौम सत्य है। सत्य का चुनाव कभी मत प्रणाली से नहीं हुआ है, होता भी नहीं है और होगा भी नहीं। सत्य का चुनाव विवेक के प्रकाश में होता है और विवेक का उदय सत्संग से होता है तथा सत्संग की प्राप्ति असत्संग

के त्याग से होती हैं। अस्तु

पूज्या गोमाता की अनुकम्पा, परमेश्वर की प्रेरणा, सत्य के अनुरागी सन्तों की अनुभूति तथा विवेक के प्रकाश में देखने से ज्ञात होता है कि आसुरी शक्तियाँ गोवंश के विनाश हेतु उनके सनातन मूलभूत ईश प्रदत्त अधिकारों का अपहरण करके अपने अधीन करने में योजना पूर्वक तत्परता से प्रवृत हैं। सर्वप्रथम तो आसुरी शिक्षा, मद्य-मांस आदि के माध्यम से सनातन भारत के गोपालक, गोरक्षक, वीर समाजों तथा शासकों को गोब्राह्मण-प्रतिपालक प्रतिज्ञा के धर्म-पथ से भ्रष्ट करके गोरक्षा एवं गोभक्ति की भावना से अलग कर दिया।

उसके बाद गोपालक किसानों, व्यापारियों, उद्योगपतियों, शिल्पकारियों आदि को जर्सी काऊ, यन्त्र, केमिकल, फर्टीलाइजर, डीजल, पैट्रोल, विद्युत आदि से संचालित मशीनों के माध्यम से अपनी आसुरी माया के जाल में फंसाकर गोपालन, गोसंवर्धन से उपराम कर दिये। कृषि, गोरक्षा तथा वाणिज्य की अविभाज्यता नष्ट कर दी। कृषि के ऊपर फर्टीलाइजर तथा यन्त्रों वाले हिंसक कसाईयों ने अधिकार जमा लिया। गोवंश व गोचरों पर गो-घातकों तथा गो-विरोधियों का अधिकार हो गया और वाणिज्य पर झूठ, बेईमानी-मिलावट करने वाले केवल मुनाफाखोर असुरों ने अपना कब्जा कर लिया।

दानवों का गो-विरोधी आसुरी आन्दोलन यहीं नहीं रुका। उसने निषिद्ध वस्तुओं एवं मृत प्राणियों के मांस

को औषधि आदि दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुओं को अपनी माया से खाद्य का रूप देकर उसको आकर्षक आवरण से सजाकर प्रस्तुत किया जिससे शुद्ध आहार परायण सात्विक व्यक्ति, परिवार, समूह, समाज, सम्प्रदाय आदि में उसका उपयोग करना प्रारम्भ करा दिया। परिणाम स्वरूप उनका मन कलुषीत तथा बुद्धि तमोमय हो गई जिससे गोमाता के प्रति भक्तिभाव तथा गोरक्षा की महत्ता प्रतिपादित करने वाली, सत्य-असत्य का निर्णय करने की विवेक शक्ति मृतप्रायः हो गई।

गो विरोधी असुरों के आन्दोलन का एक प्रधान उद्देश्य देवी शक्तियों को नष्ट करना रहता है। इसलिये सनातन धर्म विज्ञान में देवी शक्ति के आविर्भाव, विकास एवं आधार को प्राप्त करने के प्रयोगों पर अप्रत्यक्ष रूप से दानवों ने अपना पूरा अधिकार जमा लिया है। आहार, हवा, जल, उर्जा आदि सबमें सत्वनाशक जहर को घोल दिया। समर्पण, श्रद्धा, पूजा, उपासना, यज्ञ, तप, स्वाध्याय, योग, दिव्य प्रेम, अनंत विश्राम के साधनभूत पंचगव्यों के स्थान पर आलस्य, प्रमाद, विद्वेष, क्रोध, स्वार्थपरता, कामलोलुपता, तमोगुण प्रधान पशुओं से क्रूरता तथा चतुराई पूर्वक प्राप्त किये गये अपशिष्ट तथा विष मिश्रित अन्न-औषधि से देवी शक्तियों के नाम पर राक्षसी शक्तियों के वृद्धि और विकास की गो विरोधी असुरों की परियोजना साकार बनती जा रही है।

अतः यह अति आवश्यक एवं अनिवार्य हो गया है

कि असुरत्व का शमन कर आसुरी माया के जाल से परमार्थ पथ के पथिक आस्तिक मानव समाज को मुक्त किया जाये। यह तभी होगा जब असुर तत्व का शमन करने वाला तथा देवी तत्व सृजक बीज रूप से शेष बचे हुए गो-तत्व का संरक्षण, पालन एवं संवर्धन करके गोप्रदत पंचगव्यों का वैदिक विधि से परिष्करण व विनियोग किया जाये। इसके लिये वर्तमान समय में समाज के भावों तथा शासन प्रणाली में परिवर्तन करना होगा। जिससे गोमाता के मूलभूत अधिकार सुरक्षित हो सके। समझने-समझाने तथा साकार करने के लिये गोअधिकारों को चार भागो में विभाजित किया जा सकता है।

1. सर्वप्रथम गोवंश की सुरक्षा एवं सम्मान को समाज तथा शासन में स्थापित करना होगा। तात्पर्य यह है कि समाज गो की महत्ता के अनुरूप उसका सम्मान करे। आज गोवंश की उपेक्षा एवं तिरस्कार हो रहा है इसलिये समाज की भावनाओं में परिवर्तन अनिवार्य है। वह गोमाता की आदर सहित सेवा करे। बछड़ा-बछड़ियों, गाय-बैल आदि को निराश्रित, खेतों तथा बाजारों में डण्डा खाने, सड़कों पर वाहनों की टक्कर खाने तथा गलियों में कचरा-प्लास्टिक खाने हेतु छोड़े नहीं। प्रत्युत चरने-विचरने के लिये गोवंश को ग्वाले के साथ भेजे।

गाय का केवल दूध नहीं, गोमूत्र तथा गोबर का भी संकलन, परिष्करण एवं विनियोग करना प्रारम्भ करे। शासन की नीति में गोवंश की सम्पूर्ण सुरक्षा सुनिश्चित

करने हेतु आवश्यक नियम-अधिनियम बनाकर उसका क्रियान्वयन अनिवार्य हो। गोवंश को निराश्रित छोड़ने वाला, उसकी प्रताड़ना करने वाला, किसी अस्त्र-शस्त्र से आघात पहुंचाने वाला, उसका व्यापार करने वाला, तस्करी करने वाला, हत्या करने वाला तथा परिवहन करने वाला, सबको क्रमशः अपराधी मानकर दंडित करने का विधान लागू किया जाये। यही समाज तथा शासन का कर्तव्य एवं गोमाता का अधिकार है।

2. गोमाता तथा अखिल गोवंश का स्नेह एवं सेवाभाव से पालन आनिवार्य है। तात्पर्य यह है कि गोमाता समृष्टि प्रकृति का चिन्मय स्वरूप है, पृथ्वी माता की प्रत्यक्ष प्रतिनिधि है एवं चर-अचर सम्पूर्ण मूक प्राणियों की सिरमौर है। इसलिये गोमाता के समग्ररूप का पालन करना होगा जिसमें गोचर, ओरण आगोर, पहाड़, नदियों, नाले, वन, वन्यजीव, प्राणी एवं वनस्पति जगत समाहित है। जिनका मर्यादित सीमांकन, विकास, सुरक्षा एवं वृद्धि करना समाज और शासन दोनों का प्रधान कर्तव्य है और गोमाता का अधिकार है। अर्थात गोचर, ओरण, आगोर आदि गोभूमियों पर अवैध अतिक्रमण का यह पाप बंद करें। पहाड़ों को तोड़ना, नदियों को अवरोध करना, नालों को पाटना, वनों की कटाई एवं वन्य जीवों की हत्या के राष्ट्रीय अपराध को बन्द करे। इसी में समाज का कल्याण व राष्ट्र का हित है।

गोमाता तथा उसके अखिल गोवंश का ही उक्त

प्राकृतिक सम्पदा पर सम्पूर्ण अधिकार है। पुत्र बनकर मानव गोमाता की तरह ही प्राकृतिक सम्पदा का दोहन अपने निर्वाह के लिये कर सकता है परन्तु जब मानव किसी भोग्य एवं भक्ष्य की तरह अपनी जननी गोमाता सहित प्रकृति का शोषण, अधिग्रहण एवं भक्षण करने लग जाता है तब समझना चाहिये कि उसकी बुद्धि राक्षसी हो गई है और वह भयंकर पापाचार करके अपने आपका अध:पतन तथा महाविनाश कर रहा है।

यह समाज, राष्ट्र, विश्व, सृष्टि तथा सृष्टि के रचियता परमेश्वर का भी घोर अपराधी है। अत: समाज और शासन का उक्त अपराध को रोकने हेतु कठोर नियम उपनियम बनाना और उसे क्रियान्वित करने का नैतिक दायित्व व प्रमुख कर्तव्य तथा गोमाता का पूर्ण अधिकार बनता है

3. वैदिक कामधेनु विज्ञान जीवन विकास की वह महान कला है जिसके प्रयोगों से स्वास्थ्य, समझ, समृद्धि, स्वावलम्बन, शान्ति एवं पूर्ण निर्भयता विश्व-मानव प्राप्त करता है। अत: कामधेनु विज्ञान के अनुरूप ही उन्नत शुद्ध भारतीय नस्ल की दुधारू गोमाताओं की वंश वृद्धि के लिये कुलीन एवं सुलक्षणोंसे सम्पन्न नंदियों का चुनाव करके प्रति पचास गायोंपर एक नन्दीके अनुपात से गोपालक उनका आंकलन कर उनका परिवेश करे तथा शेष नर गोवंश को कृषि, परिवहन, सिंचाई आदि में अपना सहयोगी बनाये व इसका प्रेम से पालन पोषण करें।

कुल विहिन, कुलक्षण वाले नर गोवंश को कभी आवारा न छोड़े। ऐसे नर गोवंश से गोमाता की नस्ल विकृत हो जाती है साथ ही कसाई के हाथ में पड़ने से अथवा भूखा-प्यासा रहने से उसका श्राप गोपालक समाज और शासन दोनों को लगाता है और गोपालन लोक संस्कृति को आघात पहुँचता है। जिससे समाज तथा राष्ट्र की भी समृद्धि एवं सुरक्षा नष्ट हो जाती है। क्योंकि पूज्या गोमाता द्वारा प्रदत्त पंचगव्य तथा उनकी पृथ्वी पर उपस्थिति से ही सब तरह की मांगलिक श्री, समृद्धि, आरोग्यता, स्वावलम्बन एवं सामर्थ्य में वृद्धि होती है। इस कारण तत्वदर्शी महापुरुषों ने पूज्या गोमाता को उनकी सत्ता, महत्ता एवं उपादेयता के आधार पर देवता सन्त-महात्माओं से उधिक परमात्मा के समान ही मन मस्तिष्क में सर्वोच्च स्थान सनातन काल से ही प्रदान किया गया था। जो वास्तव में मनिषियों का कर्तव्य और गोमाता का अधिकार है।

4.गोमय पृथ्वी का सात्विक उर्वरावर्धक, पुष्टीकारक, एंव विष शमनक दिव्य आहार है। गोमय का भोजन ग्रहण करके ही पृथ्वी माता आरोग्यकारी, पवित्र तथा सात्विक जीवनी शक्ति से सम्पन्न प्रचुर मात्रा में अन्न, फल, सब्जी और औषधि प्रदान करती है। जिससे स्वस्थ शरीर, पवित्र मन तथा विवेकवान मानवों का निर्माण होता है, जिसकी आवश्यकता समाज, राष्ट्र, विश्व और विश्वेश को भी है।

इसी तरह गोमूत्र मानव के लिये दिव्य रसायान है। साक्षात् गंगाजी का अमृत है। उल्टा गंगाजी में तो मानवीय मूर्खतावस अपवित्रता मिल सकती है। परन्तु गोमूत्र में कभी अपवित्रता नहीं होती है। गोदुग्ध से सात्विक शौर्य एवं अमोघ पौरुषशक्ति की प्राप्ति होती है। गो दही धैर्य, सौम्य एवं सौन्दर्य का आधार है उसी से बनने वाली तक्र के लिये तो देवताओं सहित इन्द्र भी लालायित रहते हैं। गोघृत देवताओं का आहार एवं सूर्य तथा सोम दोनों मण्डलों का पोषक है, ब्रह्माण्ड के विष का शोधक है और जीवनी शक्ति का निर्माणक है। इसलिए पंचगव्यों को अन्य पशुओं के अपशिष्टों की समानता में रखना घोर अपराध एवं महामूढ़ता है। अतः गोउत्पादों (पंचगव्य) की अनुपम गुणवत्ता के आधार पर मूल्यांकन एवं विनियोग करना मानव का कर्तव्य तथा गोमाता का अधिकार है।

सारांश यह है कि गोमाता के अधिकारों की रक्षा ही मानव समाज एवं शासन का प्रथम कर्तव्य है। जब समाज तथा शासन कर्तव्य पथ से विचलित होकर गोमाता के अधिकारों का अपहरण करने लगता है, तभी धर्मात्मा सज्जनों, परमार्थ पथ के पथिकों, सर्वहितकारी भावनाओं से भावित साधकों, संतों-महात्माओं, तत्व दृष्टा, युगदृष्टा तथा आत्मदृष्टा मनिषियों का यह परम कर्तव्य हो जाता है कि वे सर्व कल्याणकारिणी गोमाता के अधिकारों की रक्षा हेतु अपने आप को प्रस्तुत करें। अर्थात् व्यवहार एवं वाणी से पथच्युत समाज तथा शासन को कर्तव्य बोध

करायें और अगर आचरण, अनुभव तथा विवेक युक्त वाणी को स्वीकार नहीं किया जाता हो तो अन्य वैधानिक उपायों से गो-अधिकारों की रक्षा के लिए इस समाज और शासन को बाध्य करें। प्रचलित मान्यताओं, नीतियों, नियमों तथा आसुरी व्यवस्थाओं में परिर्वतन एवं सर्वहितकारी मौलिक सिद्धान्तों, नीति निर्धारक नियमों तथा व्यवस्थाओं को स्थापित करने के दो साधन हैं- प्रथम तो स्वयं को अपने व्यावहारिक जीवन में उतारना तथा फिर समाज व शासन को प्रेरित करना अर्थात् समझपूर्वक अहितकारी प्रवृत्ति का त्याग एवं हितकारी प्रवृत्ति को ग्रहण करना तथा दूसरा है- हितकारी प्रवृत्ति के लिए वैधानिक शक्तिशाली उपायों से समाज तथा शासन को बाध्य करना ।

संक्षिप्त में यह कहा जा सकता है कि गो अधिकारों के दो उपाय हैं- या तो शान्ति से समाज और शासन समझपूर्वक गोमाता के अधिकारों को पुनः गोमाता को सुपुर्द कर दे नहीं तो क्रान्ति की ज्वाला से समाज और शासन को गोअधिकारों के लिए बाध्य किया जाये। अब समय आ गया है कि राजस्थान गोरक्षा समिति के द्वारा घोषित गो अधिकारों की प्राप्त्यर्थ राज्य के धर्मात्मा सज्जन, साधक, संत, महात्मा, गोभक्त निर्णायक संघर्ष के लिए पूर्णरूपेण तैयार हो जायें, यह माँ की करूण पुकार है। जय गोमाता ! जय गोपाल !

।। श्री सुरभ्यै नमः।।

12

समाज के पंचामृत

सर्वेश्वर सच्चिदानंदघन परमात्मा सभी के हृदय में अंतर्यामी रूप से विराजमान हैं, उनका नमस्कार पूर्वक पावन स्मरण करते हैं। उपस्थित गोभक्त सज्जनों आप सभी का सादर अभिनन्दन! जय गोमाता! जय गोपाल!

किसी भी व्यक्ति अथवा समाज को सर्वोच्च लक्ष्य प्राप्त करना हो, उच्च चेतना को विकसित करना हो, मानव जीवन का जो उद्देश्य है, उसको पूरा करना हो तो उसके लिये पाँच बातें अनिवार्य हैं। पहली बात यह है कि- जिस परिवार में व्यक्ति का जन्म होता है वहाँ उसे संस्कार मिलें। संस्कार कैसे हो? बैठने का, उठने का चलने का, मिलने का, खाने का, पीने का आदि-आदि। जैसे लोटे से पानी पीते हैं और जो शेष पानी बच जाता है तो वह जल जूठा होता है। हमारे शास्त्रों के नियमानुसार

और चिकित्सा विज्ञान के अनुसार एक दूसरे का जूठा जल पीने से कई तरह के रोगों का संक्रमण होने की संभावना रहती है। अतः लोटे से गिलास में अलग लेकर जल पीना चाहिये। फिर शेष बचा हुआ जल दूसरों को नहीं देना चाहिए। भोजन करने का संस्कार भी परिवार से ही मिलता है। लोग संतों को, बड़ों को प्रणाम करना भी नहीं जानते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि परिवार में, समाज में संस्कारों की कमी है। मिलना कैसे? भोजन कैसे करना? बोलना कैसे? बड़े और छोटे के साथ किस तरह व्यवहार करना? ये संस्कार परिवार से मिलने चाहिये। यह जीवन की प्रथम नींव है।

संस्कारों के बाद आती है शिक्षा। शिक्षा संस्कारयुक्त हो। बालकों को भी दी जाये और बालिकाओं को भी दी जाये। इसमें एक सज्जन ने हमें बताया कि बालिकाओं की कमी है। यह दुर्भाग्य की बात है। किस कारण से ऐसा हो रहा है? क्यों हो रहा है? कहीं न कहीं कोई अपराध है। ऐसा तो नहीं कि हमने कभी कहीं सरस्वती, लक्ष्मी और उमा का तिरस्कार किया हो। जिस वस्तु का, जिस व्यक्ति का, जिस प्राणी का हम तिरस्कार करते हैं, उसका दुरुपयोग करते हैं, अपमान करते हैं तो एक दिन ऐसा आता है कि उसके अभाव में हमें दुःखी होना पड़ता है। यह शास्वत नियम है।

अगर हमारे समाज में बालिकाओं का, माताओं का अपमान हुआ है तो यह बहुत बड़ा अपराध है और

इसका दुष्परिणाम है कि बालिकाओं की संख्या कम हो रही है। सरस्वती, लक्ष्मी और उमा का स्वरूप यह मातृ शक्ति है। ऐसे जघन्य अपराध कई समाजों में हो रहे हैं। बालिकाओं को गर्भ में ही नष्ट किया जा रहा है। इससे भयंकर और कोई अपराध नहीं हो सकता। गर्भपात को गोहत्या से भी बड़ा पाप माना गया है। गोहत्या का प्रायश्चित है, पर गर्भपात का कोई प्रायश्चित नहीं है। अतः गर्भपात जैसा दुष्कर्म अगर समाज में भूल से, अज्ञान से, लालच से, भय से हो तो उन्हें सख्ती से बंद करना चाहिये। इस पाप से समाज को शीघ्रातिशीघ्र मुक्त हो जाना चाहिये।

शिक्षा ऐसी मिले कि समाज स्वावलम्बी बने। केवल डिग्रियाँ से कोई मतलब नहीं है। वर्तमान समय में जिस तरह से व्यक्ति स्वावलम्बी बन सके इस तरह की भाषायी एवं तकनीकी शिक्षा हमारे समाजकी आने वाली पीढ़ी को मिलनी चाहिये। तब वह स्वावलम्बी होंगे।

संस्कार, शिक्षा और तीसरा है- स्वावलम्बन। जो समाज संस्कारी होगा, शिक्षित होगा और स्वावलम्बी होगा, वो समाज ही आगे बढ़ पायेगा। इसके लिये हर व्यक्ति को स्वावलम्बी बनने की शिक्षा मिले।

चौथी बात है संगठन। जो समाज संस्कारी, शिक्षित और स्वावलम्बी होगा, ऐसा समाज ही संगठित हो सकेगा। जिसमें संस्कार नहीं होंगे, शिक्षा नहीं होगी, स्वावलम्बी नहीं होगा, परावलम्बी होगा, परवश होगा तो वह संगठित

नहीं रह पायेगा।

संस्कार, शिक्षा, स्वावलम्बन और संगठन के बाद पाँचवी वस्तु है जिस पर हमें विशेष ध्यान देना है, वह है स्वास्थ्य। ये पाँच संस्कार हैं प्रत्येक व्यक्ति, परिवार और समाज के सर्वांगीण विकास के लिये। इन पंचामृतों को अपनाया जाये। इससे समाज उन्नत होता है, संगठित रहता है, स्वावलम्बी और स्वस्थ रहता है एवं अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है

समाज में दुर्व्यसन प्रवेश न करे। शराब, अफीम, बीड़ी, चाय, गुटखा आदि इतने खतरनाक व्यसन हैं जिससे स्वास्थ्य चौपट हो रहा है, धन चौपट हो जाता है। सज्जनों! शरीर रोगी होगा तो कोई काम नहीं हो सकेगा। सबसे बड़ा दुःख यही है कि शरीर रोगी हो और सबसे बड़ा सुख यही है कि शरीर स्वस्थ हो। लोक में भी कहावत है- पहला सुख निरोगी काया। अन्न में भी विष मिल रहा है। अन्न के बिना तो जीवन चल नहीं सकता। इसलिए अन्न तो जैसा मिले वैसा लेना पड़ेगा। परन्तु शराब, अफीम, बीड़ी, सिगरेट, चाय, तम्बाकु तथा गुटखा आदि के बिना तो जीवन चल सकता है और बहुत अच्छा चल सकता है। इनको खाना-पीना आवश्यक नहीं है, यह तो मूर्खता है।

आज हम सभी संकल्प करें कि हमारे जीवन में संस्कार शिक्षा, स्वावलम्बन, स्वास्थ्य और संगठन का रूप बढ़े। इन पाँचों में संस्कार तो बाल्यावस्था में आवश्यक

है। शिक्षा थोड़े बड़े होने के बाद किन्तु स्वास्थ्य तो गर्भ से ही संभालना बहुत जरूरी है। हमारे यहाँ गर्भाधान संस्कार भी होते हैं। माँ को पहले से लेकर नौवें महीने तक कौन-कौनसे पदार्थों का सेवन करना चाहिए, यह भी हमारे आयुर्वेदिक ग्रन्थों में है। अगर इस तरह से ध्यान रखा जाय तो बालक सब तरह से स्वस्थ और माता भी स्वस्थ रहेगी और बालक का पूर्ण विकास होगा। गर्भ में कोई क्षति नहीं होगी। जन्म लेने के बाद सात्विक आहार प्रदान किया जाये। जब तक बच्चा माँ का दूध पीता है तब तक माँ को सात्विक एवं पौष्टिक तथा विषाणु और रोगाणु से रहित आहार मिले। गर्भ से स्वास्थ्य, जन्म के बाद संस्कार और बड़े होने के बाद शिक्षा फिर स्वावलम्बन और अंत में संगठन। इन पाँचों पर आप सभी मनन करें और इनको अपने जीवन में अपनायें।

पुण्य अर्जित करने और जीवन में श्री, समृद्धि, यश आदि को बढ़ाने के लिये, इस समय वर्तमान युग में सबसे अधिक महात्म्य है- गवोपासना, गवोराधना, गो की सेवा और गव्यों का सेवन। यह वर्तमान सदी का सर्वोच्च धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, आरोग्यवर्धक और समाज को उन्नति की ओर ले जाने वाला अनुष्ठान है। गोमाता की सेवा पूजा, आराधना और गव्यों का सेवन करने से संस्कार भी आयेंगे, शिक्षा भी आपको स्वावलम्बन की ओर ले जायेगी, शरीर भी स्वस्थ रहेगा और हृदय

पवित्र रहेगा। हृदय पवित्र रहने से राग, द्वेष, ईर्ष्या, अहंकार- ये सब कम होंगे तो समाज संगठित रहेगा। समाज में विघटन, अहंकार, ईर्ष्या और द्वेष के कारण ही होता है। ये अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष आदि विकार जहाँ संस्कार का अभाव होगा, आहार मलिन होगा, शिक्षा जिसकी दिशा विहीन होगी वहीं पर बढ़ते हैं। इसलिए दिशा पर शिक्षा, सात्विक आहार, कल्याणकारी संस्कार और सर्वहितकारी भावों को लेकर संगठन का निर्माण हो। इस भाव से समाज चले तो उन्नत समाज का निर्माण संभव है।

आप सभी गो उपासक, गोभक्त, गोसेवक हो। गो की शरण में रहकर जीवन जीते हो। गोमाता आप सबको सुशिक्षित, सुसंस्कारवान, स्वस्थ, स्वावलम्बी तथा सुसंगठित रखे जिससे आप तथा आपका समाज उत्तरोत्तर गोमाता के हितों की रक्षा में आगे बढ़ते रहें। इसी अपेक्षा के साथ आप सभी का एक बार पुनः सादर अभिनन्दन।

जय गोमाता ! जय गोपाल !

❁❁❁❁❁

गो अमृत बिन्दु

- पूज्या गोमाता का इस भू-मण्डल पर अवतरण हमारे कल्याण के लिए हुआ है।
- पूज्या गोमाता के अनुपम श्रीविग्रह से निरन्तर जीवनीशक्ति का सृजन होता रहता है।
- पूज्या गोमाता अहिंसा, करूणा, ममत्व, वात्सल्यादि दिव्य गुणों को पुष्ट करती है।
- पूज्या गोमाता अपनी पालक शक्ति से तीनों लोकों के समस्त प्राणियों का पोषण करती है।
- पूज्या गोमाता से ही देवों में देवत्व तथा मानवों में मानवता का निर्माण होता है।
- पूज्या गोमाता अपनी कृपा शक्ति से पृथ्वी को सन्तुलित तथा पर्यावरण को शुद्ध रखती है।
- पूज्या गोमाता अपनी उदारता से मानव को जीवनयापन हेतु शुद्ध दिव्य गव्य प्रदान करती है।
- पूज्या गोमाता के स्नेह से मानव को स्वस्थ शरीर, पवित्र हृदय तथा विवेक युक्त मस्तिष्क मिलता है।
- पूज्या गोमाता की करूणा दृष्टि से जागतिक प्राणियों के समस्त दुःखों, संतापो का शमन होता है।
- पूज्या गोमाता अपने अमोघ अहिंसास्त्र के सदुपयोग से संसार के सभी प्राणियों को सुरक्षा प्रदान करती है।
- पूज्या गोमाता की आत्मीयता रूपी शक्ति से जागतिक प्राणियों में अपनत्व का संचार होता है।
- पूज्या गोमाता की वात्सल्यशक्ति से ही संसार की समस्त माताओं में मातृत्व का प्राकट्य होता है।
- पूज्या गोमाता अपनी अनुशासन शक्ति से ही सृष्टि के समस्त प्राणियों को अनुशासन की शिक्षा देती है।
- पूज्या गोमाता अपनी त्याग शक्ति से मानव को कर्तव्य पालन का पाठ पढ़ाती है।
- पूज्या गोमाता अपनी सौम्यदृष्टि से संसार के अशान्त प्राणियों को शान्ति प्रदान करती है।
- पूज्या गोमाता अपनी सौन्दर्य शक्ति से सम्पूर्ण विश्वजीवन को सुन्दरतम् बना देती है।
- पूज्या गोमाता अपनी जागृत दृष्टि की दिव्य शक्ति से प्राणियों को समानता का वरदान प्रदान करती है।

गोमाता की प्रातःकालीन आरती

सखि आरती उतारूँ गऊ जननी की -2 । गऊ जननी की, जगतारिणी की ।।1।।
कञ्चन थार कपूर की बाती-2 । मनोरमा पीयूषिणी की ।।2।।
ब्रह्मसुता भूरूप दयामयी-2 । कपिला नन्दा नन्दिनी की ।।3।।
सुरगण ताल मृदंग बजावत-2 । सुधासमुद्र पयस्विनी की ।।4।।
जगत्पूज्य सुरभि जगकारण-2 । उमा रमा ब्रह्माणी की ।।5।।
विधि हरि गंगाधर सुख पावत-2 । चिन्तामणि वरदायिनी की ।।6।।

गोमाता की सांय कालीन आरती

आरती श्रीगैया मैया की ।
आरतिहरण विश्व धैया की ।।टेक।।
अर्थकाम, सद्धर्म प्रदायिनी, अविचल अमल मुक्ति-पद दायिनी।
सुरमानव सौभाग्य विधायिनी, प्यारी पूज्य नन्द छैया की ।।1।।
अखिल विश्व प्रतिपालिनी माता, मधुर अमिय दुग्धान्न प्रदाता ।
रोग-शोक संकट परित्राता, भवसागर-हित दृढ़ नैया की ।।2।।
आयु औज आरोग्य विकासिनी, दुःख दैन्य दारिद्र्य विनाशिनी।
सुषमा सौख्य समृद्धि प्रकाशिनी, विमल विवेक बुद्धि दैया की ।।3।।
सेवक हो चाहे दुःखदाई, सम पय-सुधा पियावति माई।
शत्रु-मित्र सबको सुखदाई, स्नेह स्वभाव विश्व जैया की ।।4।।

श्री गोधाम पथमेड़ा एक दृष्टि में

1. 13 सितम्बर, सन् 1993 में 8 गोमाताओं के आगमन के साथ शुभारम्भ।
2. दिसम्बर 1999 में लगभग 90,000 गोवंश एवं पहला राष्ट्रीय कामधेनु कल्याण महोत्सव ।
3. सन् 2002-03 के भीषण अकाल में 182 स्थायी एवं अस्थायी गोसेवा केन्द्र खोलकर लगभग 2,80,000 गोवंश के प्राणों की रक्षा।
4. सन् 2004 में करीब 1,30,000 गोपालकों की दृष्टि में अनुपयोगी गोवंश को उपयोगी बनाकर गोपालक किसानों में वितरण (खेती योग्य बैल एवं दूध देने योग्य गायें)।
5. सन् 2005 में "श्री मनोरमा गोलोक तीर्थ नन्दगांव" की स्थापना।
6. श्री गोधाम पथमेड़ा द्वारा स्थापित एवं संचालित सभी सेवा केन्द्रों में लगभग 10,45,279 से अधिक वृक्षारोपण।
7. श्री गोधाम पथमेड़ा द्वारा लगभग 3110 परिवारों को रोजगार।
8. जालोर, बाड़मेर, जैसलमेर, सिरोही एवं बनासकांठा के 875 गांवों में गोसेवा समितियों का गठन कर गोसंरक्षण एवं गोपालन का रचनात्मक गोसेवा अभियान।
9. सत्संग के माध्यम से देशभर में लाखों लोगों को गोसेवा की प्रेरणा एवं हजारों को मिली व्यसन मुक्तता।
10. देशभर में पथमेड़ा की प्रेरणा से हजारों गोसेवा केन्द्रों की स्थापना।
11. देश के सभी प्रमुख पूज्य संतों, धर्माचार्यों एवं समाज सेवकों का श्री गोधाम पथमेड़ा आगमन एवं अवलोकन।
12. वर्तमान में गोधाम पथमेड़ा के प्रत्यक्ष संचालन में करीब 65,151 गोवंश तथा गोधाम पथमेड़ा के कार्यकर्ताओं के सहयोग व पूज्य संतो की प्रेरणा से लगभग 78849 गोवंश की गोशालाओं के माध्यम से सेवा सुश्रुषा हो रही है ।
13. सन् 2011 में नन्दगांव के परिसर में 5200 वर्षों बाद गोनवरात्रि सुरभि उपासना महोत्सव एवं 109 कुण्डीय सुरभि महायज्ञ।
14. देश की प्रथम व सबसे बड़ी नंदीशाला, गोलासन जहाँ पर 14,496 नर गोवंश (नंदी एवं बैल) की सेवा सुश्रुषा हो रही है।
15. बीमार, अंधी, लूली-लंगड़ी तथा अकस्मात् दुर्घटनाग्रस्त हजारों गोवंश की आदरपूर्वक चिकित्सा सेवा ।
16. सन् 2016 में नन्दगांव परिसर में "गोकृपा महोत्सव" का दिव्य आयोजन हुआ जिसमें 1008 तुलसी-शालिग्राम विवाह महोत्सव भी हुआ सम्पन्न।
17. बीमार गोवंश की चिकित्सा सेवा हेतु 21 ऐम्बुलेंसों का राजस्थान तथा गुजरात क्षेत्र से संचालन।
18. सन् 2017 में "वैदिक गो उत्पाद फाउण्डेशन" के नाम से स्वतन्त्र प्रकल्प की स्थापना।
19. इस प्रकल्प के माध्यम से हजारों गोपालक परिवारों को आर्थिक सहयोग एवं प्रामाणिक पंचगव्य की उपलब्धता ।